शुद्ध हिन्दी

उच्चारण, वर्तनी, व्याकरण

डॉ. हरदेव बाहरी

शुद्ध हिन्दी

डॉ० हरदेव बाहरी
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

लोकभारती प्रकाशन
१५—ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद—१

प्रकाशक
लोकभारती प्रकाशन,
इलाहाबाद—१

पहला संस्करण, १९६५
संशोधित परिवर्धित संस्करण, १९६७
तीसरा संस्करण, १९६८
चौथा संस्करण, १९७१

मुद्रक
सुपरफ़ाइन प्रिन्टर्स,
१-सी, बाई का बाग, इलाहाबाद-३

पहले संस्करण की भूमिका

बड़े खेद की बात है कि हिन्दी का सामान्य विद्यार्थी आज भाषा की शुद्धता पर ध्यान नहीं देता अध्यापक भी इसकी बहुत चिन्ता नहीं करता। इधर शिक्षाशास्त्री चिल्लाते हैं कि भाषा का स्तर ऊँचा न होने के कारण ज्ञान का स्तर गिरता ही जा रहा है। स्कूल का विद्यार्थी ही नहीं, विश्वविद्यालय में बी० ए० और एम० ए० तक का विद्यार्थी एक पन्ना शुद्ध हिन्दी में नहीं लिख सकता। हिन्दी के विद्यार्थी की अपेक्षा अंग्रेज़ी का विद्यार्थी अधिक सावधान रहता है, क्योंकि वह जानता है कि अंग्रेज़ी कठिन है, सीखने और अभ्यास करने से आयेगी। किन्तु भारत के बहुत बड़े भाग के हिन्दी-भाषी विद्यार्थी समझते हैं कि हिन्दी तो हमारी मातृभाषा है, हम इसे वर्षों से बोलते आ रहे हैं, इसलिए हमें कुछ सीखना ही नहीं है। जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, वे कुछ अधिक सावधान रहते हैं अवश्य, किन्तु वे अपनी-अपनी मातृभाषा के प्रयोगों से पल्ला नहीं छुड़ा पाते। वे हिन्दी की प्रकृति को प्रायः ठीक-ठीक नहीं समझते। 'हिन्दी वाले' भी अपने-अपने स्थानीय, क्षेत्रीय या बोलीगत प्रयोगों और संस्कारों से जान नहीं छुड़ा पाते। इन लोगों को अपने मन से यह मिथ्या धारणा हटा देनी होगी कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, हमें इसमें कोई दिक्कत नहीं है। भाई, हिन्दी तो सामान्य भाषा है, यह

कोई क्षेत्रीय बोली नहीं है। यह अब देवभाषा या विद्वानों की भाषा है : शिक्षित वर्ग की भाषा है।

प्रायः देखा गया है कि पंजाब के लोग अपना पंजाबीपन, बंगाल के बंगालीपन, बिहार के पूर्वीपन, गुजरात के गुजरातीपन और दूसरे लोग अपने-अपने व्यवहार हिन्दी में ले आते हैं। ऐसा स्वाभाविक तो है, किन्तु वांछनीय नहीं है। इस तरह प्रादेशिकता के प्रभाव से हिन्दी का कोई एक आदर्श, परिनिष्ठित और मान्य रूप नहीं रह जायगा। तब यह सामान्य भाषा नहीं बन पायगी।

यदि ८-८, १०-१०, १४-१४ बरस हिन्दी भाषा और साहित्य पढ़ते रहने के बाद भी कोई व्यक्ति शाशन, विद्या, जथार्थ, शबद, अरमूद, आदि ग्राम्य उच्चारण छोड़ नहीं पाता, अथवा हम जाता है, पहिया अच्छी है, आप जाओगे, मैंने जाना है, हम उसको बताये, उसने बात किया आदि का प्रयोग करता है, तो उसे अनपढ़ आदमी के समान ही समझना चाहिये। भाषा से ही आदमी की शिक्षा, सभ्यता और कुलीनता का परिचय मिलता है।

खेद तो इस बात का है कि हिन्दी के विद्यार्थी के पास प्रायः न तो अच्छा सा कोश रहता है न ही कोई व्याकरण-ग्रन्थ। वह न शब्द-भण्डार बढ़ाते रहने की चिन्ता करता है और न अपने शब्दों के शुद्ध प्रयोग पर विशेष ध्यान देता है। उसे न तो अच्छे-अच्छे वक्ताओं के उच्चारण का अनुकरण करने की आदत है और न आप्त लेखकों की कृतियों को पढ़कर अपनी भाषा को सामान्य और मानक

रूप देने का शौक है। याद रहे कि **शुद्ध भाषा के लिए शुद्ध दर्शन और शुद्ध श्रवण होगा तो शुद्ध उच्चारण और शुद्ध लेखन आप-से-आप आने लगेगा।**

यह पुस्तक इन सभी दिशाओं में शुद्ध हिन्दी सीखने वालों की सहायता करेगी।

इस पुस्तक की लगभग सारी सामग्री विद्यार्थियों की कापियों से ही ली गयी है। पिछले ३५ वर्ष से उनकी भूलों को अपने पास जमा करता रहा हूँ। उन भूलों का यहाँ वर्गीकरण भर करके मैंने शुद्ध हिन्दी सिखाने का प्रयत्न किया है। शुद्ध हिन्दी सिखाने के उद्देश्य से कई पुस्तकें लिखी गयी हैं; किन्तु प्रायः उनमें व्याख्यानात्मक सामग्री अधिक है, व्यावहारिक और उपयोगी सामग्री कम है। मैंने वर्गीकरण ही इस ढंग का किया है कि व्याख्यानात्मक टिप्पणियों की आवश्यकता नहीं रही। मेरे पास जो सामग्री जुट गयी है उस सब का उपयोग यहाँ नहीं कर पाया हूँ। सभी अशुद्धियों की सूचियाँ देना वांछनीय भी नहीं है। उनकी सहोदरा अशुद्धियों का संकेत यथास्थान कर ही दिया है। इन नमूनों से दूसरी भूलों को समझ लिया जाय।

पुस्तक के दो भाग हैं—१. उच्चारण और वर्तनी; तथा २. व्याकरण। हिन्दी की शुद्धता का बहुत कुछ अर्थ है उच्चारण और वर्तनी की शुद्धता तथा व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग। पहले भाग में लगभग २५०० शब्द, एवं दूसरे भाग में ६०० प्रयोग और ९०० वाक्य या वाक्यखण्ड

संगृहीत हैं। यदि इन ४००० में से नौवीं कक्षा का विद्यार्थी ६००, दसवीं कक्षा का ९५०, ग्यारहवीं का १५००, बारहवीं का २०००, बी० ए० १ का २५००, और बी० ए० २ का ३००० शब्दों और वाक्यादि का प्रयोग 'अच्छी तरह' जान ले तो बहुत बड़ी बात है।

प्रत्येक वर्ग और सूची में शब्दों को अकारादि क्रम से और वाक्यों को विषयवार रखा गया है। यदि तुम्हें कहीं से कठिन शब्द अथवा भ्रष्ट शब्द मिलें तो उन्हें अपने-अपने वर्ग में जोड़ लो, और यदि ऐसे नये वाक्य मिलें तो पुस्तक के अन्त में लिख लो। पुस्तक के अन्त में कुछ पृष्ठ खाली छोड़ दिये गये हैं।

यदि इन शब्दों और वाक्यों को एक कागज पर लिखकर इस पुस्तक के लेखक को भेज दोगे तो उन्हें आवश्यकतानुसार अगले संस्करण में सम्मिलित कर लिया जायगा और तुम्हारे साथी हजारों विद्यार्थियों का उपकार होगा।

अपने ज्ञान का परीक्षण करने के लिए ऐसे प्रयोगों पर चिह्न लगाते जाओ जो तुम्हें अच्छी तरह आ गये हैं। प्रतिमास इन चिह्नित प्रयोगों को एक बार दोहरा लिया करो। लिखने या बोलने में कभी ऐसे शब्द या मुहावरे का प्रयोग मत करो जिसके वर्णविन्यास (वर्तनी), अर्थ और व्यवहार को तुमने 'बहुत अच्छी तरह' देखभाल न लिया हो।

यह शास्त्रीय पुस्तक है। इसे उपन्यास की तरह बांचना नहीं है। शास्त्र को धीरे-धीरे प्रतिदिन नियमपूर्वक समझते रहने की चेष्टा करनी चाहिये। ऐसा करोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा।

दरभंगा कैसिल,
इलाहाबाद—२
विजयादशमी, २०२२ वि०

हरदेव बाहरी

दूसरा संस्करण

इस पुस्तक का यह संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष होता है, विशेषत: यह जानकर कि पहला संस्करण इतनी जल्दी समाप्त हो गया। एक अध्यापक ने मुझे लिखा कि हिन्दी भाषा पर इस तरह की पुस्तकें बीस-एक हैं, किन्तु इस एक पुस्तक में इतना कुछ है जो अन्यत्र नहीं है। मुझे संतोष है कि विद्यार्थी और अध्यापक इससे लाभ उठा रहे हैं।

प्रो० सूर्यनारायण रणसुभे (गोलकुंडा) और प्रो० पराड़कर (पूना) ने मुझे दक्षिण भारत के विद्यार्थियों की कठिनाइयों से अवगत कराया, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। मेरे भाई डॉ० सीताराम बाहरी (पटियाला) ने पंजाब से बहुत उपयोगी सामग्री एकत्र करके भेजी।

३-१२-१९६७

हरदेव बाहरी

तीसरा संस्करण, १९६८

दूसरा संस्करण इतनी जल्दी चुक गया कि पुस्तक को दोहराने का अवसर ही नहीं मिल पाया, और तीसरा संस्करण उसी तरह निकाल देना पड़ा।

चौथा संस्करण

इसमें अभ्यास जोड़ दिये गये हैं। अध्यापक और विद्यार्थी इनसे लाभ उठा सकेंगे। इन नमूनों पर और अधिक प्रश्न और अभ्यास बढ़ाये जा सकते हैं।

१२-९-१९७१

हरदेव बाहरी

विषय सूची

भाग १—उच्चारण और वर्तनी (१-८७)

भाग २—व्याकरण (८९-२१५)

भाग १
उच्चारण और वर्तनी

उच्चारण और वर्तनी

पढ़े-लिखे और अनपढ़ आदमी की पहचान भाषा से हो जाती है। संस्कृत में भाष् का अर्थ ही है 'बोलना'। यदि कोई विद्यार्थी भाषा को भासा, क्षेत्र को छेत्र, मालूम को मालुम, विष को बिस, एवं मित्र को मित्तर करके बोले तो उसकी गणना अनपढ़ आदमियों में ही करनी चाहिये।

अंग्रेज़ी को अंग्रेज की तरह, संस्कृत को संस्कृत के विद्वान् की तरह और उर्दू तथा हिन्दी को आदर्श वक्ता की तरह, बोलने का अभ्यास करो। शुद्ध बोलने वाले की ही लिखाई शुद्ध होगी।

निम्नलिखित शब्द बी० ए० पास विद्यार्थियों की कापियों से लिये गये हैं। चौदह-चौदह वर्ष हिन्दी पढ़ते रहने के बाद भी इन लोगों ने ग्रामीणता का त्याग करके शिक्षित जन की भाषा नहीं सीखी। शुद्ध रूप कोष्ठक में दिये जा रहे हैं—

अस्कूल (स्कूल) **अस्थान** (स्थान) **अस्नान** (स्नान)

अस्पर्श (स्पर्श)	**गिरस्थी** (गृहस्थी)	**बेजती** (बेइज़्ज़ती)
इस्त्री (स्त्री)	**छिन भर** (क्षण भर)	**भगती** (भक्ति)
इस्थिति (स्थिति)	**छिमा** (क्षमा)	**मतबल** (मतलब)
उधारण (उदाहरण)	**जबरजस्ती** (ज़बरदस्ती)	**मदत** (मदद)
उमर (उम्र)	**नखनऊ** (लखनऊ)	**मुकालबे** (मुकाबले)
उस्तुति (स्तुति)	**प्रालब्ध** (प्रारब्ध)	**शाशन** (शासन)
केंदर (केन्द्र)	**बिद्या** (विद्या)	**शाबास** (शाबाश)।

स्पष्ट और स्थिर के शुरू में [अ] जोड़ कर उच्चारण करने वाले यह ध्यान नहीं रखते कि उनके शब्दों का अर्थ उलटा हो जाता है। स्पष्ट और स्थिर से पहले [अ] ध्वनि निकलने पर विपरीत अर्थ समझा जायगा।

राजस्थान और पंजाब के विद्यार्थी [न] को प्रायः [ण] बोल देते हैं। दक्षिण के लोग ख छ ठ थ फ और घ झ ढ ध भ का उच्चारण ठीक नहीं कर सकते। महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल के लोग हिन्दी की कई ध्वनियों का उच्चारण कुछ निराले ढंग से करते

हैं। हिन्दी प्रदेश में ही देखें तो बहुत से लोग ग्रामीण उच्चारण को नहीं छोड़ पाते और [श] [ष], [व] आदि को शुद्ध रूप में नहीं बोलते। कई लोग [औ] को [ओ], [ऐ] को [ए], ह्रस्व स्वर को दीर्घ और दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके बोलते पाये जाते हैं। कम-पढ़ लोगों को संयुक्त व्यंजन बोलने में कठिनाई होती है। [ऋ] का उच्चारण अनेक ढंग से होता है। [ज्ञ] भी नाना प्रकार से बोला जाता है। तात्पर्य यह है कि उच्चारण को शुद्ध करने का प्रयत्न कम ही लोग करते हैं जिसके कारण उनकी भाषा दूषित रहती है।

नीचे हम सामान्य अशुद्धियों के वर्ग बनाकर कुछ सूचियाँ दे रहे हैं। इन सूचियों में बहुत से और शब्द जोड़े जा सकते हैं। ये सूचियाँ पथ-प्रदर्शक मात्र हैं; सम्पूर्ण नहीं हैं और न ही हो सकती हैं। यदि तुम्हें अगले पृष्ठों में दी हुई बातों का ज्ञान हो गया, और तुममें शुद्धाशुद्ध विवेक होने लगा, भाषा को आदर्श रूप देने की चिन्ता हुई, तो तुम नित्य प्रति इन सूचियों का संवर्धन अपने आप करते रहोगे। इन सूचियों का उद्देश्य है तुम्हें जागरूक कर देना। इन अशुद्धियों से बचो। शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना सीखो। किसी विद्वान् से, जिसके उच्चारण पर तुम्हें विश्वास हो, इसकी शिक्षा ग्रहण

करो। जिस वर्ग के कतिपय शब्दों का उच्चारण सीखो, एकान्त में जाकर उस वर्ग के सभी शब्दों का ऊँचे स्वर से अभ्यास करो। वर्तनी का अभ्यास लिख कर करो। किसी साथी या भाई-बहन से कहो कि तुम्हें अमुक पृष्ठ के शब्द लिखाए। अभ्यास से तुम्हारा कल्याण होगा।

१. स्वर या मात्रा की अशुद्धियाँ

मरना-मारना, पिता-पीता, कुल-कूल, बेल-बैल में परस्पर कितना अर्थभेद है ! सूचियों के लिए देखो पृष्ठ ५५ इत्यादि। मात्रा ह्रस्व होनी चाहिये या दीर्घ, इसका ध्यान रखो; नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जायगा।

१. [आ] की मात्रा होनी चाहिये—

अगामी (आगामी)	**चहिये** (चाहिये)
अजमाइश (आज़माइश)	**तत्कालिक** (तात्कालिक)
अन्त्यक्षरी (अन्त्याक्षरी)	**नदान** (नादान)
अवश्यकता (आवश्यकता)	**नराज** (नाराज़)
अशीर्वाद (आशीर्वाद)	**परलौलिक** (पारलौकिक)
अहार (आहार)	**बदाम** (बादाम)
चहरदीवारी (चहारदीवारी)	**ब्रह्मण** (ब्राह्मण)

करो। जिस वर्ग के कतिपय शब्दों का उच्चारण सीखो, एकान्त में जाकर उस वर्ग के सभी शब्दों का ऊँचे स्वर से अभ्यास करो। वर्तनी का अभ्यास लिख कर करो। किसी साथी या भाई-बहन से कहो कि तुम्हें अमुक पृष्ठ के शब्द लिखाए। अभ्यास से तुम्हारा कल्याण होगा।

१. स्वर या मात्रा की अशुद्धियाँ

मरना-मारना, पिता-पीता, कुल-कूल, बेल-बैल में परस्पर कितना अर्थभेद है! सूचियों के लिए देखो पृष्ठ ५५ इत्यादि। मात्रा ह्रस्व होनी चाहिये या दीर्घ, इसका ध्यान रखो; नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जायगा।

१. [आ] की मात्रा होनी चाहिये—

अगामी (आगामी)	चहिये (चाहिये)
अजमाइश (आज़माइश)	तत्कालिक (तात्कालिक)
अन्त्यक्षरी (अन्त्याक्षरी)	नदान (नादान)
अवश्यकता (आवश्यकता)	नराज (नाराज़)
अशीर्वाद (आशीर्वाद)	परलौलिक (पारलौकिक)
अहार (आहार)	बदाम (बादाम)
चहरदीवारी (चहारदीवारी)	ब्रह्मण (ब्राह्मण)

भगीरथी (भागीरथी)
मलूम (मालूम)
व्यवसायिक (व्यावसायिक)
सप्ताहिक (साप्ताहिक)
संसारिक (सांसारिक)।

२. [आ] की मात्रा नहीं होनी चाहिये—

आजकाल (आजकल)
आधीन (अधीन)
आपना (अपना)
बांगला भाषा (बँगला भाषा)
बारात (बरात)
लागान (लगान)
हस्ताक्षेप (हस्तक्षेप)
हाथिनी (हथिनी)।

३. [इ] की मात्रा होनी चाहिये, [ई] की नहीं—

अतिथी (अतिथि)
अभीनेता (अभिनेता)
अभीमान (अभिमान)
आईये (आइये)
कालीदास (कालिदास)
कोटी (कोटि)
क्योंकी (क्योंकि)
क्षत्रीय (क्षत्रिय)

चाहीये (चाहिये)
तिथी (तिथि)
तिलांजली (तिलांजलि)
निवासीयों (निवासियों)
नीती (नीति)
परीचय (परिचय)
परीवार (परिवार)
पुष्टी (पुष्टि)
पूर्ती (पूर्ति)
बलीदान (बलिदान)
वाल्मीकी (वाल्मीकि)
शान्ती (शान्ति)
शनी (शनि)
सम्पत्ती (सम्पत्ति)
स्थिती (स्थिति)
हानी (हानि)
हीजड़ा (हिजड़ा)।

४. [इ] की मात्रा छूट गई, होनी चाहिये—

आजीवका (आजीविका)
आध्यात्मक (आध्यात्मिक)
कठनाई (कठिनाई)
कुमुदनी (कुमुदिनी)
क्षणक (क्षणिक)
गृहणी (गृहिणी)
जीवत (जीवित)
नायका (नायिका)
नीत (नीति)
परिचत (परिचित)
परिमार्जत (परिमार्जित)
परिस्थित (परिस्थिति)

पाकस्तान (पाकिस्तान) **मैथलीशरण** (मैथिलीशरण) **विरहणी** (विरहिणी)
प्रतिनिध (प्रतिनिधि) **युधिष्ठर** (युधिष्ठिर) **शिवर** (शिविर)
फिटकरी (फिटकिरी) **रचयता** (रचयिता) **मानव संस्कृत** (संस्कृति)
माचस (माचिस) **लिखत** (लिखित) **संन्यासनी** (संन्यासिनी)
मानसक (मानसिक) **लेकन** (लेकिन) **सरोजनी** (सरोजिनी)
मालन (मालिन) **वाहनी** (वाहिनी) **साहित्यक** (साहित्यिक) ।

५. [इ] की मात्रा नहीं होनी चाहिये—

अहिल्या (अहल्या) **फिजूल** (फजूल)
छिपकिली (छिपकली) **रचनात्मिक** (रचनात्मक)
झिल्लाया (झल्लाया) **वापिस** (वापस)
तिरिस्कार (तिरस्कार) **व्यवस्थापिक** (व्यवस्थापक)
द्वारिका (द्वारका) **चाहिता** (चाहता)
पहिला (पहला) **शिखिर** (शिखर)
प्रदर्शिनी (प्रदर्शनी—नुमाइश) **संस्कृति भाषा** (संस्कृत)

संतुलिन (संतुलन)
सम्पादिक (सम्पादक)
समृद्धि देश (समृद्ध)
सामिग्री (सामग्री)
स्त्रि (स्त्री)
हास्यात्मिक † (हास्यात्मक)।

६. [ई] की मात्रा होनी चाहिए, [इ] की नहीं—

अद्वितिय (अद्वितीय)
आशिर्वाद (आशीर्वाद)
तरिके से (तरीके)
दिवाली (दीवाली)
देश कि रक्षा ‡ (की)
निरिक्षण (निरीक्षण)
निरसता (नीरसता)
पत्नि (पत्नी)
पिताम्बर (पीताम्बर)
बिमारी (बीमारी)
भागिरथी (भागीरथी)
महाबलि (महाबली)
महिना (महीना)
रितिकाल (रीतिकाल)

---

† तुलना कीजिए आध्यात्मिक और रचनात्मक।

‡ की of और कि that का भेद समझ लें।

लिजिये (लीजिये) समिक्षा (समीक्षा)
शताब्दि (शताब्दी) सूचिपत्र (सूचीपत्र)
श्रीमति (श्रीमती†) स्त्रि (स्त्री)।

७. [छोटी इ की मात्रा वाले कुछ शुद्ध शब्द—

अग्नि, अनुचित, अभिनेता, उन्नति, इन्द्रिय, कवि, कीर्ति, गर्भिणी, गिरगिट, चमारिन, चिपकाना, दक्षिण, धोबिन, ध्वनि, नायिका, निखिल, निधि, नीति, पुलिंदा, पारितोषिक, पुष्टि, प्रकृति, प्रीति, भगिनी, भूमिका, भ्रान्ति, मद्धिम, मन्दिर, मरीचिका, महिमा, मोहित, रात्रि, रुचि, लिपि, विधि, सन्तति, सन्धि, समिति, सम्मति, सरिता, सृष्टि।]

८. [उ ऊ] की मात्रा की भूलें—

अनुदित (अनूदित) ऊत्थान (उत्थान)

---

† मराठी में ऐसे अनेक शब्दों के साथ इ ह्रस्व लगाने का रिवाज है, हिन्दी में नहीं। श्रीमति सम्बोधन में ठीक है, वरन् श्रीमती। उसी प्रकार देवि एवं देवी।

उधम (ऊधम)
कूआं (कुआँ)
तुफान (तूफान)
दूबारा (दुबारा)
दुसरा (दूसरा)
धूआं (धुआँ)
नुपुर (नूपुर)
रूई (रुई)
रेग (रेणु)
वधु (वधू)
साधू (साधु)
सिन्दुर (सिन्दूर)
सुई (सूई)
सुरज (सूरज) ।

९. [र] के साथ [उ ऊ] की मात्रा लगाने में अशुद्धि—

गुरू (गुरु)
जरुरत (जरूरत)
पुरुष (पुरुष)
रुठ (रूठ)
रुप (रूप)
रूपया (रुपया) ।

१०. [निम्नलिखित में ह्रस्व उ की मात्रा का ध्यान रहे। ये शुद्ध रूप हैं—

अणु, आयु, इन्दु, उत्सुक, ऋतु, कुटुम्ब, कुमुद, कुसुम, कौमुदी, चतुराई, जन्तु, दयालु, धातु, निठुर, निरुद्यम, पटु, परन्तु, पशु, पुरुषोत्तम, प्रभु, बन्धु, बहुत, बाहु,

बिन्दु, भंगुर, भिक्षु, मंजु, मधु, मृत्यु, मुकुन्द, रघु, रुद्र, वस्तु, वायु, शम्भु, शत्रु, सिंधु, हनु, हेतु।]

११. [हिन्दी के तद्भव और विदेशी शब्दों के अन्त में ऊ (दीर्घ) मात्रा का ध्यान रहे—

आंसू, आड़ू, आलू, उर्दू, चाकू, जादू, झाड़ू, डाकू, तम्बाकू, नींबू, बदबू, बहू, बाबू, बिच्छू, लट्टू, लड्डू, लहू, लागू, शुरू, हिन्दू।

[ऊकारान्त शब्द संस्कृत में कम हैं—भ्रू, रज्जू, चमू, आदि।]

१२. [ऋ] की भूलें—

अनुग्रहीत (अनुगृहीत) कृसमस (क्रिसमस)
आक्रमण (आक्रमण) त्रितीय (तृतीय)
आदरित (आदृत) तृकोण (त्रिकोण)
उरिण (उऋण) दृष्टा (द्रष्टा)
क्रितृम (कृत्रिम) द्रश्य (दृश्य)
क्रिया (क्रिया) प्रथक (पृथक्)

पैत्रिक (पैतृक)
ब्रतान्त (वृत्तान्त)
बृज (व्रज, व्रज)
श्रृङ्गार (शृंगार)
बृटिश (ब्रिटिश)
संग्रहीत (संगृहीत)
भृष्टाचार (भ्रष्टाचार)
सृस्टा (स्रष्टा)
मात्रभूमि, मातरभूमि (मातृभूमि)
ह्लदय (हृदय)।
विस्त्रित (विस्तृत)

१३. [ऋ केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में आता है। ऐसे शब्दों की सूची बना लेनी चाहिये; जैसे—अमृत, ऋग्वेद, ऋतु, ऋद्धि, ऋषि, कृतज्ञ, कृतघ्न, कृति, कृपा, कृपाण, कृषि, कृष्ण, गृहस्थ, घृणा, घृत, तृण, तृप्त, तृष्णा, दृढ़, ऋण, दृष्टि, धृष्ट, नृत्य, नृप, पृष्ठ, बृहत्, बृहस्पति, भृत्य, मृग, मृतक, मृत्यु, मातृभाषा, वृन्द, वृक्ष, वृथा, वृद्धि, सृष्टि, हृष्टपुष्ट।]

१४. [ए, ऐ, अय] की भूलें—

अयसा (ऐसा)
ऐक (एक)
इतिहासिक (ऐतिहासिक)
एतिहास (इतिहास)

चाहिऐ (चाहिए)
जै हिंद (जय हिन्द)
दाइत्व (दायित्व)
दैनीय (दयनीय)
देहिक (दैहिक)
नाइका (नायिका)
निछावर (न्योछावर)
निर्भै (निर्भय)
नैन (नयन)
परलै (प्रलय)
फैंकना (फेंकना)
भाषाऐं (भाषाएँ)
रचइता (रचयिता)
वइसा (वैसा)
वय्याकरण (वैयाकरण)
विस्मै (विस्मय)
वैश्या (वेश्या)
सैना (सेना)
सेनिक (सैनिक)।

१५. [ई] और [यी] की भूलें—

नई (नयी)
मिठायी (मिठाई)
लड़ायी (लड़ाई)
लिखायी (लिखाई)
विजई (विजयी)
स्थाई (स्थायी)।

१६. [ओ, औ, अव, आव] की अशुद्धियाँ—

अक्षोहिणी (अक्षौहिणी) गोतम (गौतम) बहोत (बहुत)
अलोकिक (अलौकिक) चुनाउ, चुनाओ (चुनाव) व्योपार (व्यापार)
उपन्यासिक (औपन्यासिक) झुकाउ, झुकाओ (झुकाव) भौंचाल (भूचाल)
ओद्योगिक (औद्योगिक) झौपड़ी (झोंपड़ी) यूँ (यों)
ओगुण (अवगुण) त्यौहार (त्योहार) विविहार, व्योहार (व्यवहार)
औतार (अवतार) नोकरी (नौकरी) होले (हौले)।
क्यूँ (क्यों) पोंहचना (पहुँचना)

१७. [निम्नलिखित शुद्ध रूप वाले शब्द याद कर लो—

पड़ाव, पवन, पुलाव, फैलाव, लवलीन, हावभाव।

१८. अनुस्वार और अनुनासिक की भूलें—

● बिना मतलब के चिह्न लगाना—

करकें (करके) छोंड़कर (छोड़कर) डांका (डाका)
गरिमां (गरिमा) जांति पांति (जाति पाँति) दुनियां (दुनिया)

नानां (नाना)   मामां (मामा)   हमेंशा (हमेशा)
नें (ने)   सोचेंगें (सोचेंगे)   हाँथ (हाथ)।
पूँछकर (पूछकर)   सोंच लो (सोच लो)

● चिह्न होना चाहिये, पर लगाया नहीं—

उन्ही (उन्हीं)   कही न कही (कहीं न कहीं)   क्योकि (क्योंकि)
हम आपको पुस्तके किस पते पर भेजे   (हम आपको पुस्तकें किस पते पर भेजें)
तरंगे (तरंगें)   हमी (हमीं)
नही (नहीं)   (वे) है (हैं)।

● ठीक स्थान पर चिह्न नहीं लगाया गया—

होगें (होंगे)   आएगीं (आएँगी)।

---

*नासिक्य चिह्न के बिना अर्थभेद हो जाता है—कँटीली (काँटों वाली) झाड़ी और कटीली (काटनेवाली) आँख; भाग और भाँग; आधी और आँधी; रग, रंग; एवं बगला और बँगला में अर्थभेद स्पष्ट है। इसीलिए जहाँ चिह्न लगाना चाहिये, वहाँ जरूर लगाओ। याद रहे कि संस्कृत के तत्सम शब्दों में चन्द्रबिन्दु नहीं होता।

१९. ˙ और ˘ के प्रयोग में अन्तर होना चाहिये ! हँसमुख को हंसमुख लिखेंगे तो उसका अर्थ होगा हंस पक्षी के से मुख वाला । भूलें—

अँधा (अंधा)	**छंटाई** (छँटाई)
अंधेरा (अँधेरा)	**संवारना** (सँवारना)
गंवार (गँवार)	**सँस्कृत** (संस्कृत) ।

[निम्नलिखित शुद्ध प्रयोग समझ लो—

कुँअर, कुँआरा, गठ-बन्धन, चँवर, पँचमेल, बँडेरा, भँवरा, मँडराना, रँगाई, रँडापा, लँगोटी, सँभालना, हँसिया । ा, ी, ॢ, े, ै, सब के ऊपर ˘ होना चाहिए, किन्तु व्यवहार में ा और ॢ के ऊपर ही ˘ सुविधाजनक रहता है ।

२०. विसर्ग की अशुद्धियाँ—

अधापतन (अधःपतन)	**दुख** (दुःख)
अंताकरण (अंतःकरण)	**दुसह** (दुःसह)
अन्यथः (अन्यथा)	**निस्वार्थ** (निःस्वार्थ)

मूलतयः (मूलतः, मूलतया) **विशेषतयः** (विशेषतः, विशेषतया) ।
वगैरः (वगैरह)

[देखिये 'विसर्ग सन्धि'—पृ० ४३ भी]

२१. [निम्नलिखित शब्दों की मात्राओं का प्रयोग अच्छी तरह समझ लो—अकड़, अधीन, इच्छुक, ऐच्छिक, ओषधि, औषध, कोंपल, क्यों, खिलौना, गोष्ठी, चिकित्सक, झेलना, टुटपुँजिया, ठठोलिया, तिजोरी, तैंतालीस, तौल, त्योहार, दशहरा, दीयासलाई, दुकान, नामावली, निचुड़ना, निचोड़ना, निवेदक, पकौड़ी, पहुँच, पाठक, पाठिका, प्रतिलिपि, बेचारा, माहात्म्य, लहसुन, लोमड़ी, सुहाग ।]

२२. [शब्द का विस्तार होने पर किन्हीं शब्दों की मात्राओं में परिवर्तन हो जाते हैं ।

आधा से अधमरा
आम से अमचूर
एक से इकट्ठा, इकलड़ा, इकहरा
खेती से खेतिहर
घाट से पनघट
घोड़ा से घुड़दौड़, घुड़साल

जेठ से जिठानी	भेजना से भिजवाना
ढीठ से ढिठाई	रानी से रानियाँ
तीन से तिपाई, तिनपतिया, तेईस	लाख से लखपति
दो से दुबारा, दुलत्ती, दुपट्टा	सात से सतखंडा, सतलड़ा
पूजा से पुजारी	सीखना से सिखाना
बाट से बटमार	हाथ से हथकड़ी, हथेली, हथगोला
बूढ़ा से बुढ़िया	हिन्दू से हिन्दुओं।

२३. स्वर-संयोग की भूलें—

आँसुयों (आँसुओं)	खावेंगे (खाएँगे, खायँगे)	लड़ायियाँ (लड़ाइयाँ)
आयिए (आइए)	दुवन्नी (दुअन्नी)	लीये, लीए (लिये, लिए)
आवो (आओ)	नदीओं (नदियों)	साधुयों (साधुओं)
किआ (किया)	पिओ (पियो)	हिन्दुवों (हिन्दुओं)
खाउ (खाऊ)	रानिआँ (रानियाँ)	हुये, हुवे (हुए)।

२४. स्वर को अपने स्थान पर लगाना चाहिये। देखो—

चहाता (चाहता) समसमायिक (समसामयिक)

संतावना (सांत्वना) सहास (साहस)।

२५. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी में स्वरों को समझ लो—

इकतालीस, इकहरा, इक्कीस, इक्यानवे, इक्यावन, इक्यासी, अड़तीस, अड़सठ, उनचास, उनतीस, उनसठ, पहला।

अभ्यास १

१. ऐसे पाँच-पाँच शब्द लिखो जिनमें निम्नलिखित स्वर आते हैं—

आ, ई, ऊ, औ, ऐ।

२. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो—

आधीन, इतिहासिक, लड़किया, आशिर्वाद, अद्वितिय, उन्नती, ऊंचाई, ऐकता, गुणि, जनतंत्रिक, वेदिक, मणी, मुनी, तलाब, दशहारा, हिन्दु, भौचाल, नाकि, यूक्ती, सूचिपत्र, समिती, सृष्टी, शताब्दि, वाहनी, सोन्दर्य, आँसुवों, आयिये।

३. निम्नलिखित में जहाँ अनुस्वार या अनुनासिक नहीं है, वहाँ उपयुक्त चिह्न लगाओ—

सत कबीर, अतर्गत, नही, उन्ही, आखो मे, जाते है, मिलता हू, अधकार, माताए, सुगध, क्योकि, चू चू।

४. शब्दों के ऐसे पंद्रह जोड़े बनाओ कि एक शब्द में ह्रस्व स्वर हो, दूसरे में दीर्घ; जैसे चल, चाल—यह एक जोड़ा हुआ। इसी तरह मिल, मील; सुर, सूर।

५. निम्नलिखित शब्दों में विसर्ग छूट गया है; यथास्थान लगाओ—

दुशील, प्रातकाल, मनस्थिति, निश्वास, निसंदेह, पुन कथन, मनकल्पित।

२. व्यंजन की अशुद्धियाँ

१. ख छ ठ थ फ और घ झ ढ ध भ (महाप्राण) ध्वनियों को कई प्रदेशों के विद्यार्थी ठीक तरह नहीं बोल पाते। कश्मीरी तो इन्हें बिल्कुल नहीं बोल सकते। वे भारत, घबराना, धर्म को **बारत, गबराना, दरम** कहते हैं। दूसरी भूलें—

खीजना (खीझना)	**धनाड्य** (धनाढ्य)	**भाबी** (भाभी)
झूट (झूठ)	**धुरंदर** (धुरंधर)	**भूक** (भूख)
दक्कन (दक्खिन)	**धोका** (धोखा)	**सीड़ी** (सीढ़ी)
धंदा (धंधा)	**पौदा** (पौधा)	**सीधासाधा** (सीधासादा)
द्यान (ध्यान)	**भरथ** (भरत)	**सुभा** (सुबह)।

२. [न-ण] के उच्चारण और प्रयोग में अन्तर है। उर्दू में [ण] है ही नहीं। पूर्व के लोग भी [ण] नहीं बोल पाते—[ड़ँ] कह देते हैं। [ण] केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में होता है। ऐसे शब्दों की सूचियाँ बना लेनी चाहिए। भूलें—

अर्चंणा (अर्चंना)
कल्यान (कल्याण)
कारन (कारण)
गुन, गुंड़ (गुण)
गौंड़ (गौण)
चरन (चरण)
टिप्पड़ी (टिप्पणी)
तुक्कण (तुक्कड़)
नरायन (नारायण)
परिनाम (परिणाम)
पुन्य (पुण्य)
प्रनाली (प्रणाली)
प्रान (प्राण)
प्रार्थणा (प्रार्थना)
प्रनाम (प्रणाम)
फाल्गुण (फाल्गुन)
बेंड़ी (वेणी)
मरन (मरण)
रनभूमि (रणभूमि)
रमन (रमण)
रसायण (रसायन)
रामायन (रामायण)
विस्मरन (विस्मरण)
वीना (वीणा)
श्रवन (श्रवण)
हराण (हैरान)।

३. [ण वाले निम्नलिखित तत्सम शब्दों की सूची में और शब्द जोड़ें—

अणु, उच्चारण, उदाहरण, उद्धरण, कंकण, कण, किरण, कृपाण, कृष्ण, कोण, क्षण, क्षीण, गण, ग्रहण, घोषणा, दर्पण, निर्माण, पुराण, प्रमाण, फणी, ब्राह्मण, भाषण, भूषण, मणि, माणिक्य, मिश्रण, रक्षणीय, वाणिज्य, वाणी, वीणा, वेणु, व्याकरण, शरण, श्रावण, साधारण, हरण।]

[याद रहे कि निम्नलिखित शब्दों में 'न' ठीक है—
अपमान, अभिमान, गमन, चयन, जीवन, दर्शन, बन्धन, वर्तमान, विज्ञान, विधान, सन्तान, समान, समाधान, स्थान ।]

४. [ड ड़ ढ ढ़] की अशुद्धियाँ—

खाँड़ (खाँड)
ढ़ेर (ढेर)
पडता (पड़ता)
पढता (पढ़ता)
बढ़ाई (बड़ाई)
बूढा (बूढ़ा)
मेंढ़क (मेंढक)
रोड़ (रोड)
लुड़कना (लुढ़कना)
सीड़ियाँ (सीढ़ियाँ)
सोड़ा (सोडा) ।

[याद रहे कि पड़ना-पढ़ना में अन्तर है जैसे पुस्तक पढ़ना, गिर पड़ना । ड़ ढ़ के नीचे बिन्दु का भी ध्यान रहे ।]

५. [र ड़ ल] की भूलें—

घबड़ाना (घबराना)
टोकड़ी (टोकरी)

पिंजड़ा (पिंजरा) प्रालब्ध (प्रारब्ध)।

[श्राप, विरलाप और चात्रिक में [र] नहीं होना चाहिये। शुद्ध रूप हैं शाप, विलाप, चातक। पूर्वी प्रदेशों के विद्यार्थी [ड] वाले शब्दों की सूचियाँ बना लें।]

६. [व-ब] वाले शब्दों में कितना अर्थभेद होता है, यह इस बात से समझ लीजिए कि वात और बात, वर्तन और बर्तन, वाह्य (उठाने योग्य) और बाह्य (बाहरी) अलग-अलग शब्द हैं। [व] की जगह [ब] और [ब] की जगह [व] लिखने वालों को अपनी भूलों के प्रति सजग रहना चाहिये।

दवाव (दबाव)	वहिरंग (बहिरंग)	ब्यापार (व्यापार)
पूर्ब (पूर्व)	वहिष्कार (बहिष्कार)	बाणी (वाणी)
बन (वन)	ब्रत (व्रत)	बृष्टि (वृष्टि)
बनस्पती (वनस्पति)	ब्यक्ति (व्यक्ति)	विभीषण (बिभीषण)
बिष (विष)	ब्याकरण (व्याकरण)	शव्द (शब्द)।
बैदेही (वैदेही)		

[व वाले संस्कृत शब्दों की सूची तैयार करो; जैसे—वचन, वध, वधू, वन्दना,

वर्ग, वर्ष, वल्लभ, वशिष्ठ, वसन्त, वस्त्र, वाक्य, वामन, वास्तव, विकार, वित्त, विद्या, विना, विभव, विवरण, विषय, वृद्धि, व्यंजना, वेश्या, वैश्य, व्यथा, स्वयंवर।]

७. [श, ष, स] के भेद को न समझने वाले प्रायः इस तरह की भूलें करते हैं—

अमावश्या (अमावस्या)	**निश्कपट** (निष्कपट)	**विषेश** (विशेष)
अवकास (अवकाश)	**श्वसुर** (श्वशुर)	**विस्वास** (विश्वास)
असोक (अशोक)	**संतोश** (संतोष)	**शंकट** (संकट)
आत्मशात (आत्मसात्)	**निश्काम** (निष्काम)	**शारांस, शारांश** (सारांश)
आदर्ष (आदर्श)	**निश्फल** (निष्फल)	**शाशन** (शासन)
कलस (कलश)	**प्रसंशा** (प्रशंसा)	**शीर्शक** (शीर्षक)
कश्ट (कष्ट)	**प्रशाद** (प्रसाद)	**शुसोभित** (सुशोभित)
तपश्या (तपस्या)	**भाशा** (भाषा)	**शोशक** (शोषक)
दुस्कर (दुष्कर)	**मनुश्य** (मनुष्य)	**शैनिक** शक्ति (सैनिक)
दृष्य (दृश्य)	**राश्ट्र** (राष्ट्र)	**स्रवण** (श्रवण)
नास (नाश)	**विकाश** (विकास)	**श्रोत** (स्रोत)

संयोगवस (संयोगवश)
संसोधन (संशोधन)
साखा (शाखा)
सूर्पनखा (शूर्पणखा)
सोचनीय (शोचनीय)
हितैशी (हितैषी)।

[ष वाले शब्द संस्कृत तत्सम होते हैं—इनकी सूची बनाओ। जैसे, आषाढ़, उषा, कोष, दोष, द्वेष, धनुष, निषेध, पुरुष, भाषण, भूषण, रोष, विषय, हर्ष।]

८. शब्द के अन्त में हल् चिह्न होना चाहिये—

अकस्मात (अकस्मात्)
जगत (जगत्)
परिषद (परिषद्)
पश्चात (पश्चात्)
पृथक (पृथक्)
बुद्धिमान (बुद्धिमान्)
भगवान (भगवान्)
भविष्यत (भविष्यत्)
महान (महान्)
मूल्यवान (मूल्यवान्)
विधिवत (विधिवत्)
विराट (विराट्)
शरद (शरद्)
श्रीमान (श्रीमान्)
सम्राट (सम्राट्)
हनुमान (हनुमान्)।

९. हल् चिह्न नहीं होना चाहिये—

दृश्यमान् (दृश्यमान)
नवम् (नवम)
परम् पद (परम पद)
पञ्चम् (पञ्चम)

पतित् (पतित)
प्राचीनतम् (प्राचीनतम)
भाषागत् (भाषागत)
विराजमान् (विराजमान)
शत् शत् (शत शत)
शाश्वत् (शाश्वत)।

[श्रीमान् और विराजमान के अन्तर का कारण क्या है ? हल् वा हल, सन् (साल) और सन (पटुआ), जगत् (संसार) और जगत (कुएँ का चौतरा) में हलन्त के कारण अर्थभेद है।]

१०. अक्षरलोप द्वारा अशुद्धियाँ—

अध्यन (अध्ययन)
अध्या (अध्याय)
उद्देश (उद्देश्य)
गमनान्तर (गमनानन्तर)
द्वन्द (द्वन्द्व)
पर्वती (पर्वतीय)
पाण्डे (पाण्डेय)
प्रत्य (प्रत्यय)
राजसू यज्ञ (राजसूय)
राष्ट्री (राष्ट्रीय)
लालित (लालित्य)
वैधव (वैधव्य)
सप्ता (सप्ताह)
सामर्थ (सामर्थ्य)
स्वतन्त्रा (स्वतन्त्रता)
स्वालम्बन (स्वावलम्बन)
स्वास्थ (स्वास्थ्य)।

११. प्राय: लिखाई में असावधानी के कारण अन्तिम अक्षर छूट जाता है—

अधिकत (अधिकता) पूजनी (पूजनीय)
आधुनि (आधुनिक) बच्च (बच्चे)
भगवा (भगवान्) बाते (बातें)।

[यदि अपने लेख को एक बार पढ़ लिया जाये तो ऐसी अशुद्धियाँ अपने आप पकड़ में आ जाती हैं।]

अभ्यास २

१. ऐसे पाँच-पाँच शब्द लिखो जिनमें निम्नलिखित व्यंजन आते हैं—

श, ण, ष, स, य, व, न, ह।

२. निम्नलिखित शब्दों में एक-एक व्यंजन छूट गया है। शुद्ध करके लिखो—

उद्देश, अध्यन, सामर्थ, स्वास्थ, स्वालम्बन, पाण्डे।

३. निम्नलिखित में जहाँ हल चिह्न छूट गया है, लगा दो—

सम्राट, उदघाटन, महान, सप्तम, परिषद, संसद, अर्थात, श्रदधावान, भगवत गीता, गत, पठित, वाक, नवीनतम, पृथक ।

४. निम्नलिखित को शुद्ध करो—

बनबास, ब्राह्मन, वहिरंग, मरन, कलस, धुरंदर, प्रनाम, सोड़ा, रोड़, साढ़ी, प्रांगन, बूड़ा, बिधी, बिद्या, हितैशी, शाशन, अवकास, बिकाश, ब्यापार, प्रालब्ध, सिंघ, विजली, बियोग ।

३. संयुक्त व्यंजन

६. [य] के साथ संयोग की भूलें—

अन्तर्ध्यान (अन्तर्धान)	जादा (ज्यादा)	राज्यसूय यज्ञ (राजसूय)
अन्ताक्षरी (अन्त्याक्षरी)	जूँ जूँ (ज्यों ज्यों)	वितीत (व्यतीत)
उद्देश (उद्देश्य)	त्यार (तैयार)	व्यक्तिक (वैयक्तिक)
उपलक्ष (उपलक्ष्य)	पियारा (प्यारा)	राधेशाम (श्याम)
कियारी (क्यारी)	पियास (प्यास)	सदृश्य (सदृश)
कियों (क्यों)	प्रमुख्य (प्रमुख)	स्वास्थ (स्वास्थ्य)।
कृप्या (कृपया)	राजाभिषेक (राज्याभिषेक)	

२. [र] के साथ संयोग की अशुद्धियाँ—

आर्दश (आदर्श)
असर्मथ (असमर्थ)
आशीरवाद (आशीर्वाद)
आर्शीवाद (आशीर्वाद)
आर्चायों (आचार्यों)
इन्दरियाँ (इन्द्रियाँ)
कार्यकर्म (कार्यक्रम)
चर्मोत्कर्ष (चरमोत्कर्ष)
दुरगति (दुर्गति)
दुदर्शा (दुर्दशा)
नर्क (नरक)
नमरता (नम्रता)
पतर (पत्र)
परणाम (प्रणाम)
प्रन्तु (परन्तु)
प्रमाणु (परमाणु)
प्रमात्मा (परमात्मा)
परसाद (प्रसाद)
परियाय (पर्याय)
परिर्वतन (परिवर्तन)
प्रीक्षा (परीक्षा)
प्रार्दुभव (प्रादुर्भाव)
पुर्नुत्थान (पुनरुत्थान)
पूरण (पूर्ण)
भरम (भ्रम)
मरयादा (मर्यादा)
व्याकर्ण (व्याकरण)
संस्कर्ण (संस्करण)
स्त्रोत (स्रोत)
स्मर्ण (स्मरण)
स्र्वगीय (स्वर्गीय)
सहस्त्र (सहस्र)।

[र् ऊपर जाता हो तो उसे रेफा कहते हैं। यह रेफा अगले-वर्ण के ऊपर रहती है,

और यदि अगले वर्ण के बाद मात्रा हो तो उस मात्रा के ऊपर टिकती है, जैसे कर्म, कर्मी में। रेफा का स्थान ठीक होना चाहिये।]

३. [व] का संयोग—

दवारा (द्वारा)	**विशम्बर** (विश्वम्भर)
व्दारा, द्वारा (द्वारा)	**सवभाव** (स्वभाव)
प्रतिद्व ंद (प्रतिद्वंद्व)	**सौभाव** (स्वभाव)।

४. [क्ष-छ] की अशुद्धियाँ—

क्षात्र (छात्र)	**छेत्र** (क्षेत्र)	**विपच्छ** (विपक्ष)
छिमा, छमा (क्षमा)	**दीक्छा** (दीक्षा)	**वांक्षनीय** (वांछनीय)
छुद्र (क्षुद्र)	**नछत्र** (नक्षत्र)	**सिच्छा** (शिक्षा)।
छेम (क्षेम)	**भक्क्षण** (भक्षण)	

[क्ष केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में आता है। ऐसे शब्दों की सूची तैयार करो—अक्षय, अक्षुण्ण, कक्ष, क्षण, क्षणिक, क्षति, क्षत्रिय, क्षत्रियाणी, क्षीण, क्षुब्ध, क्षोभ, तीक्ष्ण,

दीक्षा, नक्षत्र, प्रतीक्षा, प्रत्यक्ष, भिक्षा, यक्ष, रक्षा, लक्षण, लक्ष्य, वक्ष, विक्षिप्त, विपक्ष, शिक्षा, समीक्षा, साक्षी। छात्र और क्षात्र का अर्थभेद समझ लो।]

५. [ज्ञ]—

अनिभिग्य (अनभिज्ञ) **ग्यान** (ज्ञान)
आरोज्ञ (आरोग्य) **योज्ञ** (योग्य)।

[निम्नलिखित शुद्ध रूपों को याद कर लो—
अभिज्ञ, अल्पज्ञ, कृतज्ञ, जिज्ञासा, भोग्य, भाग्य, यज्ञ, विज्ञप्ति, विज्ञान, संज्ञा।]

६. [ष्ट, ष्ठ]—

इष्ठ (इष्ट) **पृष्ट** (पृष्ठ) **श्लिष्ठ** (श्लिष्ट)
कनिष्ट (कनिष्ठ) **यथेष्ठ** (यथेष्ट) **षष्ठी** (षष्टी)
घनिष्ट (घनिष्ठ) **रजिष्टर** (रजिस्टर) **सन्तुष्ठ** (सन्तुष्ट)।
निष्टा (निष्ठा) **श्रेष्ट** (श्रेष्ठ)

[शुद्ध शब्दों की निम्नलिखित सूची बहुत उपयोगी है—
अनुष्ठान, अभीष्ट, कष्ट, गोष्ठी, चेष्टा, ज्येष्ठ, तुष्टि, दृष्टि, नष्ट,

परिशिष्ट, पुष्टि, प्रतिष्ठा, बलिष्ठ, भ्रष्ट, मिष्टान्न, वरिष्ठ, रुष्ट, शिष्ट, सृष्टि, स्पष्ट, हृष्टपुष्ट।]

७. [ङ् ञ् ण् न् म्] को पंचमाक्षर कहते हैं। संस्कृत में ये अपने-अपने वर्ग के व्यंजन के साथ आते हैं। तद्भव और विदेशी शब्दों में उच्चारण को समझकर इनका प्रयोग करना पड़ता है।

अनगिन्त (अनगिनत)	झन्डा (झण्डा)	शन्ख (शङ्ख)
इंकार (इन्कार)	दन्ड (दण्ड)	शृन्खला (शृङ्खला)
कुम्बा, कुंबा (कुन्बा)	न्यून्ता (न्यूनता)	सन्मुख (सम्मुख)
कन्ठ (कण्ठ)	पन्खा (पङ्खा, पंखा)	सम्वाद (संवाद)
कुन्डली (कुण्डली)	मांसिक (मानसिक)	सम्बंध (संबंध, सम्बन्ध)
घन्टे (घण्टे)	मिंट (मिनट)	सन्सार (संसार)
चिन्ह (चिह्न)	वाङ्ग्मय (वाङ्मय)	सन्शय (संशय)।
जन्ता (जनता)		

[हिन्दी में पंचमाक्षर की जगह प्रायः अनुस्वार का प्रयोग भी शुद्ध है, जैसे

कंठ, झंडा, दंड, डंडा, कंधा, नंगा, पंडित, शंकर आदि में। वाङ्मय ही ठीक है, वांमय नहीं। चन्द्रबिन्दु के स्थान पर भी पंचमाक्षर का प्रयोग अशुद्ध होगा।

जन्म ठीक है जंम नहीं। ऐसे शब्दों की सूचियाँ बना रखो जिनमें पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार नहीं लग सकता। इन्कार, सेन्सर आदि विदेशी शब्दों में उच्चारण के अनुसार पंचमाक्षर आवश्यक है।]

८. विविध संयोग—

अस्मर्थ (असमर्थ)
आतमरक्षा (आत्मरक्षा)
आवश्यक्ता (आवश्यकता)
आल्हाद (आह्लाद)
आव्हान (आह्वान)
उच्शृङ्खल (उच्छृंखल)
उदघाटन (उद्घाटन)
किलेश (क्लेश)

कलिष्ट (क्लिष्ट)
किरतघन (कृतघ्न)
कृतघन (कृतघ्न)
गिरस्त (गृहस्थ)
जिभा (जिह्वा, जीभ)
ताप्तर्य (तात्पर्य)
नर्क (नरक)
निशचिन्त (निश्चिन्त)

पंगति, पंत्ति (पंक्ति)
पतनियाँ (पत्नियाँ)
परसपर (परस्पर)
ब्रम्ह (ब्रह्म)
भर्त्स्ना (भर्त्सना)
भार्त (भारत)
म्हात्मा (महात्मा)
राखश (राक्षस)

श्मशान (श्मशान) **स्तीत्व** (सतीत्व) **स्मृद्ध** (समृद्ध) **श्राप** (शाप)।

६. संयोग नहीं होना चाहिये—

गर्जकर (गरजकर) **पाश्विक** (पाशविक) **व्यस्क** (वयस्क)।

त्रिस्कार (तिरस्कार) **लग्न से** (लगन)

[इ की मात्रा को पूरे संयोग से पहले लगाना चाहिये, जैसे पण्डित, पश्चिम, शक्ति, अन्तिम में। पण्डित, पश्चिम, शक्ति आदि रूप अशुद्ध हैं।]

[१. साधारण पाई वाले व्यंजन-संयोग लिखने का सही ढंग—

क डाक्टर क्यों, वाक्य, रिक्थ, क्लेश;
ख व्याख्या, तख्ती;
ग लग्न, योग्य, ग्रामीण, ग्वाला;
घ श्लाघ्य, विघ्न;
च सच्चा, स्वच्छ, वाच्य;
ज ज्वर, त्याज्य;
ञ चञ्चु;
ण, ण दण्ड, कण्ठ;
त मृत्यु, कत्था, रत्न, सत्त्व;
थ मिथ्या;
ध ध्यान, ध्वज;
न अन्त, आनन्द;
प तप्त, स्वप्न, प्यार, लिप्सा;
फ मुफ्त;

ब् शब्द, प्रारब्ध, कुब्ज;
भ् सभ्य;
म् म्लान, दम्भ, पम्प;
य् तय्यार;
ल् गल्प, तुल्य, बल्ला;
व् व्यवहार;
श् पश्चात्, अश्लील, ईश्वर;
ष् सहिष्णु, दुष्ट, शुष्क;
स् व्यस्त, स्वस्थ, स्पर्श, स्वार्थ ।

२. बिना पाई के ङ छ ट ठ ड ढ द ह हलन्त रहते हैं या दूसरे व्यंजन के ऊपर, जैसे वाङ्मय और अङ्क, हड्डी या हड्‌डी, प्रह्‌लाद या प्रह्लाद, उच्छ्‌वास, मिट्‌टी, भद्दा, अपराह्ण । इन्हीं के साथ [य] का संयोग—ङ्य, छ्य, ट्य, ड्य, ढ्य, द्य, ह्य ।

३. [र] वाले, जैसे उग्र, दरिद्र, क्रम, व्याघ्र, वज्र, भ्रान्ति, प्रेम, राष्ट्र, ड्रामा, श्राद्ध, श्रम; कर्म, अर्थ, सम्पर्क, आर्य, पूर्ति ।

४. नये रूप—क्ष त्र ज्ञ द्य द्म ह्म ह्य त्त क्त—क्षति, पक्षपात; त्राहि, पौत्र; ज्ञात, प्रज्ञा; द्युति, गद्य; बाह्य, सह्य; पद्म; ब्रह्म; वृत्ति, पत्ता; शक्ति, रक्त ।

५. दो प्रकार से—आगे और नीचे—क्क, क्क; क्ल, क्ल; च्च, च्च; ज्ज, ज्ज; न्न, न्न; द्य, दय; क्त, क्त; क्र, क्र; त्न, त्न; ल्ल, ल्ल; श्व, श्व; श्ल, श्ल ।]

१०. किन्हीं-किन्हीं शब्दों में दो से अधिक व्यंजनों का संयोग होता है। ऐसे संस्कृत के शब्द संख्या में बहुत अधिक नहीं हैं, इसलिए इनकी सूची अवश्य बना रखो। उदाहरण—ऊर्ध्व, ओष्ठ्य, ज्योत्स्ना, निष्क्रिय, राष्ट्र, लक्ष्मी, लक्ष्य, स्त्री, सामर्थ्य।

अभ्यास ३

१. चार-चार ऐसे शब्द लिखो जिनमें निम्नलिखित आधे व्यंजन संयुक्त रूप में प्रयुक्त हों—

ष्, र्, स्, क्, ल्, न्, श्।

२—निम्नलिखित व्यंजनों के संयोग बनाकर लिखो—

प् य, र् क, क् र, त् र, क् ष, ज् ञ, त् त, ड् ड, द् र, द् व, ह् म, क् ल, द् द, श् व, ष् ट।

उदाहरण ग् ल = ग्ल अथवा ग्ला।

३. निम्नलिखित को शुद्ध करके लिखो—

स्वंग, प्रमात्मा, स्मर्ण, प्रमाणु, अस्त्र, सहस्त्र, चर्मोत्कर्ष, प्रतिद्वंदी, नक्षत्र, सिच्छा, ग्यान, निष्टा, नष्ठ, गोष्टी, वांगमय, सन्शय, जन्ता, कुन्डल, पन्डित, अस्मर्थ, नर्क, किलेश, इंकार, भीस्म, सूर्यगृहन।

४. व्यंजन द्वित्व

१. शुद्ध उच्चारण करने से और शब्द की बनावट को समझने से पता चलता है कि द्वित्व कहाँ होना चाहिये और कहाँ नहीं।

अत्ति (अति)
अवन्नति (अवनति)
इकठ्ठा* (इकट्ठा)
उज्वल (उज्ज्वल)
उतेजना (उत्तेजना)
उदंड (उद्दंड)
उधत (उद्धत)
उनति (उन्नति)

उलंघन (उल्लंघन)
उलास (उल्लास)
उलेख (उल्लेख)
कुच्छ (कुछ)
नद्दी (नदी)
निवृति (निवृत्ति)
प्रज्ज्वलित (प्रज्वलित)
बुद्धवार (बुधवार)

महत्व (महत्त्व)
रक्खा (रखा)
लिक्खा (लिखा)
सम्पति (संपत्ति)
सम्मिल्लित (सम्मिलित)
सुद्धार (सुधार)
सुद्धबुद्ध (सुधबुध)।

---

*संस्कृत और हिन्दी में महाप्राण ध्वनियों का द्वित्व अल्पप्राण और महाप्राण के योग से लिखा जाता है, जैसे मक्खन, अच्छा, मट्ठा, ऋद्धि, फुप्फुस आदि में।

[उधार और उद्धार, मल और मल्ल, पता और पत्ता, कथा और कत्था में अर्थ का भेद समझ लो। देखो आगे भी]

(ख) [रेफा के बाद का व्यंजन संस्कृत में विकल्प से द्वित हो जाता है, किन्तु हिन्दी में द्वित नहीं करते—

संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी
अर्द्ध, अर्ध	अर्ध	धर्म्म, धर्म	धर्म
कर्त्तव्य, कर्तव्य	कर्तव्य	वर्म्मा, वर्मा	वर्मा
चर्य्या, चर्या	चर्या	समावर्त्तन, समावर्तन	समावर्तन।]

अभ्यास ४

नीचे लिखे शब्दों को लिखो :—

अड्डा, अधन्ना, उच्चारण उजड्ड, उत्तम, उत्तीर्ण, उत्पत्ति, उद्धत, ऐच्छिक, कच्चा, कल्लोल, खच्चर, खट्टा, गद्दी, चट्टान, चित्त, चौकन्ना, छल्ला, जल्लाद, झज्झर, झर्री, टक्कर, डिब्बा, तत्त्व, दुस्सह, धज्जी, धिक्कार, नत्थी, निमित्त, पट्टी, पत्ता, पन्ना, प्रवृत्ति, बग्घी, बुड्ढा, मक्खन, मद्धिम, महत्त्व, मुट्ठी, मृत्तिका, योद्धा, सज्जन, सत्त्व, सम्मेलन, हत्था।

५. सन्धि करने में भूल

१. स्वर-सन्धि—

अत्याधिक (अत्यधिक)
अत्योक्ति (अत्युक्ति)
अनाधिकार (अनधिकार)
उपरोक्त (उपर्युक्त)
जात्याभिमान (जात्यभिमान)
तदोपरान्त (तदुपरान्त)
देविन्द्र (देवेन्द्र)
देवुत्थान (देवोत्थान)
परयन्त (पर्यन्त)
प्रोढ़ (प्रौढ़)
बालुपदेश (बालोपदेश)
रीत्यानुसार (रीत्यनुसार)
सदोपदेश (सदुपदेश)।

२. व्यंजन-सन्धि—

आछादन (आच्छादन)
उछवास (उच्छ्वास)
उतपात (उत्पात)
उज्वल (उज्ज्वल)
जगतगुरु (जगद्गुरु)
जगत् बंधु (जगद्बंधु)

जगननाथ (जगन्नाथ)
भगवत भक्ति (भगवद्भक्ति)
महत्व (महत्त्व)
यावत जीवन (यावज्जीवन)
शरत्चन्द्र (शरच्चन्द्र)
छत्रछाया (छत्रच्छाया)

संसद् सदस्य (संसत्सदस्य)
सतगुरु (सद्गुरु)
सत्गुण (सद्गुण)
सन्मान (सम्मान)
सन्मुख (सम्मुख)
सम्हार (संहार)।

३. विसर्ग-संधि—

अधस्पतन (अध:पतन)
अन्तर्कथा (अन्त:कथा)
अन्तरगत (अन्तर्गत)
अन्तरप्रान्तीय (अन्त:प्रान्तीय)
अतेव (अतएव)
अन्तर्रात्मा (अन्तरात्मा)
अध:गति (अधोगति)

अधोपतन (अध:पतन)
तेजमय (तेजोमय)
दुरावस्था (दुरवस्था)
दुरोपयोग (दुरुपयोग)
दुस्कर (दुष्कर)
दुशासन (दुश्शासन, दु:शासन)
दुसाध्य (दुस्साध्य)

नभमंडल (नभोमंडल)
निरवलम्ब (निरालम्ब)
निस्दोष (निर्दोष)
निस्छल (निश्छल)
निस्पक्ष (निष्पक्ष)
निरोग (नीरोग)
पुनर्उक्ति (पुनरुक्ति)
पुनरोत्थान (पुनरुत्थान)
पुरष्कार (पुरस्कार)
मनोकामना (मन:कामना)
मन:योग (मनोयोग)
यशगान (यशोगान)
शिरोपीड़ा (शिर:पीड़ा)
सद्यजात (सद्य:जात)
स्वतस्सिद्ध (स्वत:सिद्ध)।

[याद रहे कि परिष्कार, दुष्कर, नमस्कार, पुरस्कार के ष् स् ठीक हैं।

अभ्यास ५

१. निम्नलिखित में सन्धि करो—

उत् चारण, गरि ईश, उत् हृत, प्रति एक, जगत् ईश, उत् लास, तत् लीन, दु: लभ, तप; भूमि, सु आगत, सत् त्व, महत् ता, अनु छेद, जगत् नाथ ।

२. नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध करो—

रीत्यानुसार, दुरावस्था, तदोपरान्त, उपरोक्त, अत्योक्ति, षट्दर्शन, सन्सार, निस्फल, निरोग, उदीप्त, उज्वल, अधोपतन, मनोकामना, दुसाध्य, निस्छल, मन:योग, आविस्कार, ज्योतिन्द्र, तिरिश्कार, भाष्कर, यशलाभ, सम्हार, सन्मान, सन्यासी, सदेव, वाकाडम्बर, नि:धन ।

६. समास-सम्बन्धी भूलें

उन्नतशील (उन्नतिशील)
कृतध्नी (कृतघ्न)
घनिश्याम (घनश्याम)
दृढ़व्रती (दृढ़व्रत)
निरपराधी (निरपराध)
निर्दोषी (निर्दोष)
निर्लज्जा (निर्लज्ज)
निःस्वार्थी (निःस्वार्थ)
मद्यपानी (मद्यपायी)
यथाविध (यथाविधि)
राज्यनैतिक (राजनैतिक)
शान्तमय (शान्तिमय)
सतोगुण (सत्त्वगुण)
समुन्नतशील (समुन्नतिशील)
सौभाग्यशील (सौभाग्यशाली)
स्वतन्त्रप्रिय (स्वतन्त्रताप्रिय)
हिन्दी अभाषी (अहिन्दीभाषी)।

[संस्कृत के ऋकारान्त (पितृ, धातृ, कर्तृ, मातृ, भ्रातृ, नेतृ आदि) तथा व्यंजनान्त (तेजस्, श्रेयस्, मनस् आदि) शब्दों का ज्ञान शुद्ध समास बनाने के लिए आवश्यक है; नहीं तो पितृभक्त, मातृभूमि, भ्रातृगण, तेजस्वी, श्रेयस्कर, मनस्ताप आदि रूपों की जगह हिन्दी

में त्रुटिपूर्ण शब्द बनेंगे। पक्षिगण, प्राणिवृंद, मन्त्रिमण्डल, योगिराज, संन्यासिवर्ग ठीक हैं; पक्षीगण, प्राणीवृंद, मन्त्रीमण्डल, योगीराज, संन्यासीवर्ग नहीं, क्योंकि संस्कृत में मूलरूप पक्षिन्, संन्यासिन् आदि है।]

अभ्यास ६

नीचे लिखे समस्त पदों (समासयुक्त शब्दों) को शुद्ध करके लिखो—

यथाशक्त, उन्नतशील, स्वतन्त्रप्रिय, योगीराज, संन्यासी वर्ग, हाथकड़ी, मीठबोला, कानकटा, पुरुषुत्तम, तृकालज्ञ, पीतंबर, नेतागण, माताभक्त, अ्रष्टवक्र, शशीभूषण, स्वामीभक्त।

७. शब्द-निर्माण की अशुद्धियाँ

१. संज्ञा में एक की जगह दो प्रत्यय लगा देने से—

अज्ञानता (अज्ञान)
आधिक्यता (आधिक्य, अधिकता)
उत्कर्षता (उत्कर्ष)
ऐक्यता (एकता या ऐक्य)
औदार्यता (औदार्य, उदारता)
कार्पण्यता (कृपणता, कार्पण्य)
गौरवता (गुरुता, गौरव)
चारुताई (चारुता)
दारिद्रता (दारिद्र्य, दरिद्रता)
धैर्यता (धैर्य, धीरता)
पौरुषत्व (पौरुष, पुरुषत्व)
बाहुल्यता (बाहुल्य, बहुलता)
भीरुताई (भीरुता)
वैमनस्यता (वैमनस्य)
साम्यता (साम्य, समता)
सुंदरताई (सुन्दरता)
सौंदर्यता (सुन्दरता या सौन्दर्य)
सौजन्यता (सुजनता, सौजन्य)।

२. विशेषण से संज्ञा—

उपयोगता (उपयोगिता)
नियमित्ता (नियमितता)
महानता (महत्ता)
व्यस्ता (व्यस्तता)
स्थायीत्व (स्थायित्व)
स्वतन्त्रा (स्वतन्त्रता)

३. विशेषण बनाने में—

अकाट्य (अखण्डनीय)
सदृश्य (सदृश)
अक्षुण्य (अक्षुण्ण)
निरोग्य (नीरोग)
आवश्यकीय (आवश्यक)
स्वस्थ्य (स्वस्थ)
दुस्साध (दुस्साध्य)
निरपराधी (नरपराध)
अचम्भित [हिन्दी के शब्दों के साथ -इत प्रत्यय नहीं लगाना चाहिये।]
सिञ्चित (सिक्त)
निर्दोषी (निर्दोष)
प्रफुल्लित (प्रफुल्ल)
निर्लोभी (निर्लोभ)
दरिद्री (दरिद्र)
शहरीय (शहरी)
पूज्यनीय (पूज्य या पूजनीय)
गोप्यनीय (गोप्य, गोपनीय)
मान्यनीय (माननीय, मान्य)
निराशपूर्ण (निराशापूर्ण)
नीतिवान् (नीतिमान्) इ, ई, उ, ऊ के बाद मान् लगता है।
भाग्यमान् (भाग्यवान्)
श्रद्धामान् (श्रद्धावान्)
शान्तमय (शान्तिमय)
-मान् और -मय दोनों प्रत्यय संज्ञा-रूपों में जोड़े जाते हैं।

निरासपूर्ण (निराशापूर्ण)
आत्मक (आत्मिक)
परिवारिक (पारिवारिक)
व्यवहारक (व्यावहारिक)
लोकिक (लौकिक)
साहित्यक (साहित्यिक)
सप्ताहिक (साप्ताहिक)
भिज्ञ (अभिज्ञ)

सुबोधपूर्ण (सुबोध)
समाजक (सामाजिक)

-इक प्रत्यय से विशेषण बनते हैं। अक का अर्थ तो है 'करनेवाला' जैसे पाठक (पढ़नेवाला), निवेदक, चालक आदि—ये सब संज्ञाएँ हैं।

विदेशिक (वैदेशिक)
कृतिज्ञ (कृतज्ञ)।

कृदन्तों में **अभीष्टित** (अभीष्ट), **अभिशापित** (अभिशप्त), **गोपित** (गुप्त), **व्यापित** (व्याप्त), **सलज्जित** (सलज्ज, लज्जित) चिंत्य हैं।

४. संज्ञा से क्रियाविशेषण—

सकुशलपूर्वक (कुशलतापूर्वक, सकुशल)
सानंदपूर्वक (सानन्द, आनन्दपूर्वक)।

५. स्त्रीलिंग—

अनाथिनी (अनाथा)
अध्यापका (अध्यापिका)
अप्सरी (अपसरा)
कवित्री (कवयित्री)
कृशांगिनी (कृशांगी)
गायकी (गायिका)
प्रणयनी (प्रणयिनी)
पड़ोसन (पड़ोसिन)
प्रदर्शिनी (प्रदर्शनी)
पिशाचिनी (पिशाची)
भंगन (भंगिन)
भिखारिणी (भिखारिन)
श्वेतांगिनी (श्वेतांगी)
सिंहिनी (सिंहनी)
हतभागिनी (हतभाग्या)।

अभ्यास ७

निम्नलिखित को शुद्ध करो—

प्रफुल्लित, मायाविन, विलासिन स्त्री, साँपन, गायका, स्वर्गिय, छोटप्पन, नास्तिक्ता, बाहुल्यता, सौजनता, धनीजन, भिखारनी, वृद्धी, साहित्यक, गौरवता, असह्यनीय, सावधानपूर्वक, निराशपूर्ण, ईर्षालू, भूतिक, नीतिक, महात्म्य ।

८. विविध रूप

[हिन्दी में अनेक शब्दों के दो-दो रूप चल रहे हैं और दोनों शुद्ध माने जाते हैं—

अंग्रेज़ी—अँगरेज़ी
अंजलि—अंजली
अगार—आगार
अनुमित—अनुमानित
उषा—ऊषा
एकत्र—एकत्रित
एक-आध—एकाध
कलश—कलस
कुंअर—कुँवर
कुछ-एक—कुछेक
कोश—कोष
कोशल—कोसल
क्रुद्ध—क्रोधित

गरमी—गर्मी
गुंजाइश—गुँजायश
ग्रस्त—ग्रसित
घबराता—घबड़ाता
छठा—छठवाँ
जाए—जाये
तालु—तालू
तुरग—तुरंग
दम्पती—दम्पति
पहले—पहिले
पाउंड—पौंड
पिंजरा—पिंजड़ा
हर एक—हरेक

हलुआ—हलुवा
पृथिवी—पृथ्वी
प्रतिकार—प्रतीकार
प्रतिहार—प्रतीहार
बिलकुल—बिल्कुल
यूरोप—योरोप
रियासत—रिआसत
लिए—लिये
वशिष्ठ—बशिष्ठ
विहग—विहंग
सरदी—सर्दी
सत्रह—सतरह
सोसाइटी—सोसायटी ।

[हम प्रथम रूपों को शुद्ध मानते हैं ।]

९. लिपि चिह्न

१. [कुछ अक्षर दो-दो रूपों में मिलते हैं—

अ-अ　　झ-झ　　ल-ल　　भ-भ　　ऋ-ऋ

छ-छ　　ण-ण　　श-श　　ध-ध　　क्ष-क्ष

हिन्दी प्रदेश की सरकारों ने ऊपर के क्रम में पहले अक्षरों को प्रचलित करने का निश्चय किया है, किन्तु व्यवहार में दोनों चल रहे हैं। दोनों ठीक हैं।]

२. [वर्धा प्रणाली के अनुसार इ उ ए रूप नहीं लिखे जाते, अ में मात्राएँ लगाकर पूरी बाराखरी तैयार की जाती है—

अ आ अि अी अु अू अे अै ओ औ अं अः

किन्तु इसका प्रचलन उत्तर में नहीं है। इस पद्धति को सामान्यतः स्वीकार नहीं किया गया।]

३. [संयुक्त अक्षरों के बारे में नया विचार यह है कि यदि पहले व्यंजन में पाई न हो तो उसी के साथ हल्-चिह्न लगाकर लिखें—जैसे राष्ट्र (राष्ट्र), ब्रह्म (ब्रह्म)। इस

से लिपि में अनिश्चय पैदा हो गया है। लिखाई में पुरानी पद्धति का निर्वाह करना चाहिए। च्च की जगह क्ष भी ठीक नहीं है।]

४. [बहुधा विद्यार्थी इतने भ्रष्ट अक्षर लिखते हैं कि शब्द की पहचान करना कठिन हो जाता है। उनके उ-ड, ए-रा, क-फ, ख-रव, घ-ध, ङ-ड़, ज-ञ, ट-र, ठ-ढ, ड-ड़, ढ-ढ़, त-न, दृ-द्द, प-य, भ-म, व-ब, में अन्तर नहीं जाना जा सकता। उस समय परीक्षक को बड़ी खीझ होती है और परीक्षार्थी का अहित हो जाता है। इसलिए शिरोरेखा, बिन्दु, मात्रा, हल्-चिह्न आदि छोटे-छोटे प्रतीकों का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

विद्यार्थियों को सुडौल, सुस्पष्ट और सुन्दर अक्षर लिखने का अभ्यास करना चाहिये। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी पाये गये हैं जो झ, ज्ञ, और क्ष का अन्तर नहीं जानते—झूठ, ज्ञान और प्रत्यक्ष की जगह ज्ञूठ, झान और प्रत्यज्ञ लिखते हैं। पढ़ाने वाले के बस में हो तो ऐसे विद्यार्थियों को फिर पहली कक्षा में भेज दे कि जाओ पहले हिन्दी की वर्ण-माला अच्छी तरह सीखो।]

युग्म-शब्द

अगले आठ-दस पृष्ठों में हम ऐसे शब्दों के जोड़े दे रहे हैं जिन में परस्पर बहुत थोड़ा अन्तर है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं है। इन सूचियों का उद्देश्य यह है कि हमारे विद्यार्थी यह अनुभव करें कि ज़रा सी असावधानी का परिणाम यह हो सकता है कि हम जो कुछ कहना चाहते हैं वह स्वर, व्यंजन, मात्रा, सन्धि, संयोग के हेर फेर से निरर्थक हो जाये, उलटा अर्थ दे या ऐसा अर्थ दे जो हमारे उद्देश्य को नष्ट कर दे। इन जोड़े-जोड़े शब्दों का शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन, शुद्ध अर्थग्रहण करो। प्रतिदिन इस प्रकार के और शब्द तुम्हारे देखने में आएँगे। उनको भी इन सूचियों में जोड़ लो।

१. स्वर-मात्रा भेद—

अगम (दुर्लभ)	आगम (उत्पत्ति, शास्त्र)
अतल (जिसका तल नहीं)	अतुल (जिसके समान कोई नहीं)
अनल (आग)	अनिल (वायु)

अपमान (निरादर)	उपमान (जिस से तुलना हो)
अपेक्षा (तुलना में)	उपेक्षा (तिरस्कार)
अवलम्ब (सहारा)	अविलम्ब (बिना देर किये), आलम्ब (लटकन)
आकर (खान)	आकार (रूप)
आदि (आरम्भ)	आदी (आदत वाला)
आधि (रोग)	आधी (आधा का स्त्रीलिंग)
आहूत (बुलाया गया)	आहूति (होम, बलि)
उन (वे का विभक्ति रूप)	ऊन (पशु के बाल)
उपस्थित (हाजिर = विशेषण)	उपस्थिति (हाज़िरी = संज्ञा)
ओटना (बिनौले अलग करना)	औटना (खौलना)
ओर (तरफ़)	और (तथा)
किला (गढ़)	कीला (खूँटा)
कृति (रचना)	कृती (निपुण, पुण्यात्मा)
कोड़ी (बीस)	कौड़ी (घोंघा आदि का घर)

कोर (सिरा) | कौर (निवाला)
कोशल (अवध) | कौशल (निपुणता)
खोलना (बंधनरहित करना) | खौलना (उबलना)
गिरि (पर्वत) | गिरी (बीज या गूदा)
गुटका (छोटी पोथी) | गुटिका (गोली)
गुर (कायदा) | गुरु (आचार्य)
चिता (शव जलाने के लिए) | चीता (बाघ सा पशु)
चेली (शिष्या) | चैली (चिरी हुई लकड़ी)
जलाना (बालना) | जिलाना (जीवन देना)
जामन (दूध जमाने का दही) | जामुन (जंबू वृक्ष)
जुआ (बैलों के कंधे की लकड़ी) | जूआ (द्यूत खेल)
ढलाई (ढालने की क्रिया) | ढिलाई (शिथिलता)
तरंग (लहर) | तुरंग (घोड़ा)
तरणी (बेड़ा) | तरुणी (युवती)

दशा (अवस्था)	दिशा (तरफ़)
दारु (लकड़ी)	दारू (शराब)
दिन (रोज़)	दीन (दयनीय)
दिया (देना का भूतकालिक रूप)	दीया (दीपक)
द्विप (हाथी)	द्वीप (टापू)
देव (देवता)	दैव (भाग्य)
नकल (अनुकरण)	नकुल (नेवला)
नावक (बाण)	नाविक (माँझी)
नाहर (बाघ)	नहर (पानी की कुल्या)
निहत (मरा हुआ)	निहित (छिपा)
नियत (निश्चित)	नियति (भाग्य)
परमिति (सीमा)	परिमिति (मान)
परिच्छद (पोशाक)	परिच्छेद (विभाग)
पुरी (नगरी)	पूरी (पूड़ी)

पुरुष (आदमी) — परुष (कड़ा)
प्रासाद (महल) — प्रसाद (कृपा)
प्रेषित (भेजा हुआ) — प्रोषित (प्रवासी)
बली (बलवान्) — बलि (चढ़ावा)
बिताना (व्यतीत करना) — बताना (कहना)
बुरा (खराब) — बूरा (शक्कर)
भक्ति (भजन की क्रिया) — भक्त (भक्ति करने वाला)
भुवन (लोक) — भवन (मकान)
मणि (रत्न) — मणी (साँप)
मति (बुद्धि) — मत (राय)
मानक (मानदण्डानुसार) — मानिक (एक रत्न)
मैला (गन्दा) — मेला (जमाव)
मौर (मुकुट) — मोर (मयूर पक्षी)
योगेश्वर (योग में सिद्ध) — योगीश्वर (योगियों में शिरोमणि)

रिक्त (खाली)	रक्त (खून, लाल)
रीस (ईर्ष्या)	रिस (क्रोध)
लिपट (चिपक)	लपट (ज्वाला)
लौटना (वापस होना)	लोटना (करवट लेना)
वस्तु (चीज)	वास्तु (मकान)
शौक (चाह)	शोक (वियोग-दुःख)
समान (बराबर)	सामान (सामग्री)
सवर्ण (समान जाति का)	सुवर्ण (सोना)
सुखी (सुखवाला)	सूखी (शुष्क)
सुधार (संस्कार)	सिधार (प्रस्थान)
सुधि (स्मरण)	सुधी (विद्वान्)
सूची (तालिका)	सूचि (सूई)
सूत (सूत्र, भाट)	सुत (बेटा)
सौगन्ध (शपथ)	सुगन्ध (अच्छी गन्ध)

हरि (विष्णु) हरी (हरे रंग की)
हरिण (मृग) हरण (ले जाना)।

[निम्नलिखित वाक्य देखो—

दिन-दुखियों की संख्या दीन प्रतिदीन बढ़ रही है।
सुरेश जिस मील में काम करता है वह यहाँ से दो मिल है।
मैं समाचार-पत्र, पुस्तकें आदी पढ़ने का आदि हूँ।

शुद्ध—दीन-दुखियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।
सुरेश जिस मिल में काम करता है वह यहाँ से दो मील है।
मैं समाचार-पत्र, पुस्तकें आदि पढ़ने का आदी हूँ।]

२. सानुनासिक-निरनुनासिक—

कँकड़ी (रोड़ी) ककड़ी (खीरे की जाति की सबज़ी)
कँटीला (काँटों वाला) कटीला (पैना)
चंपत (गायब) चपत (धौल-धप्पा)

चौंक (एकाएक उठना)	चौक (आँगन)
चौंरी[1] (पूँछ के बालों का गुच्छा)	चोरी (चोर का काम)
डाट (टेक)	डाँट (फटकार)
देहात (गाँव)	देहांत (मरण)
पाव (चौथाई)	पाँव (पैर)
पूछ (पूछने की क्रिया)	पूँछ (पुच्छ, दुम)
बाट (पत्थर, वजन)	बाँट (बँटवारा)
व्यजन (पंखा)	व्यंजन (क ख आदि ध्वनियाँ)
सदेह (शरीर सहित)	संदेह (शक)
सास (पति या पत्नी की माँ)	साँस (श्वास) ।

[निम्नलिखित वाक्य पढ़ो—

राम ने कहां, "कृष्ण कहा गया है ?"

शुद्ध—राम ने कहा, "कृष्ण कहाँ गया है ?"]

---

१. इस में अनुनासिकता भी है, स्वरभेद भी ।

३. समान व्यंजन भेद—

अंटी (लच्छी) — अंडी (रेशमी कपड़ा)
अंतर (भेद) — अनंतर (बाद में)
अंश (खण्ड) — अंस (कन्धा)
अभिनय (स्वांग) — अविनय (गुस्ताखी)
अभिमान (गर्व) — अभियान (चढ़ाई)
अभिराम (सुंदर) — अविराम (लगातार)
अमिट (जो मिट न सके) — अमित (असीम)
अरबी (अरबों की भाषा) — अरवी (एक कन्द)
अर्चन (पूजा) — अर्जन (संग्रह)
अवधान (मनोयोग) — अवदान (प्रशंसित कार्य)
अशक्त (असमर्थ) — आसक्त (लिप्त)
आभरण (गहना) — आवरण (परदा), आमरण (मरने तक)
आयास (प्रयत्न) — आवास (वास-स्थान)

उबारना (उद्धार करना)	उभारना (ऊँचा उठाना)
कंकाल (अस्थि-पंजर)	कंगाल (भुक्खड़)
कटौती (रुपये में कमी)	कठौती (काष्ठपात्र)
कड़ाई (कड़ापन)	कढ़ाई (काढ़ने की क्रिया)
	कड़ाही (लोहे का छोटा कड़ाह)
कड़ी (पक्की)	कढ़ी (दही का सालन)
कमर (कटि)	कमल (पद्म पुष्प)
कोड़ी (बीस)	कोढ़ी (कोढ़ का रोगी)
कोश (ख़ज़ाना)	कोस (दो मील)
खड़ी ('खड़ा' का स्त्रीलिंग)	खरी (विशुद्ध)
खाड़ी (भूस्थित समुद्र)	खारी (नमकीन), ख़ाली (रिक्त)
गगरा (घड़ा)	घघरा (लहँगा)
गट्टा (कलाई)	गट्ठा (गट्ठर)
	घटा (मेघ-समूह)

गड़ना (धँसना) — गढ़ना (बनाना)
गदा (डंडेदार अस्त्र) — गधा (गर्दभ पशु)
गाड़ी (यान) — गाढ़ी (गहरी)
गूँधना (आटा सानना) — गूँथना (पिरोना)
गोरा (सफ़ेद) — घोड़ा (एक पशु)
चंटे (चतुर) — चंड (प्रचंड)
चक्रवाक (चकवा) — चक्रवात (बवंडर)
चहकना (बोलना) — छकना (भरपेट खाना)
चीर (वस्त्र) — चील (एक पक्षी)
छत (छाजन) — क्षत (घाव)
छीन (हर लेना) — क्षीण (दुबला)
जरठ (बूढ़ा) — जठर (पेट)
जलना (बलना) — झलना (हवा करना)

जवान (युवक)	ज़बान (जीभ, भाषा)
जुटाना (इकट्ठा करना)	जुठाना (जूठा करना)
जूठा (उच्छिष्ट भोजन)	झूठा (झूठ बोलने वाला)
जोंक (एक कीड़ा)	झोंक (झुकाव)
डीठ (नज़र)	ढीठ (निडर)
डोल (एक बर्तन)	ढोल (बजाने का...)
दाख (एक फल)	धाक (दबदबा)
दौरा (चक्कर)	दौड़ा (दौड़ना का भूतकालिक रूप)
नाड़ी (शिराएँ)	नारी (स्त्री)
निर्जर (जिसे बुढ़ापा न हो)	निर्झर (झरना)
निश्चल (अटल)	निश्छल (छलरहित)
नीड़ (घोंसला)	नीर (पानी)
नीम (एक पेड़)	नींव (आधार)
पड़ना (गिरना)	पढ़ना (अध्ययन करना)

पहाड़ (पर्वत)	फाड़ (चीर)
पाणि (हाथ)	पानी (जल)
पालतू (पाला हुआ)	फालतू (अतिरिक्त)
पाश (फन्दा)	पास (निकट)
पीड़ा (दर्द)	पीढ़ा (चौकी)
पुष्कर (जलाशय)	पुष्कल (बहुत, अच्छा)
प्रणय (प्रेम)	परिणय (विवाह)
प्रतिशोध (बदला)	प्रतिषेध (मनाही)
बहन (बहिन)	वहन (ढोना)
बहाना (खोना)	भाना (अच्छा लगना)
बाड़ (जंगला)	बाढ़ (पानी की बढ़ती)
बान (आदत)	वाण (तीर)
बार (दफ़ा)	वार (चोट, दिन)
बास (गंध)	वास (निवास)

मंदी (धीमी)	मंडी (हाट)
मिट्टी (धूल)	मिट्ठी (चुम्बन)
युक्त (जुड़ा हुआ)	भुक्त (भोगा हुआ),
	मुक्त (छोड़ा हुआ)
लोभ (लालच)	लोम (बाल)
वृन्त (डंठल)	वृन्द (समूह)
शंकर (शिव)	संकर (मिश्रित जाति)
शकल (टुकड़ा)	सकल (सब)
शप्त (शाप पाया हुआ)	सप्त (सात)
शर (बाण)	सर (सरोवर)
शाला (घर)	साला (पत्नी का भाई)
शिरा (नाड़ी)	सिरा (अन्त)
शूर (वीर)	सूर (सूर्य)
श्रवण (कान, सुनना)	श्रमण (भिक्षु)

षष्टि (६० वर्ष)	षष्ठी (छठी)
हट (परे हो)	हठ (ज़िद्द)।

४. [य] का संयोग—

अंत (समाप्ति)	अंत्य (अंत वाला)
अधन्ना (दो पैसा)	अधन्य (हतभाग्य)
अन्न (अनाज)	अन्य (दूसरा)
अभेद (अन्तर नहीं)	अभेद्य (न टूटने योग्य)
अर्घ (भेंट)	अर्घ्य (जलदान का पात्र)
अवश (विवश)	अवश्य (निश्चित)
आचार (नियम)	आचार्य (गुरु)
आभास (संकेत)	अभ्यास (फिर-फिर करना)
कृत (किया हुआ)	कृत्य (कार्य)
खाद (पांस)	खाद्य (आहार)
गण (समूह)	गण्य (गिनने योग्य)

दूत (चर)
द्रव (तरल)
पथ (मार्ग)
प्राप्त (पाया)
बालू (रेत)
मद (गर्व)
मुख (मुँह)
मूल (जड़)
योग (जोड़)
लक्ष (लाख)
वसन (कपड़े)
वाद (मत)
विजन (एकान्त)
व्यंग (विकलांग)

द्यूत (जूआ)
द्रव्य (धन)
पथ्य (हलका भोजन)
पर्याप्त (काफ़ी)
ब्यालू (रात का भोजन)
मद्य (मदिरा)
मुख्य (श्रेष्ठ)
मूल्य (कीमत)
योग्य (निपुण)
लक्ष्य (ध्येय)
व्यसन (लत)
वाद्य (बाजा)
व्यजन (पंखा)
व्यंग्य (ताना)

शाम (सायं) श्याम (काला, कृष्ण)
संखिया (एक विषैला पत्थर) संख्या (नम्बर)
समान (बराबर) सामान्य (साधारण)।

५. [व] का संयोग—
अनुसार (अनुकूल) अनुस्वार (अनुनासिक चिह्न)
जाला (झिल्ली) ज्वाला (लपट)
दीप (दीया) द्वीप (टापू)
बिल (छेद) बिल्व (बेल फल)
सत्त्व (सार) स्वत्व (अधिकार)
सम्मत (इच्छानुकूल) संवत् (वर्ष)
सर्ग (काव्य का अध्याय) स्वर्ग (सुर लोक)
सुर (देवता) स्वर (ध्वनि)।

६. अकेला और द्वित व्यञ्जन—
अनादि (जिसका आदि न हो) अन्नादि (अन्न और दूसरी चीज़ें)

आसन (बैठने की वस्तु)	आसन्न (निकट)
उधार (ऋण)	उद्धार (मुक्ति)
कथा (कहानी)	कत्था (खैर का सत्त)
किला (दुर्ग)	किल्ला (खूंटा)
कुटी (झोंपड़ी)	कुट्टी (कटाई)
खरा (विशुद्ध)	खर्रा (लम्बा चिट्ठा)
चित (सिर के बल)	चित्त (मन)
चुनना (बीनना)	चुन्ना (कीड़ा)
पका (सीझा हुआ)	पक्का (मज़बूत)
पट (कपड़ा)	पट्ट (तख़्ती)
पटु (चतुर)	पट्टू (ऊनी वस्त्र)
पतन (गिरावट)	पत्तन (नगर)
पता (ठिकाना)	पत्ता (पत्र)
पिला (पीने को दे)	पिल्ला (कुत्ते का बच्चा)

बचा (रक्षा करो)	बच्चा (बालक)
वली (बलवान्)	बल्ली (लकड़ी)
भट (योद्धा)	भट्ट (पंडित)
मल (दोष)	मल्ल (पहलवान)
विपिन (जंगल)	विपन्न (दुःखी)
लता (बेल)	लत्ता (कपड़ा)
सत (सत्य)	सत्त (सार)
सजा (दण्ड)	सज्जा (सजावट)
समिति (सभा)	सम्मति (राय), सन्मति (अच्छी बुद्धि)।

७. समान और संयुक्त व्यंजन—

अमल (बिना मैल के)	अम्ल (खटास)
अरथी (टिकटी)	अर्थी (चाहने वाला)
अवयव (अंग)	अव्यय (अविकारी शब्द)
इन्दिरा (लक्ष्मी)	इन्द्रा (इन्द्राणी)

उदाहरण (दृष्टान्त)	उद्धरण (अवतरण)
उद्धत (अक्खड़)	उद्यत (तैयार)
उपयुक्त (ठीक)	उपर्युक्त (ऊपर कहा हुआ)
कटिबंध (कमरबंध)	कटिबद्ध (तैयार)
कदम (पैर)	कदम्ब (एक पेड़)
करण (साधन)	कर्ण (कान)
कमल (पद्म पुष्प)	कम्बल (कम्मल)
करता (करना का वर्तमान)	कर्ता (करने वाला)
करोड़ (१०० लाख)	क्रोड़ (गोदी)
कलपना (कुढ़ना)	कल्पना (सोचना)
कर्म (कार्य)	क्रम (सिलसिला)
कान (कर्ण)	कान्ह (कृष्ण)
कुमार (राजकुँवर)	कुम्हार (बर्तन बनाने वाला)
कृमि (कीड़ा)	कर्मी (कर्मचारी)

क्रांति (उलट-फेर)	क्लांति (थकावट)
क्षात्र (क्षत्रिय-सम्बन्धी)	छात्र (विद्यार्थी)
गृह (घर)	ग्रह (सूर्य चन्द्रादि)
चरम (अंतिम)	चर्म (चमड़ा)
निधन (मृत्यु)	निर्धन (दरिद्र)
नियुत (दस लाख)	नियुक्त (लगाया गया)
निवृत्ति (मुक्ति)	निर्वृत्ति (पूर्ति)
परदेश (दूसरा देश)	प्रदेश (प्रान्त)
परवाह (ध्यान)	प्रवाह (बहाव)
पराया (दूसरे का)	प्रायः (बहुधा)
परिचारक (सेवक)	प्रचारक (प्रचार करने वाला)
परिणत (पक्का)	प्रणत (झुका हुआ)
परिणाम (फल)	प्रणाम (नमस्कार)
परिणीत (विवाहित)	प्रणीत (बनाया हुआ)

परिवर्तन (उलटना)	प्रवर्तन (उकसाना)
परिहार (त्याग)	प्रहार (चोट)
लगन (धुन)	लग्न (लगा हुआ)
विवरण (ब्योरा)	विवर्ण (बिना रंग)
शकल (खंड)	शक्ल (चेहरा)
शुक्ल (सफ़ेद)	शुल्क (फ़ीस)
शान्ति (स्थिरता)	श्रान्ति (थकाववट)
सर्ग (अध्याय)	स्वर्ग (तीसरा लोक) ।

अभ्यास ८

निम्नलिखित में से शुद्ध रूपों को रेखांकित करो—

अकृतिम, अकृत्रिम, अक्रत्रिम   अच्छर, अक्षर   अठारह, अट्ठारह, अठारा

अतिथेय, आतिथेय
अधिकांश, अधिकांस
अपराह्न, अपराह्ण
आराधना, अराधना
अस्थाई, स्थायी
असपष्ट, स्पष्ट
अस्वीकार, अस्विकार
अहार, आहार
आनेकानेक, अनेकानेक
आरोपण, आरोपन
आविष्कार, आविश्कार
आसाढ़, आषाढ़
इत्यादि, इतियादि
इश्वर, ईश्वर

उत्तरदाइत्व, उत्तरदायित्व
उत्तरायण, उत्तरायन
उद्योगिक, औद्योगिक
कठीन, कठिन
करोड़ों, करोणों
किर्ति, कीर्ति
कीतना, कितना
क्रपा, क्रिपा, कृपा
गन्गा, गंगा, गङ्गा
गर्मियाँ, गर्मीयाँ
ग्रहिणी, गृहिणी
गाँव, गांव
गाहर्स्थ, गार्हस्थ्य
जन्घा, जंघा, जङ्घा

जन्माष्टिमी, जन्माष्टमी
जाग्रत्, जाग्रत, जागृत
डन्ठल, डंठल
तलाश, तालाश, तलास
तिक्ष्ण, तीक्ष्ण, तीछ्ण
तृकाल, त्रिकाल
त्रिगुण, तृगुण
दक्षिणायन, दक्षिणायण
दयालु, दयालू, दयाल
दहिना, दाहिना
दूल्हन, दुल्हन, दुलहिन
द्रिष्य, दृष्य, दृश्य
दुर्गापूर, दुर्गापुर
देस, देश

नच्छत्र, नक्षत्र
नर्तकीयाँ, नर्तकियाँ
निद्दा, निद्रा
नीलकंठ, निलकंठ
निवाणार्थि, निवारणार्थ
निष्चेष्ट, निश्चेष्ट
पंक्तियाँ, पंक्तियाँ
पन्जर, पञ्जर, पंजर
पद्मिनी, पद्मनी
परिच्छा, परीक्षा
परस्थिति, परिस्थिति
पश्चिम, पर्श्चिम
परुपकार, परोपकार
पुश्प, पुष्प

पुराना, पूराना
प्रकृति, प्रक्रिति
प्रतिष्ठत, प्रतिष्ठित
प्रतीज्ञा, प्रतिज्ञा
प्रथम, प्रथम्
प्रशन्न, प्रसन्न
बिशाल, बिसाल, विशाल
बिशय, विषय, बिषय
बीणा, वीणा
बुधदेव, बुद्धदेव
बेश, वेश
ब्राजमान, विराजमान
मध्यान्ह, मध्याह्न
मनोरथ, मनोर्थ

मातृभाषा, मात्रभाषा
लक्षमी, लक्ष्मी
वर्णशंकर, वर्णसंकर
वागजल, वाग्जाल
वाञ्छा, वान्छा
वास्तविक, वास्तिविक
बिधेय, विधेय
विर्द्याथी, विद्यार्थी
ब्रिद्धि, वृद्धि
विषम, बिसम
विष्लेषण, विश्लेषण
व्यवसायिक, व्यावसायिक
शाहंशाह, शहंशाह
शिष्टाचार, सिश्टाचार

शुद्र, शूद्र
सन्यासी, संन्यासी
संशय, सन्शय, शंशय
सन्सकार, संस्कार
सर्वस, सर्वस्य, सर्वस्व
सरोजिनी, सरोजनी
सिंहासन, सिंघासन
सुषुप्ति, शुसुप्ति, सुसुप्ति
सून्य, शुन्य, शून्य
सोच, सोंच
स्वक्ष, स्वच्छ
स्रिष्टि, सृष्टि, सृष्टी
स्वालम्बन, स्वावलम्बन
हतिबुद्धि, हतबुद्धि।

अभ्यास ९

निम्नलिखित शुद्ध शब्दों का अर्थ और उच्चारण समझकर इनकी वर्तनी का अभ्यास कीजिए—अंकुर, अकस्मात्, अज्ञात, अत्याचार, अद्वितीय, अध्यवसाय, अनर्थ, अनायास, अनिच्छा, अनियंत्रित, अनिष्ट, अनुकरण, अनुनय-विनय, अनुपयुक्त, अनुपात, अन्याय, अपमानित, अपरिचित, अपव्यय, अपूर्ण, अपूर्व, अप्रसन्न, अभ्यस्त, अरुचि, अवधि, अविश्वास, असंगत, असंबद्ध, असम्भव, असहाय, असामयिक, असावधानी, असुविधा, अस्तव्यस्त, आकर्षक, आकस्मिक, आक्रमण, आक्षेप, आग्रह, आजन्म, आजीवन, आद्योपान्त, आधुनिक, आपत्ति, आश्रय, उच्चतम, उत्तरार्द्ध, उत्तरोत्तर,

उपरान्त, एकरूप, एकाग्रचित्त, ऐश्वर्य, ओतप्रोत, कटिबद्ध, कर्कश, कर्मनिष्ठ, कल्पित, कायर, कृतार्थ, क्रमशः, क्रान्ति, क्रूर, क्षति, गगनभेदी, गगनस्पर्शी, गोपनीय, गौरव, ग्रहण, घोषणा, चमत्कार, चिरस्मरणीय, छलच्छिद्र, छिन्न-भिन्न, जागरूक, जिज्ञासा, तत्काल, तथापि, तदनन्तर, तदनुसार, तदुपरान्त, तर्क-वितर्क, तात्पर्य, तुच्छ, त्रुटि, दुराग्रह, दुर्गति, दुर्गुण, दुर्लभ, दुर्भाग्य, दृष्टिकोण, दैनिक, दैन्य, दैवयोग, दोषारोपण, द्विविधा, धारावाहिक (उपन्यास), नगण्य, निःसंकोच, निस्संकोच, निःस्वार्थ, नित्य-प्रति, निमग्न, नियंत्रण, नियुक्त, निरन्तर, निराधार, निर्जीव, निर्वाह, निर्विघ्न, निष्कंटक, निष्कपट, पत्र-व्यवहार, पथप्रदर्शक, पद्धति, परस्पर, पराकाष्ठा, परिष्कार, पुनीत, पूरक, प्रक्रिया, प्रचुर, प्रच्छन्न, प्रतिपक्षी, प्रतिबन्ध, प्रतियोगी, प्रतियोगिता, प्रत्युत्तर, प्रदर्शक, प्राधान्य, प्रेरणा, प्रोत्साहन, ब्राह्ममुहूर्त्त, भविष्यवाणी, भीषण, मनोरंजन, मर्मज्ञ, मर्मस्पर्शी, मर्यादा, मान्यता, मितव्ययी, मीमांसा, मुक्तहस्त, मुख्यतः, मुग्ध, मृगतृष्णा, यथासंभव, रमणीय, रहस्यमय, लज्जित, वक्तव्य, वयस्क, वातावरण, वादविवाद, वायुमण्डल, विज्ञापन, विद्यमान, विद्रोह, विध्वंस, विनिमय, विनीत, विभूति, विरक्त, विलक्षण, विविध, विवेचन, विशुद्ध, विस्मय, व्यतीत, व्यथा, व्यर्थ,

व्यसन, व्याकुल, व्यापक, शरणागत, शिथिल, शिरोमणि, शोचनीय, श्रद्धा, श्रेणी, संकल्प, षड्यन्त्र, संकुचित, संक्रामक, संक्षिप्त, संज्ञाहीन, संदिग्ध, संपन्न, संहार, सक्रिय, सत्कार, सत्ताधारी, सत्संग, सदैव, सद्भाव, समकक्ष, समक्ष, समारोह, समावेश, समुदाय, सम्प्रदाय, सर्वज्ञ, सर्वत्र, सहसा, सहिष्णुता, साध्य, सामंजस्य, सिद्धहस्त, सुदृढ़, सूत्रपात, सौम्य, स्तब्ध, स्थापित, स्थल, स्थानान्तर, स्थानीय, स्थापना, स्निग्ध, स्मारक, स्वभावतः, स्वेच्छा, हानि-कारक, हृदयस्पर्शी।

११. विराम चिह्न

विराम-चिह्न कई हैं, किन्तु यदि विद्यार्थी पूर्ण विराम (।), अल्प विराम (,) और प्रश्न-चिह्न (?) का प्रयोग अच्छी तरह समझ लें तो उनकी भाषा में एक निखार और स्पष्टता आ जाये।

कई विद्यार्थी पृष्ठ के पृष्ठ लिखते चले जाते हैं और कहीं पर पूर्ण विराम तक नहीं देते। यदि तुम्हारा वाक्य प्रश्न-सूचक नहीं है तो याद रखो कि प्रत्येक स्वतन्त्र वाक्य के उपरान्त पूर्ण विराम डालो। उदाहरण—

'विश्वम्भर की अवस्था अब ५० वर्ष के लगभग है शिखा को छोड़ उसके सिर के बाल छोटे-छोटे हैं उसका शरीर दुर्बल है उसके बायें कन्धे पर एक मोटा-सा यज्ञोपवीत है।'

यहाँ क्रमशः है, हैं, है, के बाद पूर्णविराम (।) का चिह्न होना चाहिये।

'वह स्कूल नहीं आया। क्योंकि वह बीमार पड़ा है।' यहाँ 'क्योंकि' से पहले पूर्ण विराम चिह्न न होना चाहिये क्योंकि ये स्वतन्त्र वाक्य नहीं हैं—दोनों को मिलाकर एक

स्वतन्त्र वाक्य बनता है। इसी प्रकार—

'जब तक हिन्दी में सब कार्य नहीं होता। देश उन्नति नहीं कर सकता।' 'होता' के बाद अल्प विराम (,) होना चाहिये।

'कृपया यह बताने का कष्ट करें। कि हम क्या पढ़ें।' इस वाक्य में 'करें' के बाद पूर्ण विराम नहीं होना चाहिये।

'इक्कीस मील चौड़ी दुनिया की सबसे बड़ी नहर यही है।' चौड़ी के बाद अल्प विराम होना चाहिये, नहीं तो अर्थ हो जायगा कि दुनिया २१ मील चौड़ी है।

'जाओगे कि, नहीं' की जगह 'जाओगे कि नहीं' होना चाहिये।

निम्नलिखित के अन्त में प्रश्न-चिह्न नहीं होना चाहिये, क्योंकि पूरा वाक्य कथन मात्र है, प्रश्न नहीं है—

न जाने अब क्या होगा ?

कह नहीं सकता कि वह क्यों नहीं आया ?

वह नहीं जानता कि तू कौन है ?

अभी तक पता नहीं चला कि शत्रु कहाँ है ?

अभ्यास १०

नीचे लिखे गद्यांशों में विराम-चिह्न लगाइए—

१. मूर्ख है अंधा है देखता नहीं क्या अभी इस डंडे से तेरी आँखें खोल दूँ अभी तुम्हें मजा चखाता हूँ

२. मैंने तुम से हाँ तुम्हीं से कितनी बार कहा कि वहाँ जाने में क्या धरा है किन्तु मैं देखता हूँ कि तुम तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे बच्चे सब आग्रह कर रहे हैं कि जाना है ठीक है जाओ मुझ से पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है

३. विशाल जगत् में यदि कोई ईश्वर है तो मैं हूँ धर्म है तो मैं हूँ प्रेम है तो मैं हूँ मैं सत् चित् आनन्द सुन्दर शिव सब हूँ

४. नायक धीरे से मैं आज ही इसका निर्णय चाहता हूँ

नायिका आगे बढ़कर प्रिय सब कुछ ठीक हो जायगा विश्वास रखिए क्या आप अपनी पुरानी बातें भूल गये

१२. शिरोरेखा-योग

बहुत से लोग शब्दों के ऊपर शिरोरेखा दिये बिना लिखते जाते हैं—जैसे, मैं अभी-अभी उनसे कह आया हूँ कि बात पक्की हो गई है।

विद्यार्थियों को इस पद्धति का तिरस्कार ही करना चाहिये। शीघ्र लेखन के लिए इस पद्धति का अपना महत्त्व तो है, किन्तु इसमें सावधानी की आवश्यकता है। अप्रौढ़ अवस्था के विद्यार्थियों द्वारा इसका निर्वाह नहीं हो सकता।

बहुत-से विद्यार्थी शिरोरेखा तो लगाते हैं, किन्तु जल्दी में वह अधूरी रह जाती है जिसके कारण और-का-और अर्थ हो जाता है। तुलना कीजिए—

जीवन था	जीव न था	मनन करना	मन न करना
एककालीन	एक कालीन	खाली (रिक्त)	खा ली
लादो	ला दो	सावन के बादलो	सावन के बाद लो
पीली	पी ली		

ने, क, से, का, में आदि परसर्गों को संज्ञा से अलग रखना चाहिए, जैसे घर

में, लड़के ने, राजकुमारों का, तालाब से। ऐसा न करने से भ्रान्ति उत्पन्न होने की संभावना होगी। तुलना कीजिए—

द्वारका द्वार का जलसे जल से सिरका सिर का।

समासों को लिखने के दो ढंग रहे हैं। छोटे-छोटे शब्दों का समास हो तो जोड़ कर, और बड़े-बड़े शब्द हों तो उन्हें अलग-अलग लिखा जाता है।

उदाहरण—(i) अतिरिक्त, आजकल, क्रियाकर्म, घनश्याम, जयदेव, रेखाचित्र, ज्ञानपीठ, प्रतिवर्ष, महत्त्वपूर्ण, राजपुरुष, लगभग, वनमानुष, समीपवर्ती इत्यादि।

—(ii) साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी परिषद्, अलंकार शास्त्र, कर्तव्य पालन, प्राकृत साहित्य, अनुदान समिति।

अब लोग बीच में योजक चिह्न (-) लगाते हैं, किन्तु इस विषय में कोई नियम स्थिर नहीं हो पाया। हमारा कहना है कि केवल बड़े-बड़े शब्दों के बीच में योजक चिह्न लगाना चाहिए, जैसे—

कर्तव्य-पालन, साहित्य-विमर्श, अनुदान-समिति।

पुनरुक्त शब्दों के बीच में भी योजक चिह्न देना चाहिए; जैसे—

बार-बार, चलते-चलते, नीचे-नीचे, बड़ा-बड़ा, अलग-अलग ।

इसी कोटि में आगे-पीछे, अलग-थलग, आमने-सामने भी हैं ।

विशेषण को संज्ञा के साथ जोड़ना नहीं चाहिए, अलग रखना चाहिए; जैसे—

पावन तीर्थ, पतित पुरुष, नया काम, शुद्ध प्रयोग, दीर्घ श्वास ।

संस्कृत में इन्हें जोड़कर लिखने की प्रथा रही है ।

अँग्रेज़ी के प्रभाव से प्रायः लोग व्यक्तिवाचक नामों के अवयवों को अलग-अलग लिख देते हैं । यह ठीक नहीं है । इनके अर्थों पर विचार कीजिए—ये भी वस्तुतः समास हैं । अतः इन्हें जोड़कर लिखा करें; जैसे, ब्रह्मानन्द, तुलसीदास, विश्वनाथप्रसाद, प्रेमचंद, रसिकलाल, रामनगर, राजगढ़ ।

हर एक, एक आध आदि शब्द अलग-अलग लिखे जाते हैं । हरेक या एकाध अशुद्ध हैं । याद रहे कि हिन्दी के शब्दों में सन्धि नहीं होती;—कम-से-कम लिखने में प्रत्येक सार्थक पद या शब्द अलग-अलग लिखा रहता है । सन्धि केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में होती है ।

भाग २
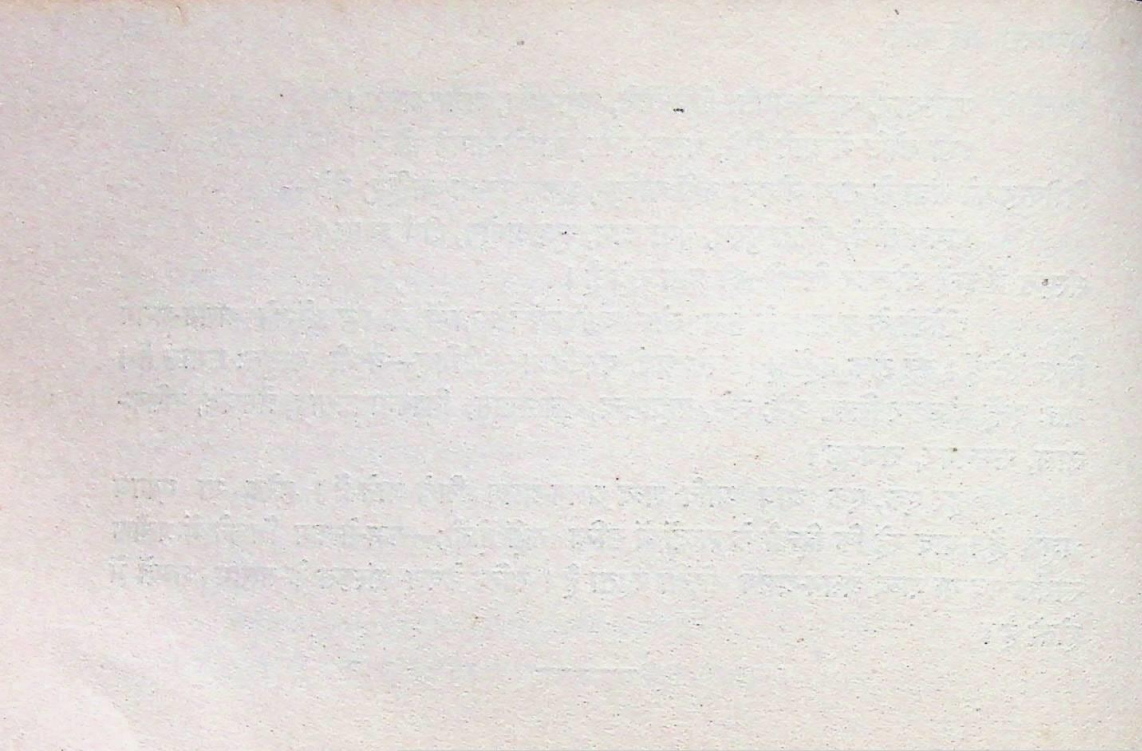
व्याकरण

व्याकरण

बड़े दुःख की बात है कि हमारे बच्चों के शिक्षाक्रम में व्याकरण का वह महत्त्व नहीं रह गया जो हमारी पीढ़ी तक था। यही कारण है कि शुद्ध भाषा-प्रयोग की चिन्ता बहुत कम रह गयी है। मातृभाषा अथवा जनभाषा की बात दूसरी है, साहित्यिक भाषा के पूरे ज्ञान के लिए व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा बी० ए० तक के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। व्याकरण को भाषा की नियमावली कहा जा सकता है। नियमों को जानने से बिखरी हुई बातें व्यवस्थित हो जाती हैं और बहुत से अशुद्ध जाने हुए अथवा न जाने हुए प्रयोगों का अच्छा ज्ञान हो जाता है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी के पास एक प्रामाणिक व्याकरण की पुस्तक अवश्य रहनी चाहिए जिसे वह १५ मिनट के लिए प्रतिदिन देखा करे। शब्द कैसे बनते हैं; संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में लिंग, वचन, विभक्ति आदि के भेद से क्या-क्या रूप बनते हैं; क्रिया के काल, भाव, वाच्य आदि क्या हैं; इत्यादि बातों की जानकारी सब के लिए आवश्यक है।

तुम्हें यह विचार करना चाहिये कि किन बातों में हिन्दी हमारी ग्रामीण

बोलियों से अथवा प्रादेशिक भाषाओं से भिन्न है।

संज्ञादि शब्दों के सुष्ठु प्रयोग के लिए उनके ठीक-ठीक अर्थों को जानना होगा। इसके लिए एक अच्छा-सा शब्द-कोश भी तुम्हारे पास होना ही चाहिये। हमने व्याकरण के अन्तर्गत जिन भूलों को वर्गीकृत किया है, उनमें 'अनावश्यक' या 'अनुपयुक्त' शब्द इस कारण से देखने में आते हैं कि विद्यार्थियों का शब्द-भण्डार सम्पन्न नहीं होता। वे शब्दों के ठीक-ठीक अर्थ नहीं जानते। यदि वे उनके अर्थों की जानकारी रखते हैं तो इस बात का ध्यान नहीं रखते कि किस प्रसंग अथवा वातावरण में इनका प्रयोग करना चाहिए।

याद रखिए कि किन्हीं दो शब्दों का एक-सा अर्थ या प्रयोग नहीं होता। अनपढ़ या कमपढ़ आदमी के लिए दया और कृपा, जल और पानी, पीटना और मारना शुद्ध और पवित्र आदि समानार्थक हो सकते हैं; किन्तु पढ़ा-लिखा आदमी इनमें भेद करता है।

हमने संज्ञा, विशेषण और क्रिया के अन्तर्गत अर्थभेद सूचियां दी हैं। इन्हें समझिए। इन सूचियों में ऐसे शब्द-युग्म जोड़िए जो तुम्हारे अध्ययन में आयें।

तीसरे वर्ग के प्रयोगों को हमने 'अनियमित' कहा है। इन भूलों से बचने के लिए तुम्हें हिन्दी की प्रकृति को समझना है—व्याकरण के नियमों के माध्यम से।

भाषा की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई है वाक्य। इसीलिए हमने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि व्याकरण की भूलें वस्तुतः वाक्य बनाने में हो जाया करती हैं। वाक्य में शब्दों का एक दूसरे से क्या सम्बन्ध होता है, इसको ध्यान में न रखने से प्रायः भूलें हुआ करती हैं।

वाक्य का सबसे बड़ा प्रयोजन है एक बात को समझा देना। यदि आपका वाक्य अधूरा है, यदि लिंग-वचन-पुरुष-काल-वाच्य-विभक्ति ठीक नहीं है, यदि शब्द-क्रम ठीक नहीं है, अथवा यदि तुम्हारा वाक्य हिन्दी व्याकरण के नियमों के अनुसार गठित नहीं हो पाया, तो पढ़ने-सुनने वाला क्या-से-क्या समझ सकता है। व्याकरण की शिक्षा वास्तव में वाक्य-गठन की शिक्षा है।

१. संज्ञा का प्रयोग

क. अनावश्यक शब्द

गुलामी की दासता (गुलामी) या (दासता)। विन्ध्याचल पर्वत पर।

पुस्तक छापने की व्यवस्था का प्रबन्ध करें। (की व्यवस्था) या (का प्रबन्ध)।

मैं सोमवार के दिन यहाँ पहुँच जाऊँगा। (सोमवार को)

'सुख' नामक शीर्षक के अन्तर्गत ('सुख' शीर्षक के अन्तर्गत)

आप अपनी प्रतिज्ञा के शब्दों पर अटल रहें। (प्रतिज्ञा पर) या (अपने शब्दों पर)

अपनी ताकत के बल पर (अपने बल पर) या (अपनी ताकत के भरोसे)

उसके मन की थाह का पता नहीं चलता। (थाह नहीं मिलती) या (मन का पता नहीं चलता)

पिता जी का शरीर गद्गद् हो गया। (पिता जी गद्गद् हो गये)

शरत्कालीन दिनों में (शरत्काल में); प्रातःकाल के समय (प्रातःकाल)

शकुन्तला जल से पौधों को सींचती थी।

ख. अनुपयुक्त शब्द

गले में पराधीनता की बेड़ियाँ पड़ी रही हैं। (पैरों में)
इस समस्या की औषध उसके पास है। (का हल)
पतिव्रता नारी को छूने का **उत्साह** कौन करेगा ! (साहस)
उसके पास **रुपये की बड़ी संख्या** है। (बहुत धनराशि) या (रुपये की बहुतायत) है
लता ने गीत की दो-चार **लड़ियाँ** गायीं। (कड़ियाँ)
रोगी के पसीने की **राशि** बढ़ती गयी। (मात्रा)
हिन्दी के प्रचार में अब भी **बड़े-बड़े संकट** हैं। (बड़ी-बड़ी बाधाएँ)
हम ने यह काम करके बड़ी **अशुद्धि** की। (भूल)
हम अपने **चित्त** की आज्ञा पर चलते हैं। (अन्तःकरण)
इस यन्त्र **की उत्पत्ति** पिछले वर्ष **हुई**। (का आविष्कार····हुआ)
उनकी रहन-सहन का **दरजा** ऊँचा है। (स्तर)
मेले में यात्रियों का **तारतम्य** नहीं टूटता था। (तार), (ताँता बँधा था)
उन्होंने अपनी शराफ़त का पूरा **तजरुबा** दिया (सबूत)

प्रेम करना तलवार की नोक पर चलना है। (धार)
मुझे सफल होने की निराशा है। (आशा नहीं है)
पिछले वर्ष यहाँ भूख की भारी घटनाएँ हुईं। (भुखमरी)
वह मेरे शब्दों पर ध्यान नहीं देता। (मेरी बात)
सभा में विरोध प्रकट किया गया। (रोष)
जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कथा चरितार्थ होती है। (कहावत)
हमारे देश के मनुष्य। (लोग)
मकान गिर जाने का सन्देह है। (डर)
नगर की सारी जनसंख्या भूखी है। (जनता)
गोलियों की बाढ़। (बौछार)
कृषि हमारी व्यवस्था की रीढ़ है। (का आधार)
विष्णु पद में चन्द्रमा को देखो। (आकाश) [अप्रसिद्ध शब्द न हो]।
उसका मूड़ काट दिया। (सिर) [ग्राम्य शब्द न हो]।

ग. अपूर्ण पर्याय

हिन्दी में दो तरह के पर्याय हैं—पूर्ण और अपूर्ण। पूर्ण पर्याय उन्हें कहते हैं जिनका अर्थ और प्रयोग एक ही है और जिन्हें हम एक दूसरे से बदल सकते हैं— जैसे, माता और माँ, प्रकाश और रोशनी, पीड़ा और दर्द। इनमें भी ऐसे अवसर और प्रसंग आ सकते हैं कि एक का प्रयोग तो ठीक होगा, उसकी जगह दूसरे का प्रयोग अनुपयुक्त जान पड़ेगा; जैसे 'आधुनिक युग की दृष्टि से' (संस्कृत शब्दों के वातावरण) की जगह 'आधुनिक युग की नजर से' ठीक नहीं होगा। अपूर्ण पर्याय वे होते हैं जिनके अर्थ और प्रयोग में अन्तर होता है, किन्तु कमसमझ लोग पूरी शिक्षा के अभाव में इन्हें पूर्ण पर्याय मान बैठते हैं। सावधानी से भाषा का प्रयोग करने वालों के लिए इनका अन्तर जानना आवश्यक होगा—

अच्छाई—उसमें यह भी एक अच्छाई थी। **भलाई**—मेरे प्रति कौन-सी भलाई की है?

अधिवेशन—आठवाँ वार्षिक अधिवेशन है। **बैठक**—अधिवेशन की आज दूसरी बैठक थी।

अध्यक्ष—इस विभाग के अध्यक्ष ।
सभापति—इस अधिवेशन के सभापति ।
प्रधान—प्रमुख कर्मचारी ।

अध्ययन—ध्यान देकर पढ़ना ।
अनुशीलन—गंभीर और सूक्ष्म अध्ययन ।

अनुभव—इन्द्रियों के माध्यम से ।
अनुभूति—अनुभव की तीव्रता से ।

अनुराग—वस्तुओं के प्रति ।
प्रेम—छोटे-बड़े सब के प्रति ।
आसक्ति—मोह, चसका बराबर वालों के प्रति ।
स्नेह—छोटों के प्रति ।

अपमान—छोटे या बराबर वाले अपमान करते हैं ।
तिरस्कार—वस्तु या व्यक्ति के आदर की उपेक्षा ।

अपराध—सामाजिक नियमों का उल्लंघन ।
पाप—नैतिकता का उल्लंघन ।

अवस्था—पिताजी की अवस्था ५५ वर्ष की है ।
आयु—ज्योतिषी ने बताया कि तुम्हारी आयु ८० वर्ष होगी ।

अभिमान—अपने को बड़ा और दूसरों को छोटा समझना ।
अहंकार—अपने को उचित से अधिक समझना ।

आकार—इसका आकार गोल है।
रूप—उसका रूप सुन्दर है।

आग्रह—थोड़ी-थोड़ी ज़िद्द।
अनुरोध—प्रार्थनायुक्त आग्रह।

आतंक—अपने से बड़े का।
आशंका—भावी अमंगल की।
भय—मन में।

आधि—मानसिक कष्ट।
व्याधि—शारीरिक कष्ट।

आलोचना—किसी पक्ष का विवेचन।
समालोचना—संतुलित सम्पूर्ण आलोचना।

आशा—अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए।
विश्वास—गुण, सहायता के रहने का भरोसा।

आनन्द—शारीरिक और आत्मिक, व्यापक।
हर्ष—मानसिक, क्षणिक, आनन्द से कुछ कम।

इच्छा—साधारण वस्तु की।
कामना—किसी विषय की प्राप्ति की।
संकल्प—करने का दृढ़ निश्चय।

ईर्ष्या—दूसरे की उन्नति देखकर जलना।
द्वेष—कारणवश वैरभाव से ईर्ष्या।
स्पर्धा—उन्नति में दूसरों से बढ़ने की अभिलाषा।

उदाहरण—आपका आचरण दूसरों के लिए उदाहरण हो सकता है।

दृष्टान्त—पौराणिक कथाओं से दृष्टान्त देकर समझाओ।

उद्देश्य—जिस सिद्धि की ओर मन प्रवृत हो।

लक्ष्य—जिस बात पर दृष्टि रखकर कार्य किया जाय। निशाना।

ध्येय—जिस सिद्धान्त का ध्यान रखकर काम किया जाय।

उद्यम—क्रियाशील रहना।

उद्योग—उत्साहपूर्ण प्रयत्न।

प्रयास—साधारण प्रयत्न।

उन्नति—ऊपर उठना, विकास करना।

प्रगति—आगे बढ़ना, पिछड़ेपन को दूर करना।

उपक्रमणिका—आरम्भ में विषय-सूची।

अनुक्रमणिका—अन्त में वर्णानुक्रम सूची।

उपज—खेत या दिमाग़ की (पैदावार)।

उत्पत्ति—जन्म, आरम्भ।

उपस्थिति—आदमियों की।

विद्यमानता—वस्तुओं की।

उपहास—हमारे लेख का उपहास किया।

व्यंग्य—'बड़ा विद्वान् है' कहकर व्यंग्य किया।

उपहार—प्रायः बराबर वालों को, प्रसन्नता से।

भेंट—प्रायः बड़ों को, नम्रता से।

ओज—मन और शरीर की आन्तरिक शक्ति।

पौरुष—ओज से प्राप्त कार्यक्षमता।

कंगाल—भुक्खड़ ।
दीन—निर्धनता के कारण स्वाभिमान-शून्य ।

करुणा—किसी के दुःख से व्याकुलता ।
दया—किसी के दुःख को कम करने के लिए तरस खाना ।
कृपा—हृदय का उदार भाव, जैसे मित्र की कृपा ।

कर्तव्य—उचित एवं आवश्यक कार्य ।
कार्य—साधारण काम ।

कविता—मेरी कविता का शीर्षक 'चाँदनी' है ।
काव्य—तुलसी का काव्य भक्ति-प्रधान है ।

कष्ट—वहाँ चले जाने का कष्ट करें ।
दुःख—उसको तड़पते देख मुझे दुःख होता था ।
क्लेश—मानसिक अप्रिय भाव ।
खेद—छोटी-मोटी भूल होने पर खेद होता था ।

काम—वे इस समय किसी काम में लगे हैं ।
पेशा—मछलियाँ पकड़ना उसका पेशा है ।

कारण—जिससे कार्य हो ।
हेतु—जिस उद्देश्य से कार्य किया जाय ।

काल—उनके जीवन-काल में यह न हो सका ।
युग—यह विज्ञान का युग है ।
समय—इस समय चार बजे हैं ।

किराया—मकान का किराया ३०) है ।
भाड़ा—यहाँ से वहाँ तक रेल या बस का भाड़ा इतना है ।

खटपट—उनकी आपस में खटपट हो गयी। **गड़बड़**—इस काम में कोई गड़बड़ दिखाई देती है।

खाल—साधु ने चीते की खाल बिछा रखी थी। **चमड़ा**—खाल को साफ़ करके चमड़ा बनाते हैं।

खेल—हाकी भी खेल है, और सिनेमा भी खेल है। **नाटक**—रंगशाला में नाटक खेला जाता है।

खोज—कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की। **आविष्कार**—रेडियो का आविष्कार किसने किया ?

गर्व—रूप-यौवन या धन-विद्या के कारण अभिमान। **गौरव**—अपनी महत्ता का ठीक मान।
दम्भ—अयोग्य व्यक्ति का बाहरी दिखावा।

गीत—गाने योग्य कविता को गीत कहते हैं। **संगीत**—गाना बजाना संगीत कहलाता है।

चिन्ता—व्यर्थ चिन्ता करने से आदमी दुःखी होता है। **परवाह**—वह धनी है, पैसे की क्या परवाह !

चिह्न—इस शब्द के ऊपर एक चिह्न लगा दो। **लक्षण**—सरलता साधु का प्रमुख लक्षण है।

चेष्टा—अपनी शक्ति के अनुसार कुछ करना। प्रयत्न—सफलता के लिए प्रयत्न करना पड़ता है।

छाया—पेड़ की छाया में। परछाईं—आदमी की परछाईं।

जाँच—कल जो मार-पीट हुई, उसकी जाँच एक जज करेंगे। परीक्षा—विद्यार्थियों को वर्ष के अन्त में परीक्षा देनी पड़ती है।

ज्ञान—उन्हें व्याकरण का अच्छा ज्ञान है। बोध—उन्हें यह बोध हो गया कि संसार मिथ्या है।

टीका—अर्थविश्लेषण सहित व्याख्या। भाष्य—विवाद-विवेचन सहित व्याख्या।

ठण्ड—ठण्ड के मारे उँगलियाँ सुन्न हैं। ठण्डक—रात को थोड़ी ठण्डक हो जाती है।

ठोकर—ठोकर पैर से लगाई जाती है। धक्का—हाथ और कंधे से धकेलना।

टक्कर—गाड़ी की टक्कर से लड़का गिर गया।

तंद्रा—शिथिलता के कारण हलकी झपकी। निद्रा—पूरी तरह सो जाना।

तट—नदी या समुद्र का किनारा। किनारा—जल या थल का पक्ष, या वस्तु का सिरा।

तर्क—तर्क द्वारा हम सिद्धान्त स्थिर करते हैं। युक्ति—युक्ति द्वारा हम कुछ कर लेते हैं।

तालिका—घर के सामान की तालिका बना लो। **सूची**—मतदाताओं की सूची बन गयी।

तुलना—राक्षस की तुलना देवता से नहीं की जा सकती। **मिलान**—दोनों पोथियों का मिलान करके देख लो।

तृप्ति—आकांक्षा का अभाव। **संतोष**—अपनी वस्तु को पर्याप्त मान लेना।

त्रुटि—काम में थोड़ी त्रुटि रह गयी। **दोष**—अभियुक्त ने कहा कि मेरा कोई दोष नहीं है।
[देखिए ऊपर 'अपराध' भी।]

थियेटर—थियेटर में बैठकर नाटक देखा। (बना हुआ स्थान) **सिनेमा**—सिनेमा का पहला शो देखने गये हैं।

द्वंद्व—दो व्यक्तियों या भावों में द्वंद्व हो जाता है। **संघर्ष**—उसका सारा जीवन संघर्षों में बीत गया।

धारणा—मेरी धारणा बन गयी है कि वह कुछ न कर पायेगा। **विचार**—मेरा विचार बदल सकता है।

नमस्कार—बराबर वालों और बड़ों को। **प्रणाम**—पूज्य और बड़े लोगों को।

नमूना—नमूने की एक प्रति मँगा लो। **बानगी**—मेरी कविताओं की बानगी देखें।

नाप—कपड़े की नाप ।
माप—दूध का माप ।
निवेदन—विनयपूर्वक कुछ कहना ।
प्रार्थना—विनय के साथ माँगना ।
नेता—अमुक दल के नेता ।
नायक—सेना के नायक ।
पदार्थ—दूध, फल, शहद आदि पदार्थ हैं ।
वस्तु—कपड़े, रेडियो, कमल आदि वस्तुएँ हैं ।
परंपरा—हम अनेक परम्पराओं को छोड़ रहे हैं ।
मर्यादा—मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए ।
परामर्श—साधारण (चाहे एक की) सलाह ।
मन्त्रणा—व्यक्तियों द्वारा निर्णीत (गुप्त) सलाह ।
पारितोषिक—प्रतियोगिता में विजयी होने पर ।
पुरस्कार—किसी कार्य या सेवा के लिए ।
प्रलाप—कष्ट की अटपटे शब्दों में अभिव्यक्ति ।
विलाप—शोक का प्रकटीकरण ।
बल—आपके कथन से मुझे बल मिला ।
शक्ति—रोग के कारण शक्ति क्षीण हो गयी है ।

बाधा—आप मेरे मार्ग में बाधा खड़ी न करें। **अवरोध**—साहित्य की प्रगति में अवरोध आ गया है।

भाव—मेरे मन में कोई वैर-भाव नहीं था। **विचार**—इस विषय में आप के विचार जानना चाहता हूँ।

मन्त्री—मिनिस्टर **सचिव**—सेक्रेटरी

महिला—यह स्थान महिलाओं के लिए है। **पत्नी**—मेरी पत्नी पढ़ी-लिखी है।

योग्यता—काम करने की गुणयुक्त विशेषता। **क्षमता**—काम कर सकने का बल।

लज्जा—बुरे काम को छिपाने की भावना। **संकोच**—कोई काम करने में हिचकना।

ग्लानि—कुकर्म पर मन में दुःख और पछतावा।

विकास—समाज का विकास। **विस्तार**—राज्य का विस्तार।

विद्या—तुम्हें कोई विद्या आती है। **शिक्षा**—व्याकरण की शिक्षा।

वीरता—हृदय का नैसर्गिक गुण। **साहस**—भय पर विजय पाने का प्रयत्न।

वैर—मन में पाली हुई उग्र शत्रुता। **शत्रुता**—दुष्टतापूर्ण हानि पहुँचाने की भावना।

शंका—किसी निश्चय के बारे में शंका हो सकती है।

सन्देह—(अनिश्चय) उस पर चोर होने का सन्देह है।

भ्रम—असावधानी से, जैसे रस्सी को साँप समझने का भ्रम

आशंका—अनिष्ट हो जाने की सम्भावना।

शील—शील के साथ विनम्रता और शिष्टता का भाव रहता है।

स्वभाव—किसी का स्वभाव अच्छा भी हो सकता है बुरा भी।

सभ्यता—रहन-सहन या व्यवहार से सभ्यता का परिचय मिलता है।

संस्कृति—हमारे रीति-रिवाजों में संस्कृति झलकती है।

समाचार—आज का समाचार सुन लो।

सूचना—मुझे इस बैठक की सूचना नहीं थी।

संदेश—आपके पिता जी ने यह संदेश भेजा है।

समीर—शीतल और धीरे-धीरे चलता है।

पवन—कभी धीरे कभी तेज़ चलता है।

सम्राट्—राजाओं का राजा।

राजा—एक साधारण भूपति।

साथ—यात्रा में उनका साथ हो गया।

संगति—बुरों की संगति में बुरे हो जाओगे।

साधन—रेल, बस, मोटर आदि यात्रा के साधन हैं।

माध्यम—भाषा के माध्यम से विचार प्रकट किये जाते हैं।

सेवा—गुरुजनों की।

शुश्रूषा—रोगी आदि की टहल।

हँसी—(विनोदपूर्ण) हँसी-हँसी में कुछ कह दिया।

मज़ाक—उपहास (कुछ विद्वेषपूर्ण)।

घ. अनियमित

संज्ञा नहीं होनी चाहिये, विशेषण होना चाहिये—

पुस्तक **समर्पण** की। (समर्पित)
सन्तोष चित्त से। (सन्तुष्ट चित्त से)
मैंने ऐसा करना पहले से **निश्चय** कर रखा था। (निश्चत)
निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता। (निश्चित)
यह शब्द **लोप** हो गया। (लुप्त)
फ़सल **नाश** हो गयी। (नष्ट)

[यदि संज्ञा रहेगी, तो वाक्य इस प्रकार होंगे—

मैंने पहले से ऐसा करने का निश्चय कर रखा था।

इस शब्द का लोप हो गया।]

कोई भी राष्ट्र तभी सुदृढ़ और मतैक्य होगा जब लोगों में भावना की एकता होगी। (एकमत)

मुझे ईश्वर पर आत्म-विश्वास है। (विश्वास)

अपनत्व, अत्म-स्वाभिमान, इन्तज़ारी, झंडाभिवादन, महानता, सुघड़ता, हैरानगी, आदि शब्द सुघड़ नहीं हैं। इनके स्थान पर अपनापन (आत्मीयता), आत्माभिमान या स्वाभिमान, इन्तज़ार, ध्वजाभिवादन, महत्ता, सुघड़पन, हैरानी ठीक होंगे।

अभ्यास ११

१. निम्नलिखित शब्दों में अर्थभेद बताओ—

अनुकम्पा, अनुग्रह, कृपा, करुणा, दया।

अभिवादन, प्रणाम, नमस्कार।

कष्ट, दुःख, क्लेश, खेद, व्यथा, वेदना, यातना, यन्त्रणा ।

काम, कार्य, कर्तव्य, पेशा ।

तट, तीर, पुलिन, किनारा ।

भक्ति, श्रद्धा, उपासना, साधना ।

कंगाल, दरिद्र, निर्धन, दीन ।

तृप्ति, सन्तोष, शान्ति, आनन्द, सुख ।

२. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) वह सन्ध्याकाल के समय आया था ।

(ख) हमने यह काम करके बड़ी अशुद्धि की ।

(ग) बनिये का गणित चुकता कर दो ।

(घ) कल चौक के पास रक्त हो गया ।

(ङ) मकान गिर जाने का आतंक है ।

(च) वह अपनी ताकत के बल पर खड़ा है ।

३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

(क) मनुष्य को जीवन........के लिए अन्न की परम आवश्यकता है ।

(ख) दिल्ली भारत की........है ।

(ग) नगर की सारी........में रोष था ।

(घ) मैं........करता हूँ कि आप समय पर पहुँच जायँगे ।

(ङ) यह फूलों का........पड़ा है ।

२. विशेषण का प्रयोग

क. अनावश्यक शब्द या रूप

आराम दायक, सुखद; (आराम देने वाला)
वह सबसे उत्तमतम है।—वह उत्तम है।
तुम सबसे सुन्दरतम हो। (सबसे सुन्दर) या (सुन्दरतम)।
ऐसा साहित्य उत्कृष्टतम कहलायगा। (उत्कृष्ट)
सब मन्त्रियों में श्री......बहुत श्रेठ हैं।
वहाँ कोई एक जगह नहीं है।
वे एक अच्छे डाक्टर हैं। बुरी कुदृष्टि। अच्छी सद्भावना।
घातक विष, गुप्त रहस्य, गरम आग, सुन्दर शोभा।
उसके साथ उचित न्याय किया जायगा।

इसी तरह सशंकित और सभीत में स-; सुकोमल, सुसुन्दर, सुमधुर में सु-; और सच्चरित्रवान् में सत्-; एवं निखालिस में नि- अनावश्यक है।

हमारा वाला मकान या अच्छा वाला घर।

किसी और दूसरे आदमी को भेज दो। (किसी और) या (किसी दूसरे)

सारे विश्व भर में; पूरी शक्ति भर द्वन्द्व किया।

इसमें समस्त प्राणीमात्र का कल्याण है।

पुरुषों ने अपना साहस न छोड़ा।

प्रायः सभी लोग ऐसा मानते हैं। (प्रायः) या (सभी)

ख. अनुपयुक्त

वे बड़े अच्छे अध्यापक हैं। (बहुत)

उसे भारी प्यास लगी है। (बहुत)

मुझे बेशुमार कष्ट उठाना पड़ा। (बहुत) या (अधिक)

वहाँ भारी भर कम भीड़ जमा थी। (बहुत) या (बहुत भारी)

अधिकांश लोगों का यही विचार है। (अधिकतर)

गोपाल तो निपट खिलाड़ी है। (निपट अनाड़ी) या (पूरा खिलाड़ी)

जीवन और साहित्य का घोर सम्बन्ध है। (घनिष्ठ)

यह एक **गहरी** समस्या है। (गम्भीर)
दूध का अभाव (या यह रोग) **चिन्तनीय** है। (चिन्ताजनक)
वह अपना **भावी** जीवन यहीं बितायेंगे। (शेष)
वह **आरोग्य** हो गया। (नीरोग)
एक **प्रलयी** हुंकार हुआ। (प्रलयंकर)
किसी **आगामी** घटना की कल्पना मेरे मन में न थी। (भावी)
सर्वथा सम्भव है। (सम्भव है) या (सर्वथा असम्भव है)
इसका **कोई** अर्थ नहीं है। (कुछ भी)
पद्य के **चौथे** भाग को चरण कहते हैं। (चौथाई)
बड़े २ लोग (बड़े-बड़े); **चार** २ रुपये (चार-चार रुपये)
उसके **सप्त** लड़कियाँ हैं (सात—तत्सम संख्या केवल समास में सप्तर्षि)
७ से १६ तक (सात से सोलह तक); एक सौ पाँचवाँ (१०५वाँ)
पचीस को ५ से भाग दो। (२५ को ५ से……)
३ हज़ार ८५२ आदमी। (३८५२) या (३ हज़ार ८ सौ ५२ आदमी)

जल्दी २ लिखो (जल्दी-जल्दी लिखो)
दोनो, चारो, छहो । (दोनों, चारों, छहों)
उसकी तबियत नाशाद है । (नासाज़)
ख़ूबसूरत महिला । (सुन्दर महिला) या (ख़ूबसूरत औरत)
शरीफ़ पुरुष । (शरीफ़ आदमी); महा कंजूस (बहुत)
ऊँचे कोटि का प्राणी । (उच्च कोटि का)
अत्यन्त सख़्त (अत्यन्त कठोर) या (बहुत सख़्त)
हर वस्तु (प्रत्येक वस्तु); अन्य कुत्ता (दूसरा कुत्ता)
हिस्टारिक महत्त्व (ऐतिहासिक महत्त्व)
इस वीरान ज़िन्दगी में । (इस नीरस जीवन में)
दसवर्षीय बालक (दशवर्षीय बालक) या (दस वर्ष का बालक)
दोदिवसीय कार्यक्रमं (द्विदिवसीय कार्यक्रम) या (दो दिन का कार्यक्रम)
अगर मैं गलत नहीं हूँ । (अगर मैं गलती नहीं करता) ।
मोहन योग्य नहीं है (मोहन अयोग्य है)

ग. अपूर्ण पर्याय

अद्भुत—परमाणु बम अद्भुत वस्तु है।
विचित्र—उसका रूप विचित्र है।
अद्वितीय—जिसके जोड़ का कोई न हो।
अनुपम—जिसकी उपमा न हो।
अधिक—आवश्यकता से ज्यादा।
प्रचुर, काफ़ी—न कम न अधिक।
अनभिज्ञ—लड़का छल-कपट से अनभिज्ञ था!
मूर्ख—मूर्ख को समझना व्यर्थ है।
अपरिचित—वह आदमी मेरे लिए अपरिचित था।
अनिवार्य—मृत्यु अनिवार्य है।
आवश्यक—स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन आवश्यक है।
अनुकूल—परिस्थिति या जलवायु अनुकूल हो सकती है।
अनुरूप—(सदृश) एक वस्तु दूसरी वस्तु के अनुरूप होगी।
अनेक—एक से अधिक (संख्या)।
बहुत—संख्या और परिमाण में; क्रिया-विशेषण भी।
उत्तम—वस्तुएँ, व्यापार आदि।
श्रेष्ठ—व्यक्ति और जीवन।
ऊँचा—यह मकान बहुत ऊँचा है।
लम्बा—वह आदमी लम्बा नहीं था।
ऊपरी—ऊपरी वेशभूषा से गुण कैसे जाने जा सकते हैं?
बाहरी—इस बाग में बाहरी आदमी नहीं जा सकते।

कठिन—यह विषय अत्यन्त कठिन है।

कठोर—वह आदमी बहुत कठोर है।

गहरा—गहरा पानी; गहरी साँस भरना।

घना—घना जंगल, घने बाल।

अलौकिक—संसार में दुर्लभ।

असाधारण—जनसाधारण की शक्ति से परे।

चिन्तनीय—महँगाई के कारण हमारी आर्थिक स्थिति चिन्तनीय है।

विचारणीय—आज का विचारणीय विषय क्या है?

तत्पर—सेना लड़ाई के लिए तत्पर थी।

प्रस्तुत—मैं एक योजना प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

वर्तमान—प्रचलित।

उपस्थित—बैठक में चार सदस्य उपस्थित थे।

त्रस्त—भय से व्याकुल।

भयभीत—थोड़े काल के लिए डरा हुआ।

निपुण—अच्छा जानकार।

कुशल—कार्यविशेष में चतुर, प्रवीण।

निरर्थक—निरर्थक शब्दों का प्रयोग मत करो।

व्यर्थ—हमारा सब प्रयत्न व्यर्थ था।

बेकार—बेकार आदमी, बेकार घूमना।

पर्याप्त—जितना चाहिये था उतना, काफ़ी।

बहुत—संख्या और परिमाण में अधिक।

पुरातन—जिसका चलन अब न हो, पुराकालीन।

सनातन—सदा से चला आ रहा (धर्म आदि)।

पुराना—बहुत दिनों का (अन्न, सिक्का)। **प्राचीन**—कई शताब्दियों का इतिहास, युग) ।
प्रतिकूल—यह खाना हमारी प्रकृति के प्रतिकूल था । (विपरीत) **विरुद्ध**—मुझे उनके विरुद्ध सब कुछ कहना पड़ा ।
प्रधान—भारत के प्रधान मंत्री; प्रधान अधिकारी । **मुख्य**—प्रदेशों के मुख्य मंत्री, मुख्य बात यह है ।
मान्य—आपका यह सिद्धान्त मान्य है । **स्वीकृत**—आपकी प्रार्थना स्वीकृत हुई ।
मोटा—आदमी या कपड़ा मोटा हो सकता है । **गाढ़ा**—दूध या रंग गाढ़ा है ।
सतर्क—उसने सतर्क होकर उत्तर दिया । **सावधान**—सड़क पर सावधान होकर (ध्यान देकर) चलिये ।
समस्त—समस्त देश, समस्त राशि । **सारे**—सारे आदमी, सारे काग़ज़ ।
साधारण—इस बात को साधारण आदमी नहीं समझ सकता । **सामान्य**—भूख, प्यास आदि प्राणियों के सामान्य धर्म हैं ।
स्थायी—उसे स्थायी सदस्य बनाया गया । **दृढ़**—अपने वचन पर दृढ़ रहो ।
हैरान—यह सुन कर मैं तो हैरान रह गया । **परेशान**—वह कई दिन से परेशान है ।

घ. अनियमित

(१) एकवचन के साथ विशेषण को दोहराना नहीं चाहिये—

प्रत्येक को **दो-दो** रुपये दीजिए। (दो)

दो-दो मील पर **एक-एक** कुआँ था। (एक)

किसी ने **अपना-अपना** पाठ याद नहीं किया। (अपना)

सब लोग **अपनी** राय दें। (अपनी-अपनी)

(२) रूप-निर्माण की अशुद्धि—

अमानुषी (अमानुष) **गठित** (गठा हुआ) **व्यापित** (व्याप्त)
अचम्भित (चकित) **छपित** (मुद्रित) **विश्वसित** (विश्वस्त)
आर्कषित (आकृष्ट) **जुदी** (जुदा) **शक्तिशील** (शक्तिशाली)
अनुवादित (अनूदित) **त्रसित** (त्रस्त) **संयमित** (संयत)
आवश्यकीय (आवश्यक) **दर्दीला** (दर्दनाक) **हतोत्साहित** (हतोत्साह)।
उम्दी चीज़ (उम्दा चीज़) **मस्तीला** (मस्त)
क्रोधित (क्रुद्ध) **लाचारी हालत** (लाचार हालत)

(३) अर्थ-दूषित प्रयोग—

बहुत-**सा** लोग; बहुत-**सारे** लोग। (बहुत-से लोग)

तुम मुझे अपना छोटा-**सा** भाई समझो। (छोटा भाई)

हमारा अध्यापक बहुत **श्रेष्ठ** आदमी है। (अच्छा, बढ़िया)

सच गवाही (सच्ची गवाही)। झूठ बात (झूठी बात)

अच्छा **वाला** आदमी (अच्छा आदमी) [विशेषण के साथ 'वाला' नहीं लगाना चाहिये।] तीसरे **वाला**, मेरे **वाला**।

निम्न पुस्तक भेज दें (निम्नलिखित)।

(४) क्रम—

सब ये काम कर लो। (ये सब काम)

अच्छा ऐसा लड़का कभी नहीं देखा था। (ऐसा अच्छा लड़का)

गहरी एक नदी पड़ती थी। (एक गहरी नदी)

इतने में हल्की सी हवा का झोंका आया। (हवा का हल्का-सा झोंका)

[देखिए 'वाक्य' के अन्तर्गत 'शब्दक्रम' भी।]

(५) क्रमसंख्या—

२तीय (द्वितीय) ३तीय (तृतीय) ३रा (तीसरा)

४था (चौथा)—[५वाँ, १८वीं आदि शुद्ध हैं।]

एक सौ पाँचवाँ (एक-सौ-पाँचवाँ वा १०५वाँ); छठवाँ (छठा)।

अभ्यास १२

१. निम्नलिखित शब्दों में अर्थभेद बताओ—

प्रधान—मुख्य, अनुकूल—अनुरूप, पर्याप्त—अधिक, गहरा—घना, विचित्र—विलक्षण, उपस्थित—प्रस्तुत, प्राचीन—पुराना, ऊँचा—लम्बा।

२. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) वहाँ बहुत-सी भीड़ थी।

(ख) वह लंबावाला आदमी ठीक है।

(ग) वह बड़ा शक्तिवान है।

(घ) वह निपट बहादुर आदमी है।

(ङ) वह सब विद्यार्थियों में बहुत योग्यतम है ।

३. रिक्त स्थानों में उपयुक्त विशेषण लगाओ—

(क)....दुकान और....पकवान ।

(ख) रोग का....कारण कोई....वैद्य ही जान सकता है ।

(ग) आजकल....नौकर बेकार हैं ।

(घ)....आदमी का मान....संसार में होता है ।

(ङ)....दिन की चाँदनी, फिर....रात ।

(च) राम श्याम की अपेक्षा....है ।

(छ) प्रत्येक विद्यार्थी को....समाचार-पत्र पढ़ना चाहिये ।

(ज) कल से हमारी....परीक्षा आरम्भ होगी ।

३. सर्वनाम का प्रयोग

क. अनावश्यक

आप परिषद् के अगले अधिवेशन के, जो दिसम्बर में होने वाला है, **उसके** सभापति निर्वाचित हुए हैं।

यह मगध देश की भाषा होने के कारण इसका नाम मागधी पड़ गया।

उनकी **अपनी** प्रखर बुद्धि हर काम में प्रकट होती है।

मेरी लिखी हुई कहानी **जिस** के आधार पर उसने अपनी कहानी की रचना कर ली है।

डाकुओं का सरदार **वह** अलीबाबा था।

सोहन ने **उसे** दौड़कर मोहन को गिरा दिया।

वह आदमी जिसे तुमने कल देखा था **वह** आज मर गया।

ख. आवश्यक

लीजिए प्याला, ‸ भर दें। (इसे)

वाक्य और वाक्य के भेद। (उस)
राम गया और ‸ कहा। (उसने)
कर्मचारियों में असंतोष था और ‸ इसका विरोध किया। (उन्होंने)

ग. अनुपयुक्त

दूध में कौन पड़ गया ? (क्या)
मैं सवेरे आपके यहाँ गया था पर तुम घर पर नहीं थे, इसलिए हम लौट आए।
(आप घर पर नहीं थे, इसलिए मैं लौट आया)
आप तो आ गये, पर तुम्हारा सामान नहीं आया। (आपका)
वह लड़का असफल रहा क्योंकि इसने परिश्रम नहीं किया था। (उसने)
जागे वह पावे। (जागे सो पावे)
वह निज में वहाँ जाना नहीं चाहता। (स्वयं)

घ. अनियमित

तुम तुम्हारे घर चले जाओ। (अपने)
उन्हों से बातें करने लगे। (उनसे)

तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता। (तुमसे)
यह मेरा मित्र है, यह मेरे साथ रहता है। (जो)
यह लोग क्या कहते हैं ? (ये)
यह भले आदमी हैं। (ये)
वह क्या जानें ! (वे); या (वह क्या जाने)
उन्हें समझ में आ जायेगा। (उनकी)
तेरे को (तुझे, तुझको)
उन्हों के पिता (उनके)
'गढ़ कुँडार' अच्छा उपन्यास है। वह ···(यह)
मैं और मेरे मित्रों का इस मेले में जाना हुआ। (मेरा)
यह वही आदमी है उसकी टोपी तुमने छीन ली थी। (जिसकी)
अकबर और प्रताप—ये मुसलमान थे, वे हिन्दू। (वे मुसलमान थे, ये हिन्दू)
उन्हें सोच लेना चाहिए कि कौन सी माँग जो वे रख रहे हैं वह उचित है या नहीं।
(कि जो माँग वे रख रहे हैं उचित...)

अभ्यास १३

नीचे लिखे रिक्त स्थानों में सर्वनाम भरिए—

(क) रामने....भाई से कहा कि....आज नहीं आऊँगा ।

(ख) जब... वहाँ जायँगे तो....का सारा भेद खुल जायगा ।

(ग) यह पुस्तक....दे दो, मैं....सँभालकर रखूँगा ।

(घ)....ठीक कह रहे थे कि....की लाठी....की भैंस ।

(ङ) जल्दी जाओ और....बुला लाओ ।

(च) हमें....न बुलाए ।

(छ)....जैसा चाहता है वैसा पाता है ।

४. क्रिया का प्रयोग

क. अनावश्यक क्रियापद

वह विलाप करके रोने लगा। (विलाप करने लगा) या (रोने लगा)
घर में कैसा वातावरण उपस्थित है। (वातावरण है)
यह संभव हो सकता है। (संभव है)
इसको दंगा कहकर पुकारना अनुचित है। (कहना)
मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता हूँ। (नहीं रह सकता)
इस बात का स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता है। (के स्पष्टीकरण की)

ख. आवश्यक

वह सीना, पिरोना, संगीत ‸ और हिन्दी पढ़ती है। (और संगीत सीखती....)
जंगली फल ‸ और झरनों का पानी पीकर हम आगे बढ़े। (खाकर)
मैंने उसका गाना ‸ और रूप देखा। (सुना)
उसका रूप और व्यवहार ‸ और बातें सुनकर मन मुग्ध हो गया। (देखकर)
इस समय चाय ‸ या बिस्कुट नहीं खा सकूंगा। (न चाय पी सकूंगा न बिस्कुट खा....)

ग. अनुपयुक्त क्रियापद

पगड़ी ओढ़ कर जाओ। (बाँधकर) या (लगाकर)

सारा दिन कम्बल पहने रहा। (ओढ़े)

वह कुरता डालकर गया है। (पहनकर)

चायदानी मेज़ पर डाल दो। (रख)

कालेज बंद होने की संभावना की जा रही है। (संभावना है)

इस पत्र में कहा है कि। (लिखा)

उसने कहा तुम क्या कर रहे हो। (पूछा)

उसने भाषण बोला (किया) या (दिया)

साहब बोलता है कि....। (कहते हैं); साहब ने बोला। (कहा) या (साहब बोला)

मैंने नौकर से माँगा कि पानी लाओ। (पानी माँगा) या (कहा कि....)

मैं खेलना माँगता हूँ। (चाहता)

मैंने मास्टर जी से बताया कि मुझे क्षमा कर दें। (निवेदन किया)

अपना हस्ताक्षर बना दें या लगा दें। (कर दें)

माला गूँध ली। (गूँथ) [आटा गूँधा जाता है।]
वह अपराधी दण्ड देने योग्य है। (पाने)
श्री मैथिलीशरण गुप्त को अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रदान किया गया। (भेंट)
मैं परिषद् के कार्यों में सहयोग प्रदान करने में असमर्थ हूँ। (देने)
मैं दर्शन देने आया था। (करने)
प्रयाग विश्वविद्यालय ने नेहरू जी को उपाधि वितरित की। (दी)
ज़रा अपनी पेन्सिल बताओ या दिखाओ। (दो)
वह निद्रा ले रहा है। (सो); व्यायाम लेना चाहिये। (करना)
मैंने उनकी बहुत प्रतीक्षा देखी। (की)
छोटी उम्र शिक्षा लेने के लिए है। (पाने)
उसे वहाँ नौकरी पा गई। (मिल)
यह लड़का मोटर हाँक सकता है। (चला)
आक्रमणकारी दस-बारह पशु उठा ले गये। (हाँक)
उसने मुझे गालियाँ निकालीं। (दीं)

उपस्थित लोगों ने संकल्प लिया। (किया)
हमें यह सावधानी लेनी होगी। (बरतनी)
वहाँ घना अँधेरा घिरा था। (छाया था)
मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। (मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ)
उसने अपने पाँव से जूता निकाला। (उतारा)
मैंने उसकी नाक पर मुक्का दिया। (मारा) या (दे मारा)
इसका मूल्य नापा या तौला नहीं जा सकता। (आँका)
आज भी दासता की बेड़ी चढ़ी या लगी हुई है। (पड़ी)
चीत्कार गूँज उठा। (हुआ)
हिन्दी की ऐसी खिचड़ी बन जायेगी जो किसी की समझ में न आयेगी।
(के काम की न होगी)
नदी पार हो गई। (कर ली)
युद्ध लड़ा जा रहा है। (लड़ाई लड़ी जा रही है, युद्ध हो रहा है)
हम अपनी माँगें माँगते हैं। (प्रस्तुत करते हैं)
वे जब दिल्ली गये तो अपना सारा परिवार साथ लेते आये। (गये)

घ. संयुक्त क्रिया

कृदन्त या संज्ञा + क्रिया—कोलम्वस ने अमेरिका का **आविष्कार किया**। (की खोज की)

ब्राह्मण वेद अध्ययन करता है। (वेद का अध्ययन)

हमारे घर में डालडा प्रयोग नहीं किया जाता। (डालडा का प्रयोग)

यह पुस्तक मेरे गुरु को **समर्पण** की गई है। (समर्पित)

परमाणु बम से लाखों आदमी **नाश** हो जाते हैं। (नष्ट)

अमुक अध्यापक को **हस्तान्तरित** किया जाय (स्थानान्तरित)

मैं यह **स्वीकृत** करता हूँ। (स्वीकार) या (मैं इसे स्वीकृत)

क्रिया + क्रिया—मैंने उसे दौड़ में **जीत लिया**। (पराजित कर दिया) या (पछाड़ दिया)

यह सुनते ही उसका चेहरा **गिर गया**। (उतर गया)

मैं वहाँ कई बार **जा आया हूं**। (हो आया हूँ)

उसने देश को भारी संकट से **रोक दिया**। (बचा लिया)

वह रुपया नहीं **पा पाया**। (ले पाया)

वही व्यक्ति सुखी होता है जो परिस्थितियों के अनुसार अपने को बदल

जाय। (बदल दे)
मैं हँस डाला। (पड़ा)
पुकार पड़ा (उठा)। घबरा आई (गयी)। रो आया (पड़ा)
वह उठने लग पड़ा। (उठने लगा)
रूठ उठा (गया)। तबियत ऊब आई (गयी)
पढ़ाई में कुछ भी प्रगति न किये पाये। (कर पाये)
वह अब नहीं जीने सकता है। (जी सकता)
वह आगे बढ़ सकने का प्रयत्न करता है। (बढ़ने)
मैं उसे सब कुछ समझा लूँगा। (दूँगा)
अब वे काम नहीं करने चाहते। (करना)
तबियत ऊब आती है। (जाती)
उस पर संकट आन पड़ा। (आ)
यह काम अच्छा हो पड़ा है। (बन)
प्रश्न पूछना (करना)। निर्भर करना (होना)। निर्णय लेना (करना)। प्रतीक्षा

देखना (करना)। स्मरण दिलाना (कराना)। श्रद्धा करना (रखना, होना)। नियन्त्रण करना (रखना)।

[कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके साथ विशिष्ट क्रिया लगती है। जैसे—

काम, नज़र, याद, हाथ, (आना); कीचड़, पगड़ी, (उछालना); आँखें, उँगली, गरदन, बीड़ा, बोझ, मुसीबत, सिर, (उठाना); कष्ट (भोगना); शराब (ढालना); धज्जियाँ, धूल, मौज, हँसी, (उड़ाना); कान, गला, घास, दिन, पेट, (काटना); चुगली, जान, टक्कर, ठोकरें, शपथ, (खाना); कान, किस्मत, (खुलना); गला (घोटना); सूली, पर (चढ़ाना); अड्डा, रौब, (जमाना); खाक, नींव, परदा, हाथ, (डालना); याद (दिलाना); आँखें, अरमान, दाँत, स्वर, (निकालना); नज़र, परदा, पूरा, पल्ले, पिल, पीछे, बरस, (पड़ना); शंख (फूँकना); भाग्य (फूटना); काम, खून, (बिगड़ना); आँख, गठरी, गोली, मुँह, टक्कर, ठोकर, बोली, मक्खियाँ, माल, सिर, हाथ, (मारना); वश में, नियन्त्रण, याद, निगाह, श्रद्धा, (रखना); आँख, ठिकाने, नज़र, पलक, बुरा, भारी, (लगना); अड़ंगा, घात, ठिकाने, दिल, दुकान, पार, (लगाना); दूध उबलता है, पानी खौलता है; इत्यादि।

इनमें कुछ-एक प्रयोग अर्थ की विशिष्टता के कारण मुहावरे बन गये हैं। देखिए आगे 'मुहावरे' भी। ऐसे प्रयोगों की सूचियाँ बनाते रहियेगा।]

ङ. मुहावरे

[मुहावरे बँधे-बँधाये रूप होते हैं। उनमें कोई हेर-फेर नहीं करना चाहिये। 'दिल लगाना' को 'हृदय लगाना', 'लड़ाई मोल लेना'; को 'लड़ाई ख़रीदना', 'फूलकर कुप्पा हो गयी' को 'फूल कर कुप्पी हो गयी'; अथवा 'गप्पें हाँकना' को 'गप्पें हाँक कर चलाना' नहीं कह सकते। मुहावरों में प्रायः क्रिया अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है—अर्थ की दृष्टि से भी और प्रयोग की दृष्टि से भी। किसी अच्छी पुस्तक से मुहावरों की सूचियाँ तैयार करते समय क्रियाओं का विशेष ध्यान रखो।]

मेरा सिर शर्म से उड़ गया। (झुक गया) या (गड़ गया)

हम देश के लिए जान पर कुरबान हो जाएँगे। (खेल जाएँगे)

उन्होंने उसकी आड़े हाथों खबर ली। (उसे आड़े हाथों लिया)

उस पर घड़ों पानी गिर गया। (पड़)

प्राण-पखेरू उड़ा दिये। (उड़ गये)

अंग-अंग ढीला हो पड़ना। (होना)
अड्डा बैठाना। (अड्डा जमाना)
पेट के लिए नाक घिसता फिरता है। (रगड़ता)
इतने वेतन से केवल दाल-रोटी हो जाती है। (चल जाती है)
आज गाने का खूब रंग चढ़ा। (जमा)
चौथे दिन शत्रु ने हथियार रख दिये। (डाल)
अपना दोष दूसरों के सिर क्यों जड़ते हो। (मढ़ते)
घर से बाहर आओ तो तुम्हें मजा कराऊँ। (चखाऊँ)

च. पर्यायवाची क्रियापद

[उबालना पकाना चावल उबालना; खाना पकाना।
उकसाना बहकाना किसी काम के लिए उकसाना; सही मार्ग से बहकाना।
उछलना कूदना गेंद उछलता है, यहाँ से कूद कर वहाँ जाओ।
कहना बोलना उसने यह कहा था; वह रेडियो पर बोल रहा है।
काटना कतरना चाकू से काटना; कैंची से कतरना।

झगड़ना	लड़ना	सास बहू झगड़ती हैं। कुश्ती लड़ते हैं।
तोड़ना	फोड़ना	हाथ तोड़ दिया; मटकी फोड़ दी।
दौड़ना	भागना	खिलाड़ी तेज़ दौड़ता है; चोर भाग गया।
मिलना	प्राप्त होना	कल आप मुझे मिलें; दो रुपये प्राप्त किये।

इसी प्रकार तानना, फैलाना; गढ़ना, बनाना; घिसना, रगड़ना; घूमना, मुड़ना; चिल्लाना-रोना, चलना-टहलना, चीरना-फाड़ना, तलना-भूनना; तलाश करना, तलाशी लेना; निकालना-हटाना, खाना-निगलना, समझना-सीखना, फेरना-लौटाना; मना करना, इन्कार करना; मारना-पीटना, रहना-ठहरना, आदि बहुत से शब्द हैं जिनके अर्थ और प्रयोग में अन्तर है।

सावधान विद्यार्थी ऐसे शब्दों की सूचियाँ तैयार करके अपनी भाषा को परिष्कृत करते रहते हैं।]

छ. अनियमित प्रयोग

(i) भाव और काल

आप क्या होगे ? (देंगे)

तू आयी हो। (है)
आप बताओ। (बताइए)
वह जावेगा, ऐसा होवेगा। (जायगा, होगा)
तुमने ऐसी करी। (ऐसा किया, ऐसी की)
उसने मुझे एक पेड़ा खिवाया। (खिलाया)
कोई किसी से क्या झगड़ा कर सकता। (सकता है)
वह कल दोपहर आ गया है। (आ गया)
वह इतना तेज़ दौड़ा कि मैं पकड़ नहीं सकता। (न सका)
वे जाया किए थे। (वे जाया करते थे)
आप जा सकता है। (सकते हैं); मैं ऐसा करेगा। (करूँगा)
तुम क्या काम करता है। (करते हो); हमें ऐसा दिखलाता है। (दिखाई देता है)
[देखिए आगे लिंग, वचन भी]
लाजपतराय जैसे नेता को भुलाया नहीं जा सकता। (भूला)

[हैगा, होवे, होवेगा, लावे, देऊँ, होयगा, आवहै, आवे, आदि रूप अब अशुद्ध माने गये हैं]

(ii) **भाव-काल का निर्वाह**

देखिए, तकल्लुफ़ न करें। (कीजिए)
जब बैंक से रुपया लें तो अच्छी तरह देख लीजिए। (लें)
प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि उसे इस कार्य में सहायता करनी चाहिए। (कि वह....करे)
हमारा कर्तव्य है कि जहाँ तक हो सके दुःखियों की सहायता की जाय। (करें)
मैं चाहता हूँ कि आप इसकी गम्भीरता पर विचार कीजिए। (करें)
आप को चाहिए था कि आप उन्हें देख आयें ! (आते)
मैंने उससे कहा, "यह काम कर लीजिए।" (लो)
जो कुछ आप जानते हों बता दें। (हैं)
किसी का साहस नहीं है कि वह जायगा। (जाये)
यदि आप आ सकें तो बड़ी कृपा होगी। (हो)

अब समय आ गया है कि सेना का निरस्त्रीकरण **होनी चाहिए**। (हो)
मैं चाहता हूँ कि वह छुट्टी ले **लेता**। (ले ले) या (मैं चाहता था)
जो लेखक बनना **चाहते हैं** वे अपनी भाषा पर ध्यान दें। (चाहें)
यदि आप नहीं आयेंगे तो मैं वहाँ नहीं **जाता**। (जाऊँगा)
वह कहने लगा कि मैंने उसे गत वर्ष **देखा**। (देखा था)
यदि आप ऐसा आदमी भेज **देते** तो मैं उसे रख **लूंगा**। (दंगे) या (रख लेता)
उनकी इच्छा थी कि हम बैठ **जायेंगे**। (जाते)
मैंने वह गुफा देखी है जहाँ राणा प्रताप **छिपे हुए** थे। (छिपे थे)

(iii) **कृदन्त का प्रयोग**

भूत कृ०—अपना धन बेकार पड़े रहने न दीजिए। (पड़ा)
भारतीय अब उच्च पदों पर नियुक्त **किया** जाने लगे हैं। (किये)
पकड़ी जाने पर वह औरत बोली। (पकड़ जाने पर)
राम के **गये** पर। (राम के जाने पर); लड़का **बैठे** हुए था। (बैठा हुआ)

संज्ञार्थक—दवा **देना** चाहिये (देनी); सब काम **करना** होंगे। (करने)

सच बोलने को, आज गर्मी नहीं है। (सच कहा जाय...., सच पूछो तो····)

पूर्वकालिक—वह खाना खा करके जायगा। (कर)

बात कर-कर चले जाना। (करके)
यह गोपाल न होकर मोहन था जो घायल हो गया। (नहीं था)
यह लेख प्रभावशाली न बनकर, हास्यास्पद बन गया। (नहीं बल्कि)
पेकिंग से लेकर मास्को तक लाल झंडा लहराता है। (पेकिंग से मास्को तक···)
गाड़ी के नीचे दबकर लड़के की मृत्यु हो गई। (दबने से, कुचले जाने से)
देश के प्रति प्रेम न होकर वह टुकड़ों में बँट जायगा। (होने से) या (न होगा तो)
आँसू-गैस छोड़कर उपद्रवी पकड़े गये। (उपद्रवियों को पकड़ लिया गया)
सब चिन्ता दूर होकर मन शान्त हो गया। (होने से)

वर्तमान कृ०—उसे आता देखकर (आते)

चलता-चलता रुक गया। (चलते-चलते रुक गया)

[देखिए 'क्रियाविशेषण' भी]

(iv) वाच्य

[जहाँ तक हो सके कर्मवाच्य का प्रयोग न करें]

निश्चय किया गया* । (निश्चय हुआ)

यह काम किया जाना चाहिये* । (करना चाहिये)

व्यवस्था की जाने वाली है* । (होने)

नौकर को चलाया जाय (नौकर से चलने को कहा जाय)

[*पहले प्रयोग अशुद्ध तो नहीं है, किन्तु दूसरे इनसे अच्छे हैं ।]

अभ्यास १४

. नीचे लिखे वाक्यों की क्रियापद द्वारा पूर्ति करो :—

(क) मैं आज........जाऊँगा ।

(ग) वह चार दिन से बीमार........है ।

(घ) मैंने यह पुस्तक पढ़........है ।

(ङ) उसे मत........।

(च) वह नौकर से पानी........है ।

(छ) मैं यह काम कर........हूँ ।

२. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :—

(क) साहब बोलता है कि यह काम करने पड़ेगा ।

(ख) वह कुरता डाले और कम्बल पहने जा रहा था ।

(ग) मैं अपनी सहायता अवश्य प्रदान करूँगा ।

(घ) वह आदमी बस हाँक सकता है ।

(च) सरकार ने यह निर्णय लिया है कि—

(छ) वह जब काम नहीं कर चुका तो बैठ गया ।

(ज) वह रुपया नहीं पा लिया ।

(झ) आप यह काम कर लो ।

(भ) तुम क्या काम करता है ?

(ट) हम यह किताब पढ़ लिये हैं ।

(ठ) अब समय आ गया कि सेना का निरस्त्रीकरण होना चाहिये ।

३. निम्नलिखित को अपने वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

फेंक देना, रो पड़ना, दौड़ आना, देख लेना, समझ जाना।

किया, देखा, होकर, चलते-चलते, बैठे-बैठे, खाइए, खिलाया, होता, घिसना, लिखना, लिखाना, लिखवाना।

५. संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण का विभक्ति-रूप

['विभक्ति-रूप' से हमारा यहाँ तात्पर्य है वह रूप जो को, से, में आदि परसर्ग और नाना सम्बन्धबोधक अव्यय लगने से पहले होता है; जैसे लड़के से, लड़कों को, लड़कियों ने, उसका, अच्छे के साथ, इत्यादि।]

एकवचन—हम **सवेरा** से बैठे हैं। (सवेरे)

बिना **अच्छा** भोजन के अच्छा काम असम्भव है। (अच्छे)

वह अपने **दादे** के साथ मेला देखने गया। (दादा)

उसे **खाना, कपड़ा** और मकान आदि का कष्ट नहीं है। (खाने, कपड़े)

राजे ने पूछा। (राजा ने)

इस **पाठशाले** में ६०० छात्राएँ पढ़ती हैं। (पाठशाला)

इस **पेशा** के लोग कम मिलेंगे (पेशे के)

कोई व्यक्ति की हानि न होने पाये। (किसी)

बेचारा यात्री ने बात ही नहीं की। (बेचारे)

अपना आचरण और सभ्यता को बचाने का प्रयत्न करें। (अपने)

रामचन्द्र शुक्ल कृत हिन्दी साहित्य **के** इतिहास की एक प्रति। (का)

उसके **अच्छापन** का प्रभाव पड़ा। (अच्छेपन)

[अच्छेपन की तरह ठेकेदारी (ठेकादारी नहीं), डंडेवाला (डंडावाला नहीं)]

वैसा का वैसा, **सारा** का सारा, **कड़ा** सा कड़ा अशुद्ध हैं; इनमें प्रथम वैसा, सारा, कड़ा की जगह वैसे, सारे, कड़े होना चाहिए।

बहुवचन—इन **सबों** ने। (इन सब ने)

उनकी **आशों** पर पानी पड़ गया। (आशाओं)

वहाँ पाँच **स्त्रियाँ** और दो **बालक** का वध किया गया। (स्त्रियों, बालकों)

दादों का अपने पोताओं के प्रति स्नेह होता है। (दादाओं, पोतों)

उन्हें चार **घोड़े** और एक बैल का दाम मिला। (घोड़ों)

शत्रु ने **गोले** और तोपों से आक्रमण किया। (गोलों)

उन्हों का (उनका); कोई कारणों से (किन्हीं)

['सीमा पर नागों ने' और 'सीमा पर नागाओं ने' दोनों शुद्ध हैं, किन्तु एक का

अर्थ है 'साँपों ने' और दूसरे का 'नागा लोगों ने']

सम्बोधन—**भाइयों** और **बहनों** ! (भाइयो और बहनो !)

प्यारो बच्चो ! (प्यारे बच्चो !)

अरे **लड़का** ! सुन सुन ! (लड़के !)

रेल दुर्घटना में पाँच **पुरुष** और एक स्त्री की मृत्यु हुई। (पुरुषों)

वहाँ **चिड़ियें** (**लड़कियें**, **स्त्रियें**) बैठी थीं। (चिड़ियाँ, लड़कियाँ, स्त्रियाँ)

अरी **लड़किए** ! (अरी लड़की।)

अभ्यास १५

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) लड़का ने कहा था।

(ख) देवियें अपने-अपने काम में लगी थीं।

(ग) नदियों के जल सूख गया।

(घ) बहूएँ खाना तैयार करती हैं।

(ङ) देवते ने ऐसा वर दिये थे ।

(च) प्यारे बच्चों ! सुनो ।

(छ) उसने अपनी दोनों बच्चियाँ और तीनों लड़के का वध कर दिया ।

(ज) कोई आदमियों से पूछा गया ।

६. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का लिंग

[वास्तव में समस्या केवल संज्ञा के लिंग-निर्णय की है। सर्वनामों में लिंग-भेद है नहीं, और विशेषण तथा क्रिया का स्त्रीलिंग या पुल्लिग रूप संज्ञा के अनुसार होता है—वह भी केवल आकारान्त पदों का, जैसे अच्छा, मैला, होना, करता और मिला से स्त्री० अच्छी, मैली, होनी, करती, मिली। संज्ञा पदों में निर्जीव पदार्थों का लिंग-भेद, व्याकरण और अभ्यास के द्वारा, हिन्दी प्रयोगों को सीखने से आता है।]

बेटी पराये घर का धन **होता** है। (होती)

सदा सच बोलना उसकी आदत **था**। (थी)

बातें **सीखना** पड़ती हैं। (सीखनी) [उर्दू में यह ठीक होगा।]

उन्होंने आँखें फेरना ही सीख **रखी** हैं। (रखा है)

इस काम में देर **लगानी** स्वाभाविक थी। (लगाना···था)

इसका लक्ष्य विद्याप्राप्ति ही **होगी**। (होगा)

मुझे मज़ा **आती** है। (आता)

गुलाब का फूल आनन्द की वस्तु होती है! (होता)
इसका प्रमुख कारण अनुशासनहीनता ही थी! (अनुशासनहीनता इसका····था)
परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए। (बदलनी)—उर्दू में ठीक।
आज की कहानी को यदि ध्यान से पढ़ी जाय···। (पढ़ा)
राम और सीता वन को गई। (गये)[1]
दंगे में बालक, युवा, नर, नारी सब पकड़ी गई। (पकड़े गये)[2]
गायें और बैल प्रायः यहाँ पानी पीती हैं। (पीते)
बर्फ से नलें फट गयीं। (नल फट गये)
मुझे तरस (गुस्सा) आती है। (आता)[3]
वह किसी दूसरी की टोपी उठाकर चलता बना। (दूसरे)
दसवें रात को वह मर गया। (दसवीं)

---

१. दोनों लिंग एकवचन और कर्ता में हों तो क्रिया पुल्लिग बहुवचन होगी। २. 'सब' शब्द होने से भी पुल्लिग बहुवचन। ३. पंजाब में 'राह देखा', 'तारें आईं', 'नाक कट गया'।

मुझे आज्ञा दिया। (दी)
यह शरीर नष्ट हो जायगी। (जायगा)
यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। (की जा सकती है)
हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया। (दी)
अपने रचनाओं में यही बात कई बार कहा है। (अपनी ···कही)
आपकी टोपी, कोट और कुरता पड़ा है। (आपका कोट, टोपी और....)
हमारे संपत्ति, मान और मर्यादा की रक्षा के लिए। (हमारी)

[ऐसे प्रयोगों में अच्छा यही होता है कि सब शब्द एक ही लिंग वाले हों, जैसे हमारी संपत्ति, प्रतिष्ठा और मर्यादा; या आपका जन्म, शिक्षण और पालन-पोषण कहाँ हुआ ?]

शिक्षा पद्धति को ऐसी बनावें कि...। (ऐसा—'को' के कारण)
अपने रानी के प्रेम में····। (अपनी)
देश की सम्मान की रक्षा के लिए। (के)

[कई बार यह निश्चित करना कठिन हो जाता है कि विशेषणपद का सम्बन्ध किस संज्ञा से है ।]

कितने वीरता से भरे हुए गीत (कितनी वीरता) या (कितने गीत)

हमारी नाक में दम है । (हमारा)

उसने धीमी स्वर में कहा । (धीमे)

हमारी प्रदेश की सरकार....। (हमारे प्रदेश की) या (हमारी सरकार)

अपने बुद्धि के बल से....। (अपनी बुद्धि) या (अपने बल से)

हिन्दी की दशा का जो चित्रण उन्होंने किया है वह बड़ी दयनीय है ।

[चित्रण वड़ा दयनीय है !] (जिस दशा का चित्रण....)

आपकी सहायतार्थ, आप की आज्ञानुसार । (के) अथवा (आपकी सहायता के लिए, आपकी आज्ञा के अनुसार)

अपने गुरुजनों की इच्छानुसार काम करना चाहिए । (की इच्छा के अनुसार)

हम नई प्रकार की वस्तु देखना चाहते हैं । (नये)

इस कवि में जवानी के मिठास के प्रति मोह है । (की)

गलियों को **चौड़ी** करना आवश्यक हो गया। (चौड़ा—'को' के कारण)

दही **मीठी** है। (मीठा)

परशुराम **के** क्रोधाग्नि ने क्षत्रिय राजाओं को जला दिया। (की)

दिये **के** लौ, पत्थर **के** मूर्तियाँ, संतोष **का** साँस। (की)

[याद रहे—

पुल्लिंग शब्द—अचकन, अदरक, अबीर, आयात, आलू, आसन, इन्तज़ार, इस्तीफ़ा, ऊन, औसत, कछार, कलह, कनस्तर, कल्लोल, क्रिया-कलाप, कायाकल्प, किवाड़, कीचड़, कुटीर, कुठार, कुदाल, केक, कोटर, कोदों, ख़जूर, खराद, खूँट, गठन, गिरगिट, गुंजार, गुलाब, गुस्सा, गेंद, गोदाम, ग्रीष्म, आघात, घूंट, चंचु, चन्द्र-मणि, चम्मच, चंपक, चाबुक, चौपाल, चौसर, छेद, छोर, जंजाल, जलवायु, जुलाब, जेल, झंझावात, टमटम, टिकट, ठूंठ, ठेका, ठौर, डकार, डग, डौल, ढेर, ढोल, तंतु, तंबाकू, तराज़ू, तलाक, तार, तारा, ताल, ताव, तावीज़, तोड़, जोड़, तौलिया, थूक, दही, दाँव, धड़, धनिया, धावा, नफ़ा, नयन, नेत्र, पतंग, पनीर, पराग, पलंग, पहिया, पित्त, पिस्तौल, पुल, पुलक, प्याज़, प्रात, प्रलय, फाग, फाटक, फेन, फ़र्श, बखिया,

बटन, बाज़ार, बिल, बेर, बेल (फल), भेड़िया, भोर, मचान, मज़ाक, मटर, मरहम, मल, मवाद, मान, मेवा, मोम, मौसम, म्यान, यातायात, रबड़, राज्य, रिवाज, रूमाल, लटकन, लालच, लाइसेन्स, लेन-देन, लेप, वाष्प, विष, व्यक्ति, व्यय, शतरंज, शरबत, शहद, श्वास, संखिया, सन्दूक, सन, समाज, समीर, साया, सींग, सीप, सिल्क, सेतु, सेब, सोच, स्टेशन, स्वर्ग, हठ, हाशिया, हिल्लोल, हुँकार, हुलिया, होश।

स्त्रीलिंग—अकड़, अरहर, आय, आयु, ईंट, उड़ान, उलझन, ऊख, ओट, ओस, कटार, कलम, कील, कुशल, कोर-कसर, खड़ाऊँ, खस, खाज, खोज, खोह, गंध, गड़बड़, घास, घिन, घूस, चपत, चर्चा, चेचक, चोंच, चौखट, छत, छाछ, छाप, जय, ज़िच, जेब, झाड़, टकसाल, ठण्ड, दाढ़, ढाल, तरफ़, तरह, तलछट, तलाश, तह, तौल, थाह, देह, धरोहर, नकेल, नाक, नाप, नींव, नोकझोक, पतझड़, पुस्तक, पेचिस, फ़िक्र, बकवास, बगल, बटेर, बाँह, बारिश, बूँद, भौंह, मखमल, मरोड़, माप, मूँग, मोहर, राह, रोकड़, लगाम, लालटेन, वायु, विजय, विनय, शक्कर, शपथ, शरण, शराब, समझ, ससुराल, साँस, सिगरेट, सुगन्ध, सुरंग, सौंफ, सौगन्ध, हींग, होड़।]

अभ्यास १६

१. निम्नलिखित में से स्त्रीलिंग शब्दों को रेखांकित करो—

पहिया, राह, चटक, कुटीर, कुटिया, थकान, मार, लूट, जंजाल, प्रलय, नमक, दही, सोच, चिन्ता, चौखट, श्रायु, चेचक, कील, लेडी, रेत, धड़, नाक, घास, भस्म, मोम, ऊन, बैठी, चलती, सीधा, बेड़ी, टेढ़ी, रूसी, उर्दू, तराज़ू ।

२. निम्नलिखित वाक्यों के सभी मुख्य शब्दों को स्त्रीलिंग में कर दो—

(क) मेरा बेटा कहाँ चला गया ।

(ख) उसे श्रपना टोकरा मज़दूर से उठवाना पड़ा ।

(ग) मैं चाहता हूँ कि श्रपने भाई के पास जाऊँ ।

(घ) वह वीर पुरुष युद्ध में लड़ता-लड़ता मारा गया ।

(ङ) राजा ने श्रपने मन्त्री से पूछा ।

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

(क) देश की सम्मान की रचा करो ।

(ख) हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दिया जाय ।
(ग) हमारी प्रदेश की सरकार यह चाहती है ।
(घ) उसने बड़ी धीमी स्वर में कहा ।
(ङ) वह किसी दूसरी की कोट उठाकर चलता बना ।

७. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का वचन

चार **आदमी** के लिए। (आदमियों); **लड़कियें** जा रही थीं। (लड़कियाँ)
चार **बजा** है। (बजे हैं); उसे सौ रुपये जुर्माना हुए। (जुर्माना हुआ)
राजा साहब **बजरों** पर बैठकर गये। (बजरे)
अनेक प्रकार की **विद्या** सीखी। (विद्याएँ सीखीं)
सब **श्रेणी** या **वर्ग** के लोग आये थे। (श्रेणियों या वर्गों)
लोग **इस फूल** की माला बनाकर पहनते हैं। (इन फूलों की मालाएँ)
वे लोग विविध **विषय** से परिचित थे। (विषयों)
शत्रु ने **गोले** और तोपों से आक्रमण किया। (गोलों)
विद्रोहियों को **कुत्ते** की तरह घसीटा गया। (कुत्तों)
दिल्ली में चार **गिरफ़्तारी** हुई। (गिरफ़्तारियाँ हुईं)
दो **फ़ीट** (दो फ़ुट), चार **लेडीज़** (लेडियाँ), **जंगलात** में (जंगलों में),
अफ़सरान से (अफ़सरों से)।

लड़की लोग बैठा था। (लड़कियाँ बैठी थीं)
मेरे आँसू से रूमाल भीग गया। (आँसुओं)
उसकी आँख से आँसू बहता है। (आँखों····बहते हैं)
वृक्षों पर कोयल कूक रही है। (वृक्ष पर)
ऐसी एक-आध बातें सुनकर दुःख होता है। (बात)
आहट लेने के ख्यालात से उधर ध्यान दिया। (ख्याल)
अठारह दिनों तक, कई-कई दिनों तक। (दिन)
अपने-अपने घरों से ले आओ। (घर)
अनुशासन के बिना व्यक्ति अपने चरित्रों को खो देता है। (चरित्र)
इन हालातों में। (हालात)
श्रोताओं में कई श्रेणी के लोग थे। (श्रेणियों)
हमारे सामानों का ख्याल रखना। (सामान)
प्रत्येक या हर एक सदस्यों को चाहिये कि····(सदस्य)
हर एक ने टोपियाँ पहन रखी थीं। (टोपी····थी)

इस विषय की एक भी पुस्तकें नहीं हैं। (पुस्तक नहीं है)
गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश जनभाषा में दिया। (अपना उपदेश)
सब लोग अपनी राय दें। (अपनी-अपनी)
उसने कहा कि मैं चार भाई-बहन हूँ। (हम····हैं)
कौन आये थे? मेरा पिता। (मेरे)
वे अनेक कला जानते हैं। (कलाएँ)
उसने अनेकों ग्रन्थ लिखे। (अनेक)
वह मैं ही हूँ जिन्होंने तुझे बचाया था। (जिसने)
वह जानते हैं कि यह नहीं जायँगे। (वे····ये····)
चारों वेदों का नाम बताओ। (के)
महात्मा जी का दर्शन करके मैं धन्य हो गया। (के)
उन्होंने हस्ताक्षर किया। (किये)
उसने तरह-तरह का रूप धारण किया। (के····किये)
अनेक ऐसा वीर बालक हुआ है। (ऐसे····हुए हैं)

७२ हज़ार का नोट चोरी हो गया। (के....हो गये)
मसूरी के दृश्य देखने योग्य हैं (का....है)
आप के एक-एक शब्द तुले हुए थे। (आपका....तुला हुआ था)
आपको मेरे नमस्कार पहुँचें। (मेरा नमस्कार पहुँचे)
हिन्दी के अधिकांश साहित्य ब्रजभाषा में लिखे गये हैं। (का....गया है)
ऋषि मुनि इत्यादियों का मत है। (इत्यादि)
प्राण निकल गया। (गये)
लड्डू न मिले तो पेड़े लेते आना। (मिलें)
सुनते-सुनते कान पक गया। (गये)
कपड़े उतार कर रख दिया। (दिये)
दो पुरस्कार एक विद्यार्थी को नहीं मिलेगा। (मिलेंगे)
औरतें खातीं हैं। (खाती हैं)
जैन साहित्य प्राकृत में लिखे गये हैं। (लिखा गया है)
तू और मैं चलूँगा। (....दोनों चलेंगे)

अभ्यास १७

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

(क) उसके पास अनेक पुस्तक है।

(ख) आज प्रिंसिपल साहब नहीं आया है।

(ग) तीनों लड़के को यहाँ बुला लाओ।

(घ) उनके सिर लाठियें पड़ी।

(ङ) आपको पत्र भेजा गये थे।

२. निम्नलिखित के बहुवचन बनाइए—

रात, सखी, सखा, दादा, राजा, लड़का, बहू, गया, करती, थी, आँसू।

३. निम्नलिखित वाक्यों में मुख्य-मुख्य शब्दों को बहुवचन में बदल कर लिखो—

(क) लड़का सड़क पर जा रहा था।

(ख) भैंस घास खा रही थी।

(ग) मेरे पास एक काला घोड़ा है।

(घ) उसका नाना और मामा कल मुझे मिले थे।

(ङ) जिसने चाहा तुझे बुला लिया।

८. परसर्ग

[विभक्ति-चिह्न]

ने—(१) आवश्यक—

मैं कुछ का कुछ लिख दिया हूं। (मैंने....दिया है)
सरकार यह काम करवाना चाही। (सरकार ने....चाहा)
हम आप से कहे थे। (हमने....कहा था)
कुछ लोग इकट्ठे हुए और यह ठहराया। (और उन्होंने यह ठहराया)
वह दौड़ी हुई गयी और दवा माँगी। (....और उसने दवा माँगी)
आप अवश्य सुने होंगे। (आपने....सुना होगा)
वे अभी-अभी खाना खाये हैं। (उन्होंने....खाया है)
मुझे वे एक पत्र नहीं लिखे। (मुझे उन्होंने....लिखा)
मैं उसे नहीं पहचाना हूँ। (मैंने....है)
बहुत से स्वार्थी लोग अन्न संचय किये हैं। (....लोगों ने....किया है)

वह इसी कारण नदी में डूब कर जान दे दिया। (उसने....दी)
पुस्तक किसने ली ? मैं। (मैंने)

(२) अनावश्यक—

आपने मुस्करा दिया। (आप मुस्करा दिये)
मैं ने हँस दिया। साहब ने बोला।
कृष्ण ने गोपियों के साथ नाचा। (कृष्ण....नाचे)
अँग्रेज़ी के समर्थकों ने हिन्दी के विरुद्ध प्रचार करने लगे। (समर्थक)
उसने वहाँ से चल पड़ा। (वह....)
नेताओं ने भावात्मक एकता को आवश्यक मानते हैं। (नेता भावात्मक)
लड़के ने भोजन करके स्कूल गया। (लड़का....)

(३) अनुपयुक्त—

उसने यही बात करनी थी। (उसको)
मैंने यह काम कर लेना चाहिए। (मुझे)
हमने यह काम करना है। (हमें)

यह चीज़ उसने दे दो। (उसको)

को—(१) आवश्यक—

वह अपना भाग्य कोस रहा है। (अपने भाग्य को)
वसन्त में फूल खिलने से कौन रोक सकता है? (फूलों को)
सीताजी ‸ लक्ष्मण छोड़ने गये थे। (सीताजी को)
गीता ‸ सब हिन्दू मानते हैं। (गीता को)
अपने बच्चे वीर बनाओ। (अपने बच्चों को)

(२) अनावश्यक—

चीनियों ने बन्दूकों को समर्पित कर दिया। (बन्दूकें....कर दीं)
राम के नाम को लेकर चल पड़ा। (राम का नाम लेकर)
पुस्तक को लाओ। (पुस्तक लाओ); पुस्तक को कहाँ से लिया था? (....ली थी)
लड़के ने अपना सिर नीचे को कर लिया।

'ने' केवल सकर्मक क्रिया के भूत कृदन्त के साथ प्रयुक्त होता है।

सत्याग्रही बड़ी-बड़ी यातनाओं को सहते रहे। (यातानाएँ)
अपनी मोटर को भी लाये हैं। (मोटर भी)
मैं रोटी को खाता हूँ।
वह घर (दिल्ली) को चला गया।
यह पद कई भावों को प्रकट करता है। (कई भाव)
उसने पत्थर को फेंका। फल को पका होना चाहिए।
उसने मकान को बनवाया। (मकान बनवाया)
हमने अपने स्थान को न छोड़ा। (अपना स्थान)
वह पत्र लिखने को बैठा। (लिखने बैठा)
अब मेरी बात को मान लो।
हमें बहुत सी बातों को सीखना है। (बातें सीखनी हैं)
इस कार्य को करते हुए बहुत दिन हो गये। (यह कार्य....)
इस रहस्य को नहीं बताया जा सकता। (यह रहस्य नहीं....)
उन्हें इस पुस्तक को भेजने को लिखा गया है। (यह पुस्तक)

पाकिस्तान से अपनी सेना को हटाने को कहा गया। (अपनी सेना)
भोजन को स्वादिष्ट होना चाहिए। (भोजन स्वादिष्ट....)
आप मीरा के पद को सुनकर देखिए। (का पद)
आचार्य ने उनकी शिकायत को सुन लिया। (शिकायत सुन ली)
सुबह को, कल को, परसों को।
[शाम को, रात को शुद्ध प्रयोग हैं।]

(३) अनुपयुक्त—
सब को भगवान् को पूजना चाहिए। (की पूजा करनी)
वह कहीं काम को जाता है। (पर) या (से)
मुझे कहा (पूछा) गया था। (मुझ से)
मुझे तो आप सब एक समान हैं। (मेरे लिए)
इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो। (का)
मैं ने राम को पूछा। (से)
वह प्रत्येक बात को आँकड़ों से समर्थन करता है। (का)

उन को यह इच्छा थी कि....(की)
उसको काम करने की इच्छा नहीं है। (उसकी)
मैं आपको कृतज्ञ हूँ। (आपका)
बड़ी बहन ने उनको माँ की तरह लालन-पालन किया। (उनका)
उसके चाचा को लड़को हुई है। (के, की)
अध्यक्ष को निवेदन करना चाहता हूँ। (से)
मैं वहाँ एक पुराने मित्र को मिला। (से)
वह अपने पिता को भी नहीं डरता। (से)
मैं आपको इसके बारे में कुछ नहीं कह सकता। (आपसे)
उसने मुझे खाने को बुलाया। (पर)
हमने इस विषय को विचार किया। (पर)
प्रसाद का अध्ययन करने वालों को यह पुस्तक उपादेय है। (के लिए)
त्यागी जी ने सभा को कई प्रस्ताव रखे। (के सामने)
नानक ने अपना सारा धन साधुओं को बाँट दिया। (में)

आठ बजने को दस मिनट हैं। (में)

से—(१) आवश्यक—

उसे रस्सी बाँधकर ले गये। (रस्सी से)

यह काम हाथों कर लो। (हाथों से)

(२) अनावश्यक—

नौकर के हाथ से भेज देना।

वह पैदल से गया है।

इसी बहाने से हमें दर्शन हो गये।

ज़बरदस्ती से काम कराना चाहता था।

यह दवा रोग को समूल से नष्ट कर देगी।

(३) अनुपयुक्त—

पहली जुलाई से नया सत्र आरम्भ होगा। (को)

सब से नमस्ते। (को)

मैं उससे सब कुछ समझा दूँगा। (उसे) या (उसको)

फिर कुछ देर से उसने उत्तर दिया। (देर के बाद)
आज तुम फिर इतनी देर से आये। (में)
आपके विचार से क्या ऐसा हो सकता है ? (में)
इस तरह का सम्बन्ध साहित्य और संस्कृति से है। (में)
मेरे नये पते से चिट्ठियाँ भेज देना। (पर)
वह मुझ से क्रुद्ध है। (पर)
उस बच्चे की दशा से मुझे दया आ गयी। (पर)
यह पुस्तकें इतने मूल्य से नहीं मिल सकतीं। (पर)
यह स्कूल ईटों से बना है। (का)
भाषा के द्वारा हम अपने भावों को एक दूसरे से व्यक्त कर सकते हैं। (पर)

के द्वारा—मैंने यह बात अपने साथी के द्वारा सुनी है। (से)
अधिकारियों के द्वारा आतंक फैल रहा था। (के हाथों)
रेलवे स्टेशन पर ६०० तोले चरस पारसल द्वारा बरामद हुई है। (से)
लड़ाई के द्वारा लोगों ने बहुत धन कमाया। (के कारण)

का, के, की—(१) आवश्यक

विशिष्ट अतिथियों में निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं। (निम्नलिखित के नाम)

बाढ़ से फसल सर्वनाश हो रही है। (फसल का सर्वनाश हो रहा है) या (नष्ट)

उन्होंने एक उपन्यास अनुवाद किया है। (उपन्यास का अनुवाद)

हिन्दी राष्ट्रभाषा होना आवश्यक और वांछनीय है। (हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना)

(२) अनावश्यक

निःस्वार्थ की भावना से। चार बोरे मैदा के दे दें।

नाव में पानी के भर जाने से। वहाँ घमासान का युद्ध हुआ।

कवियों को काव्य के करते समय आनन्द मिलता है।

इस मकान के बनवाने में १२,००० रुपया लग गया। (यह मकान बनवाने)

इस काम के करने में मुझे क्या आपत्ति है ? (यह काम करने)

इस बात के कहने में मुझे संकोच होता है। (यह बात)

इस समारोह के मनाने में बड़ी अड़चन थी। (यह समारोह)

विपत्तियों के आने पर लोग घबरा जाते हैं। (विपत्तियाँ)

(३) **अनुपयुक्त**

मोहन ने अपने मित्र की दावत दी। (को)

उसने अपनी पत्नी का गला घोंटकर मार डाला। (को उसका)

व्यापार में सेठ रामलाल के कोई घाटा नहीं हुआ। (को)

आप की इच्छानुसार। (आपके) या (आपकी इच्छा के अनुसार)

मैंने उसे बैठने की कुर्सी दी। (के लिए)

बड़ों का आज्ञा मानना हमारा कर्तव्य है। (की)

भाषा भावों की अभिव्यक्तीकरण का माध्यम होती है। (के)

[देखिए पृ० १५१-१५१ भी]

जिसका उधार लिया होता है....। (जिस से)

दो ईसाई देशों की टक्कर हो गयी। (में)

उन्होंने इस बात की आपत्ति उठाई। (पर)

मैं आप की भक्ति या श्रद्धा करता हूँ। (आप पर...रखता हूँ)

में—(१) आवश्यक—

वह स्कूल बैठा है। (स्कूल में)

उसने दिन भर नाटक पढ़ डाला। (दिन भर में)

(२) अनावश्यक—

आप भीतर में बैठ जाइएगा।

परस्पर में सहयोग होना चाहिये।

कल रात में वर्षा नहीं हुई।

दर असल में यह बात है।

इन दिनों में वह बहुत दुःखी रहा।

उसने पुस्तक में से मुँह उठाकर नहीं देखा।

वह मन ही मन में सोचने लगा।

सारा काम उनके हाथ में सौंप दिया।

हमारे हाथ में कुछ नहीं आया।

(३) अनुपयुक्त—

वह पेड़ में बैठा है। (पर)
वे कभी-कभी सड़क में मिल जाते थे। (पर)
उसकी दृष्टि चित्र में गड़ी थी। (पर)
वह किताब में आँख गड़ाये पढ़ रही थी। (पर)
वह मुँह को हथेली में रखे बैठा था। (पर)
उस समय गुप्त जी मृत्युशय्या में थे। (पर)
पुलिस ने हरि में आरोप लगाया। (पर)
कई स्थलों में ऐसा बताया गया है। (पर)
समुद्र में सैर करने जाते हैं। (की)
प्रोफ़ेसर ब्रजमोहन गणित शास्त्र में मर्मज्ञ हैं। (के)
फोड़े में मरहम लगा दिया गया। (पर)
इन दोनों घरों में एक दीवार है। (के बीच)
प्रथम महायुद्ध १९१४ और १९१८ में हुआ था। (के बीच में) या (१४ से

१८ तक)

वह क्रोध में भरकर बोला। (से)

वह नदी में पानी भरने गयी है। (से) या (में से)

उसे आने में रोका गया। (आने से)

उनकी योग्यता काम में प्रकट होती है। (से)

उसे आने में रोक दिया गया। (से)

उसने गुरु के चरणों में अपना सिर रख दिया। (पर)

सड़क में भारी भीड़ लगी थी। (पर)

पाकिस्तान रेडियो में बताया गया कि....। (पर) या (से)

सभा की बैठक मेरे निवास-स्थान में होगी। (पर)

के भीतर-अन्दर—

हमारे धर्मशास्त्रों के अन्दर बहुत कुछ पड़ा है। (में)

आत्मा के अन्दर बल होना चाहिए। (में)

जनता के अन्दर असन्तोष फैल गया। (में)

वह संकटों के **भीतर** घबराने वाला नहीं है। (में)
हमारी पाठ्य पुस्तक के **अन्दर** लिखा हुआ है। (में)
उस गाँव के **भीतर** दो कुएँ हैं। (में)
कल संसद् के **भीतर** इस पर बहस होगी। (में)

के बीच—इन वर्षों के **बीच** २७२ रेल-दुर्घटनाएँ हुईं। (में)
दिल्ली और श्रीनगर के **बीच** दंगे हुए। (में)
बाबू लोग हिन्दी वाक्यों के **बीच** अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग कर देते हैं। (में)

पर—(१) **आवश्यक**—
नदी के किनारे आकर। (किनारे पर)
वह घर नहीं है। (घर पर)
अपने पाँव ‸ कुल्हाड़ी मार ली। (पर)

(२) **अनावश्यक**—
सारा दोष अपने सिर **पर** लेना।
आड़े हाथों **पर** लेना।

(३) अनुपयुक्त—
वह जाने पर है। (को)
यह काम करने पै जी चाहता है। (को)
इस युग में साहित्य पर बड़ा महत्त्व दिया जा रहा है। (को)
यह पत्र लम्बा हो जाने पर क्षमा चाहता हूँ। (की) या (के कारण)
उसने विदेशियों पर भी मित्रता का व्यवहार किया। (से, के साथ)
उसने इस विषय पर बहुत अच्छा अनुभव (ज्ञान) प्राप्त कर लिया है। (का)
काश्मीर की नीति पर प्रधान मन्त्री ने एक वक्तव्य दिया। (के सम्बन्ध में)
उस पर क्या दोष है। (का)
उस पर क्या दोष दिया जाय। (को)
मुझ पर कोई लाचारी नहीं है। (मेरी)
ऐसा करने पर कोई हानि नहीं है। (में)
गाँव पर साँपों की भरमार है। (में)
राजर्षि टण्डन जी ने हिन्दी पर बड़ा उपकार किया। (का)

वह राजमहल पर चला गया। (के ऊपर)

इस कुएँ पर एक टीन डाल दिया जाय तो अच्छा हो। (के ऊपर)

के ऊपर—आप मेरे ऊपर थोड़ी दया करते। (मुझ पर)

अपराधी की पीठ के ऊपर कोड़े लगाये गये। (पर)

इस बात के ऊपर निर्भर है। (पर)

बजट के ऊपर बहस होगी। (पर)

नाटक समारोह का सारा उत्तरदायित्व छात्रों के ऊपर है। (पर)

गुरु के ऊपर श्रद्धा रखे बिना विद्या नहीं आती। (पर)

सुभाष बोस के ऊपर यह अभियोग लगाया गया कि····। (पर)

मैंरे मन के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा। (पर)

सहित-साथ-संग—मैंने नम्रता के साथ केवल इतना कहा कि....। (से)

स्वतन्त्रता के साथ देश की निर्धनता का अन्त हो जायगा। (मिलने पर)

तुम्हें लगन या धैर्य के साथ अपना काम करना चाहिये। (से)

उसने बड़े ध्यान के साथ मेरी बातें सुनीं। (से)

उसका विवाह शीलादेवी के संग या सहित हुआ। (से)
आपका लोटा धन्यवाद सहित लौटा दिया था। (धन्यवादपूर्वक)
आपका कृपापत्र या निमन्त्रण धन्यवाद सहित मिला। (इसके लिए धन्यवाद)
पहाड़ी लोग सुरक्षा सहित अपने घरों में रहते हैं। (से) या (पूर्वक)
अन्य—हमें भोगविलास के लिए धन नष्ट न करना चाहिए। (पर)
इस रोग के लिए कोई इलाज नहीं। (का)
स्वान्तः सुखाय के लिए। [—अनावश्यक]
बीमारी के निमित्त मैं उपस्थित न हो सका। (कारण)
दूसरे आदमी के पास बेच दिया। (हाथ)
इसका अधिकार भारत सरकार के पास नहीं है। (को)
वे सन्तान को लेकर दुःखी हैं। (के कारण)
कश्मीर से लगाकर कन्याकुमारी तक। [—अनावश्यक]।
वह अपनी पुस्तक की अपेक्षा दूसरे की उठा लाया। (के बदले)
उसके विरुद्ध मुकद्दमा चलाया गया। (उस पर)

काम करने के अतिरिक्त तुम पास नहीं हो सकते। (किये बिना)
उन समान दूसरा कोई नहीं है। (उनके समान)
इस घण्टे **के आगे** मिलियेगा। (के बाद) या (के पहले)
मेरे **आगे** कौन ठहर सकता है ? (सामने)
धन के **सिवाय** काम नहीं चल सकता। (के बिना)
वह हमारे **हाँ** रहता है। (यहाँ)
वहाँ **जाने के बिना** काम न हो सकेगा। (जाये बिना)

[देखिए 'क्रियाविशेषण' के अन्तर्गत भी]

निम्नलिखित द्विविध प्रयोग शुद्ध हैं। देखो, इनमें परस्पर कितना अन्तर है। इस प्रकार के वाक्य इकट्ठे करो।

इससे पहले	इसके पहले।
मेरे पास एक नौकर है।	मेरे साथ एक नौकर है।
मकान के आगे	मकान के सामने
गाँव के परे	गाँव से परे

इससे क्या लाभ है ?	इसका क्या लाभ है ?
काम से गया है।	काम पर गया है।
उन लोगों से जा मिला।	उन लोगों में जा मिला।
मैंने बाल्टी में पानी भरा।	मैंने पानी से बाल्टी भरी।
किसके नाम पर ?	किसके नाम का या से ?
किसके लिए जाते हो ?	किस लिए जाते हो ?
उस पर कोई भरोसा नहीं।	उसका कोई भरोसा नहीं।

अभ्यास १८

१. परसर्ग या कारक चिह्न भर कर वाक्य पूरे करो—

(क) मैं आप....पूछता हूँ।

(ख) हिन्दी....प्रसिद्ध कवि तुलसीदास....अनेक ग्रंथों....निर्माण किया।

(ग) घर....बाहर जाने....डर लगता है।

(घ) मनुष्य....जीवन....अन्न....बहुत आवश्यकता है।

(ङ) मोहन ने राम....नदी....डूबने....बचाया।

(च) लड़के अपने-अपने मकान....छत....पतंग उड़ाते हैं।

(छ) रामायण....सब हिन्दू मानते हैं।

२. निम्नलिखित को शुद्ध करो—

(क) मेरे को एक पुस्तक दो।

(ख) आज उन्हों से पूछकर आऊँगा।

(ग) यह कौन आदमी की लाठी है।

(घ) हम आप से कहे थे।

(ङ) हमने यह काम कर लेना चाहिये।

(च) सबको भगवान् को पूजना चाहिये।

(छ) इस बहाने से आपके दर्शन हो गये।

(ज) मुझे आप में पूरा विश्वास है।

(झ) उसने अपने पाँव में कुल्हाड़ी मार ली।

(ञ) सड़क में बड़ी भीड़ थी।

९. अव्यय—(i)योजक

आवश्यक

घर में चादरें, दरियाँ, कुर्सियाँ, मेज़, सोफ़े, पलंग पड़े थे। (सोफ़े, और पलंग)
यह सुनकर वे चिन्तित ‸ व्याकुल हो उठे। (चिन्तित और व्याकुल)
मैं देख रहा था, ‸ कुछ कर न सका। (किन्तु)
वे ‸ आए थे कि आप से कुछ बात कर लेते। (वे इसलिए आए थे....)
‸ हम अपढ़ हैं तथापि इतने बुद्धू नहीं हैं। (यद्यपि हम अनपढ़....)
वह मुझे बुलायेगा, ‸ मैं उसके यहाँ जाऊँगा। (तो मैं उसके....)

अनावश्यक

सन्दूक में काग़ज़ पत्र और आदि चीजें हैं।
मैं पहुँचा ही था जब कि वह आ गया।
यथार्थ में वे लोग धन्य हैं कि जिन्हें सन्त महात्माओं के दर्शन होते हैं।
प्रायः करके ऐसा होता है।

जो धन का भूखा है, **फिर** वह साधु नहीं है।

मैं इसका वह अर्थ नहीं लगाता जो कि आप लगाते हैं !

बेटी, आज तुम ससुराल जा रही हो, **अतः** जाओ और सुखी रहो।

[निम्नलिखित तीन वाक्यों में काले अक्षर वाले शब्द-युग्मों में से एक रहना चाहिये] :—

मैं कई खेलें खेलता हूँ, **उदाहरणस्वरूप जैसे** हॉकी, फ़ुटबाल।

मान लो यदि वह असफल हो जाय तो""।

कदाचित् यदि ऐसा हो भी जाय""।

अनुपयुक्त

देश **व** काल (देश वा काल) या (देश और काल)

कृष्ण स्कूल नहीं गया **कि** उसके पिता बीमार थे। (क्योंकि)

आपने अच्छा किया **जब** मुझे सूचना दे दी। (जो) या (कि)

मज़दूर ख़ूब काम करता है **क्योंकि** उसे अच्छा पैसा मिले। (ताकि) या (इसलिए कि)

जल्दी चलें **कि** मास्टर जी अप्रसन्न हो जायँगे (नहीं तो)

पैसा इसलिए नहीं है क्योंकि लोग बेरोज़गार हैं। (कि)
इसका कारण यह है क्योंकि वह बीमार था। (कि)
यह काम करो नहीं तो अपने घर जाओ। (या)

[नित्य सम्बन्धी अव्ययों का ध्यान रखो] :—

ज्यों ही मैं पहुँचा, ‸ वह उठ गया। (त्यों ही)
यद्यपि वह मोटा है, ‸ दौड़ता तेज़ है। (तथापि)
क्योंकि वह मोटा है, ‸ वह धीरे चलता है। (इसलिए)
यदि वह मोटा होता ‸ वह तेज़ न दौड़ पाता। (तो)
‸ मैं काम कर रहा था, उस समय वह आ धमका। (जिस समय मैं····)
जैसे तुम निर्भय हो उतने ही ईमानदार भी हो। (जितने)
मैं ‸ प्रसन्न हूँ क्योंकि कल छुट्टी है! (मैं इसलिए प्रसन्न हूँ कि....)
जहाँ मनुष्य विवश है उसी प्रकार असमर्थ भी है। (जहाँ...वहाँ) (जिस प्रकार ....उसी प्रकार)

इससे न तो दूसरों को कष्ट होता न तो अशान्ति फैलती। (न ही)

९. (ii) क्रियाविशेषण

अनावश्यक

मैं आज प्रातः काल के **समय** उधर गया था।

वे लोग **परस्पर** एक दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं! [दो में से एक]

इधर आजकल यह देखने में आया है। (इधर) या (आजकल)

सार देश भर में रोष प्रकट किया गया। (सारे देश में) या (देश भर में)

कृपया मैं इसे कल कर दूँगा।

उसके बाद वे **वापस** लौट आये। (वापस आ गये) या (लौट आये)

वह **लगभग** सो गया।

वह **लगभग** चल रहा था।

उसे **लगभग** शत प्रतिशत अंक मिले।

केवल इसीलिए वह यहाँ न आ सका।

केवल **मात्र** रह गया उसके पास एक पाँच रुपये का नोट।

ये बातें केवल दिखावा भर थीं। [दो में से एक]
वह अवश्य ही हमसे मिलेगा।
हम स्वयं ही उनसे मिलेंगे।
लड़के केवल चाय ही ले सकते हैं। [दो में से एक]
दोपहर को किसी समय आ जायें। [दो में से एक]
ये शब्द हमारे कान में सुनाई पड़े। (कान में पड़े) या (सुनाई पड़े)
वह एक टाँग से लँगड़ा था।
सदैव ही।
वह अत्यन्त ही सुन्दर है।
मैं केवल इतना ही चाहता हूँ।
उसके एकमात्र पिता चल बसे।
ऐसा व्यक्ति चाहिए जो किसी समय इस पद पर रह चुका हो।
यह बात क्योंकर और कैसे हुई ?
कदापि भी सत्य नहीं हो सकता।

आपकी कुशल भगवान् से ठीक चाहता हूँ।

अनुपयुक्त

देश में **सर्वस्व** शान्ति है। (सर्वत्र)
बड़ा आगे बढ़ गया। (बहुत)
आपकी आज्ञा के **अनुकूल** (अनुसार)
स्वभाव के **अनुरूप** (अनुकूल)
यह पत्र आपके **अनुसार** है। (अनुरूप)
शनैः उनको सफलता मिलने लगी। (शनैः शनैः)
यह मेरा मकान है, **यहाँ** मैं रहता हूँ। (जहाँ)
एकमात्र दो उपाय हैं। (केवल)
वह उदास **चेहरे से** चल दिये। (होकर)
मुझे वह रात **उनकी छत के नीचे** काटनी पड़ी। (उनके यहाँ)
उसने उसकी **सभी कहीं** निन्दा करनी शुरू कर दी। (हर जगह)

अनियमितता

पुस्तक **विद्वत्तापूर्ण** लिखी गयी है। (विद्वत्तापूर्वक)

छात्र दृढ़ संगठित रहे। (दृढ़ता से)

वे इसे **नहीं** समझ सकते हैं न बोल सकते हैं। (न)

यदि मेरी सुनें तो कभी **नहीं** जायें। (न)

जब तक मैं **नहीं** आऊँ....। (न)

सादर **र्वकपू** निवेदन है कि....(आदरपूर्वक) या (सादर)

आसानी **पूर्वक** कर लिया। (आसानी से)

[निम्नलिखित के अर्थों का भेद समझ लेने की आवश्यकता है—

जैसा-कैसा काम कर लो।   जैसे-कैसे काम कर लो।

कुल इतने रुपये हुए।   कुल मिलाकर इतने रुपये हुए।]

'भी' का प्रयोग

१. **अनावश्यक**—किसी **भी**, कोई **भी**, कहीं **भी**, अभी **भी**, जैसे—

किसी **भी** आदमी को भेज दो। जहाँ **भी** जाओ, मुसीबत है।

वह कहीं भी जा सकता है।
उसकी खबर बिलकुल भी नहीं ली।
उधर की और-और भी चीज़ें देख आते।
यह बात कदापि (कभी) भी नहीं हो सकती।

२. अनुपयुक्त—इस प्रकार की इच्छा जब भी हो। (जब कभी)
आप आप भी वहाँ जाएँगे। (स्वयं)
यहाँ बन्धन भी हैं, पर यहाँ की कई अच्छी बातें भी हैं। (तो)

अभ्यास १९

१. नीचे लिखे वाक्यों में अव्यय या अविकारी शब्द भरो—
(क) आप....क्यों घूम रहे थे ?
(ख) वह....जा रहा था।
(ग) जो....परिश्रम करते हैं वे परीक्षा में....सफल होते हैं।
(घ) किताब मेज़ के....पड़ी थी।

(ङ)....! कैसा अच्छा मौसम है।

(च) कुछ काम करो....भूखे मर जाओगे।

(छ) सदा सच बोलो....झूठ बोलना पाप है।

(ज) यद्यपि यह ठीक है....मैं नहीं मानता।

(झ) यह बात मेरी बुद्धि से....है।

(ञ) उनके....कैसे जाऊँ ?

२. निम्नलिखित को वाक्यों में प्रयुक्त करो—

तो भी, फिर भी, इस लिए, केवल, ही, भी, कहीं, जब भी।

परिशिष्ट पहला

दक्षिण में प्रायः विद्यार्थी हिन्दी की ध्वनियों, उसके रूपों और प्रयोगों से अच्छी तरह परिचित नहीं हो पाते। वे अपनी-अपनी भाषा के प्रयोगों की छायाएँ हिन्दी में जोड़ते रहते हैं। इस कारण से उनकी भाषा बड़ी अजीब लगती है। उन्हें हिन्दी की विशिष्ट ध्वनियों का अभ्यास करते रहना चाहिए। उन्हें हिन्दी के विशिष्ट शब्दों की सूचियाँ बनाते रहना चाहिए। बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका दक्षिण की भाषाओं में और का और अर्थ होता है। जैसे—

शब्द	हिन्दी में	दक्षिणी भाषाओं में	शब्द	हिन्दी में	दक्षिणी भाषाओं में
अनुमान	अंदाज़ा	संदेह	आशा	उम्मीद	इच्छा
अवसर	मौक़ा	जल्दी	उद्योग	प्रयत्न	नौकरी
अवस्था	दशा	कष्ट	उपन्यास	नावल	भाषण
आलस्य	सुस्ती	बीमारी, देरी	कल	यंत्र	नल
आलोचना	समीक्षा	सलाह	कल्याण	भलाई	विवाह

केवल	सिर्फ़	नीच	राग	स्नेह	गुस्सा
खाल	चमड़ा	नल	रूमाल	कर-वस्त्र	पगड़ी
खिलाड़ी	खेलनेवाला	बदमाश	लोटा	गड़वा	गिलास
चेष्टा	प्रयत्न	बदमाशी	विज्ञापन	इश्तहार	प्रार्थना
तालीम	शिक्षा	व्यायाम	विभूति	ऐश्वर्य	बभूत
नीरस	शुष्क	कमज़ोर	शिकार	आखेट	सैर
पाषाण	पत्थर	विष	शिक्षा	तालीम	दंड
प्रपंच	धोखा	दुनिया	संगति	मैत्री	समाचार
बाधा	विघ्न	दर्द	संभव	शायद	घटना
मृग	हिरन	जानवर	संसार	जगत्	परिवार, पत्नी ।

निम्नलिखित विलक्षण लगने वाले प्रयोग महाराष्ट्र, कर्नाटक और मद्रास से संगृहीत किये गये हैं :—

१. तुम्हारा दिमाख बराबर है। (तुम्हारा दिमाग़ ठीक है)

बम्बई एक वड़ा बन्दर है। (बन्दरगाह)

मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्त को कड़ी शिक्षा दी। (सज़ा)

२. इस कहानी से आपको **वह** काल की सब **माहिती** मिलती। (उस...जानकारी मिलती है)

संसार की **कोई भी** वस्तु से ‸ तुलना नहीं की जा सकती। (किसी...इसकी)

यह सन्देश को समाज नहीं समझा। (इस)

उसको पूछा और मोहन **को** कहा। (उससे...से)

ओ अपने सखियों **ने** पूछने लगी (वह अपनी सखियों से...)

उसने साधु के पास सवा सेर गेहूँ **लाये**। (वह साधु...लाया)

आपने भेजा हुआ पत्र मिला। (आपका)

आदमी **ने** ऐसा विचार न करना चाहिये। (को)

लड़का ने यह व्यसन छोड़ देना चाहिये। (लड़के को)

३. उसे धीरज देने वाला **कौन** नहीं था। (कोई)

वहाँ **कौन** जाये, हमें क्या ? (कोई)

ए लोग पूछने लग **पड़ा**। (ये...पड़े)

हम अपना प्राण दे दूँगा। (मैं अपने प्राण...)
सब चीज़ की कीमत बड़ गई है। (सब चीज़ों की कीमतें बढ़ गयी हैं)
४. तेरे कितने बहनें हैं। (तेरी कितनी...)
एक पक्षी का जान बचाया। (की जान बचायी)
प्रत्येक व्यक्ति अपनी देवता को पूजती है। (अपने...पूजता है)
उसको नौकरी करने पड़ी। (करनी)
५. तुम दस रुपये कब देंगे ? (दोगे)
यशोदरा का पत्ती हँस की रक्षा में होता है। (यशोधरा का पति हंस...करता है)
६. मैं किताब खरीदूँगा कहकर उसने कहा। (उसने कहा कि मैं किताब खरीदूँगा)
मैं घर जाऊँगा ऐसा उसने कहा। (उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा)
आप कल वहाँ जाएँगे ऐसा मैं समझता हूँ। (मैं समझता हूँ कि कल आप वहाँ जाएँगे)
यह उतारा 'बलिदान' इस कविता से लिया है। (शीर्षक...लिया गया है)

बिल्ली मारना यह पाप है। (बिल्ली मारना पाप है)

माता अपने बालक को रोते देखकर वह विकल हो जाती है। (....देखकर विकल हो जाती है)

७. वह देर से बाज़ार पहुँचा कब दुकानें बन्द हो गयी थीं। (जब)

मैं उस आदमी को जानता हूँ कौन कल यहाँ आया था। (जो)

हम दिल्ली गये थे कहाँ कुतुब की लाठ है। (जहाँ)

[इस तरह की भूलों का उल्लेख यथास्थान किया जा चुका था। यहाँ विशेष ध्यान दिलाना अभीष्ट था।]

परिशिष्ट दूसरा

क. बहुत से लोगों पर संस्कृत का इतना अधिक रौब रहता है कि वे मौका-बे-मौका ऐसे शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं जो पूरी बात या वातावरण के उपयुक्त नहीं होते। निम्नलिखित वाक्यों को सरल हिन्दी में लिखो :—

आज हमारा उदर परिपूर्ण है।
अल्प समय पश्चात् उसने प्रत्यागमन किया।
पक्षी अपना नीड निर्माण कर रहा है।
उन्होंने चार दिवस के लिए यहाँ यात्रा भंग की थी।
स्वच्छ दर्पण पर ही अनुरूप यथार्थ सुस्पष्ट प्रतिबिम्ब प्रतिफलित होता है।
मेरी बातें विस्मृत न कर देना।
उसने एक छड़ी हस्तगत कर रखी थी।
लाला जी हृदय की गति अवरुद्ध होने के कारण गत हो गये।

ख. नीचे लिखे प्रयोग हैं तो सब ठीक, किन्तु इनमें परस्पर भेद अवश्य है। उस

भेद को समझने का प्रयत्न करो :—

मेरा घर, अपना घर, मेरा अपना घर ।
वह नहीं, वह नहीं है, वह है नहीं ।
और कोई, कोई और; और कुछ, कुछ और ।
लिखने को, लिखने के लिए ।
लिखो, लिखें, लिखिए, लिखिएगा ।
चार घंटे में, चार घंटों में ।
फिर, फिर-फिर, फिर से ।
पढ़ता-पढ़ता, पढ़ते-पढ़ते ।
काम करना है, काम करने का है, काम करने को है ।
यह काम करने योग्य है; यह करने योग्य काम है ।
आज ही मैं घर जाऊँगा; आज मैं ही घर जाऊँगा ।
राम भी घर जायगा; राम घर भी जायगा ।
मैं आपसे पूछता हूँ; आपसे मैं पूछता हूँ ।

हमारे रहते यह काम भी नहीं होगा; हमारे रहते भी यह काम नहीं होगा।

उसका काम आधा रह गया है; उसका आधा काम रह गया है।

शत्रु का नगर पर आक्रमण, शत्रु के नगर पर आक्रमण।

[इससे यह शिक्षा मिलती है कि वाक्य में शब्दों का चुनाव और क्रम सोच समझ कर करना चाहिए।]

१०. वाक्य-योजन

भाषा की वास्तविक इकाई वाक्य है। वर्तनी शुद्ध और शब्द-भण्डार समृद्ध होने पर भी कई विद्यार्थियों का वाक्य-गठन दूषित रह जाता है। पिछले प्रकरणों में जो वाक्य दिये गये हैं, उनको अच्छी तरह समझ लो। यहाँ नयी समस्याएँ उठा कर वाक्य-सम्बन्धी त्रुटियों का उल्लेख किया जा रहा है।

क. टेढ़ी बात

बात सीधे ढंग से न कही जाय तो खटकती अवश्य है।

उदाहरण :—

वह समय काम निकालने का होने से मैं चुप रहा। (वह····निकालने का था, इसलिए मैं····)

न केवल यही बल्कि वे यहाँ से चले भी गये। (यही नहीं बल्कि····)

वह चोट ऐसी होती है जो सुनार की तरह हलकी होती है। (वह चोट सुनार की चोट की तरह हलकी होती है)

इतने में कोई लपककर आकर धक्का देकर चला गया। (लपककर आया और धक्का देकर····)

क्या तुम समझते हो कि मैं मूर्ख हूँ ? (क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो ?)

जब गर्मी के दिन होते हैं तब दिन बड़े होते हैं। (गर्मियों में दिन बड़े होते हैं)

देश के प्रति प्रेम न होकर वह टुकड़ों में बँट जायगा। (····न होगा तो····)

मैंने कहा था कि इससे पहले वह रुष्ट हो गया। (मेरे कहने से पहले वह····)

ख. अपूर्ण वाक्य

देश की जितनी दुर्दशा ‸ हो रही है पहले कभी नहीं हुई थी। (····दुर्दशा अब हो रही है इतनी)

दिन दहाड़े डाका ‸ और चोरी करते हैं। (डाका डालते और····)

संस्कृत में जो स्थान कालिदास का है, ‸ वही टैगोर का है। (बँगला में वही····)

अध्यापक ने जानना चाहा कि विद्यार्थी कुछ समझते हैं ! (समझते हैं या नहीं)

विद्यार्थी सन्तुष्ट हो गये, क्योंकि उन्हें विश्वास दिलाया गया कि आगे भी उन्हें यह ‸ प्राप्त रहेगा। (यह अधिकार)

ग. अनर्गल वाक्य

थप्पड़ मार-मार कर तुम्हारी खाल खींच लूँगा। [थप्पड़ मारकर कैसे खींचेंगे !]

गत रविवार को क्या दिन था ? [रविवार तो दिन ही है]

यदि यह पत्र आपको न मिले तो मुझे सूचित कर दीजिएगा। [क्या आपका संदेश पहुँचा ?]

जब तक आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और तारे रहेंगे, तब तक मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा। [अनन्त काल तक तुम कैसे जीते रहोगे ?]

हिन्दी के एकता के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया है। [यह क्या सिद्धान्त हुआ ?]

बैल शेर की तरह सींग मारता हुआ गरजने लगा। (बैल सींग मारता हुआ शेर की तरह)

मन मयूर चाहता है मर्कट की तरह उछलते रहना। [अर्थात् मन मयूर भी है मर्कट भी !]

साहित्य समाज का दर्पण है जिससे उसे प्रेरणा मिलती है।

[दर्पण से क्या प्रेरणा ? दर्पण में तो प्रतिबिम्ब मिलता है।]

युवक राष्ट्र से कर्णधार हैं और उन्हीं के ऊपर हमारे राष्ट्र की दीवार खड़ी होगी।

[क्या कर्णधारों के ऊपर दीवार खड़ी हो सकती है ?]

अन्नसंकट के बारे में हमें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। [उपज के बारे में तो स्वावलम्बी होना चाहिए, संकट के बारे में क्या !]

वे इस बात में बहुत स्वार्थ लेते हैं। (उनका····स्वार्थ है)

आज हिन्दी के प्रश्न पर देश के सभी साहित्यकारों का उत्तरदायित्व है।

[हिन्दी के विकास का या प्रचार का उत्तरदायित्व हो सकता है।]

यह देखते ही कृष्ण की मुद्रा उदास हो गयी। (कृष्ण उदास हो गया)

घ. भ्रामक और शिथिल वाक्य

गिरीश ने हरीश को पीटा और मकान छोड़ देने की धमकी दी।

[कौन मकान छोड़ देगा—हरीश या गिरीश ?]

पाकिस्तानियों ने चीनियों से शस्त्रास्त्र लेने का प्रबन्ध किया था, किन्तु वे बीच में ही पकड़े गये। [शस्त्रास्त्र पकड़े गये या पाकिस्तानी या चीनी ?]

हिन्दी की प्रगति होती दिखाई मानी जाती है। (प्रगति दिखाई देती है)
कालिदास ने अशोक पुष्प का वर्णन शरत्काल में किया है।
(...अशोक का उल्लेख शरत्काल के वर्णन में किया है।)
उनके जीवित रह सकने की आशा भी बहुत हिम्मत बाँध कर ही की जा रही है। (बहुत ही कम रह गयी है)
जहाँ तक हमारा विचार तो यही है। (हमारा विचार तो यही है)
वह तो बहुत ही पाजी और नमकहराम आदमी है, बिलकुल निकम्मा।
[ज़ोरदार शब्द बाद में आना चाहिये।]
उसने बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। (वह...परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया)

ङ. द्विरुक्ति-दोष

[संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के अन्तर्गत जो 'अनावश्यक' पद उद्धृत किये गये हैं उनमें बहुत से द्विरुक्ति-दोष के कारण अशुद्ध हैं। देखो यथास्थान। जहाँ तक हो सके शब्द, वाक्य या भाव की द्विरुक्ति से बचो।]

कृपया उत्तर शीघ्र देने की कृपा करें।

(उत्तर शीघ्र दें) या (कृपया...का कष्ट करें)

इस प्रकार यहाँ अनेक प्रकार के आविष्कार हुए। (भाँति-भाँति के)

यही कारण है कि देश की एक भाषा न होने के कारण भावात्मक एकता नहीं है। (देश की....)

उन्हें अपने अहंकार का गर्व है। (अहंकार है) या (गर्व है)

प्रसाद ने अपनी कृतियों की रचना की। (पुस्तकों की)

यहाँ शत्रु से ख़तरे का डर है। (ख़तरा है) या (डर है)

यास्कादि प्रभृति आचार्यों ने माना है कि....(यास्कादि) या (यास्क प्रभृति)

अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा पकड़ा गया। (अश्वमेध का घोड़ा....)

आपका भवदीय। (आपका) या (भवदीय)

कई विद्यार्थी उपाधि-वितरणोत्सव के समारोह में सम्मिलित न हो सके।

(उपाधि-वितरणोत्सव में) या (उपाधि-वितरण समारोह में)

वे लोग हमारे साहब के अधीनस्थ हैं। (अधीन)

आपका यह मत **ग्राह्ययोग्य** है। (ग्राह्य है) या (ग्रहण करने योग्य है)
यौवनावस्था की ये सब बुराइयाँ हैं। (यौवन की) या (युवावस्था की)
पूज्यास्पद या **पूज्यनीय** (पूजास्पद, पूज्य, पूजनीय)
समतुल (सम) या (तुल्य)
सिवाय आपको **छोड़कर** (आपके सिवाय) या (आपको छोड़कर)
देश की **वर्तमान मौजूदा** अवस्था। (वर्तमान अवस्था) या (मौजूदा हालत)
आज की वर्तमान स्थिति। (आज की स्थिति) या (वर्तमान स्थिति)
सारे सम्पूर्ण राष्ट्र को हानि पहुँचती है। (सारे राष्ट्र) या (सम्पूर्ण राष्ट्र)
उनकी संख्या **चाहे भले ही** थोड़ी है। (चाहे) या (भले ही)
सरकार को चाहिए कि वह जनता के साथ **सद्व्यवहार** का **बर्ताव** करे।
(सद्व्यवहार करे) या (अच्छा बर्ताव करे)।
उसे **व्यर्थ** सहायता देने से कोई **लाभ नहीं**। (उसे सहायता देना व्यर्थ है)
या (उसे सहायता देने से कोई लाभ नहीं)
आप में जिन आवश्यक गुणों की **आवश्यकता** है। (कमी)

इसकी आवश्यकता परमावश्यक है। (इसकी परम आवश्यकता है)
यदि तब भी वे न मानें तब हम क्या करें। (तो)
लेकिन फिर भी मैं आपकी बात मान लूंगा। (लेकिन) या (फिर भी)
मुसलमान लोगों में कुछ लोग अत्यन्त धर्मपरायण थे। (मुसलमानों में)
हम तो अवश्य ही जायेंगे। (अवश्य जायेंगे) या (जायेंगे ही)
उसके बाद फिर यह हुआ। (उसके बाद यह हुआ) या (फिर....)
वे लोग परस्पर एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। (परस्पर) या (एक दूसरे को)

उन्होंने अपनी कविता स्वयं आप पढ़कर सुनायी। (स्वयं) या (आप)
यह ऐसी पहेली है जिसे सुलझा सकना सम्भव नहीं हो सकता। (जिसे सुलझा लेना सम्भव नहीं है)
हिन्दी अंग्रेज़ी का स्थान ले सकने में समर्थ है। (ले सकती है) या (लेने में समर्थ है)

परंपरा रूप में प्राप्त हमारी प्राचीन **परम्परा** नष्ट हो गयी है।

(मर्यादा नष्ट····)

साहित्य का अर्थ आजकल भिन्न **अर्थ** में लिया जा रहा है। (रूप में)

राष्ट्र की **एकता**, संस्कृति और शक्ति उसकी एकता पर निर्भर है।

(राष्ट्र की उन्नति)

द्विवेदी जी की **व्यक्तित्व** एक महान् **व्यक्तित्व** है। (का व्यक्तित्व महान् है)

या (का एक महान् व्यक्तित्व है)

शीघ्र ही यह **आन्दोलन** एक देशव्यापी **आन्दोलन** हो गया। (यह आन्दोलन देशव्यापी हो गया)

च. पदों का क्रम

चाँदी सोना (सोना चाँदी), **भालदेख** (देखभाल); **नारीनर** (नरनारी), **पिता माता** (माता-पिता), **पुरुष-स्त्री** (स्त्री-पुरुष); **झगड़ना-लड़ना** (लड़ना-झगड़ना); **बहन-भाई** (भाई-बहन); **धान्य-धन्य** (धन-धान्य) **फूलो-फलो** (फलो-फूलो); **बीस-दस** (दस-बीस); **पचास-सौ** (सौ-पचास)।

एक पानी का गिलास लाओ। (पानी का एक गिलास···)
विदेशी सिलाई के तागे। (सिलाई के विदेशी तागे)
कई स्कूल के विद्यार्थी ऐसा करते हैं। (कई स्कूलों के....),
(स्कूल के कई विद्यार्थी···)
हम निम्नलिखित इस विद्यालय के विद्यार्थी। (इस विद्यालय के हम निम्नलिखित···)
एक गुलाब और गेंदे की माला। (गुलाब और गेंदे की एक माला)
आपने किसी छात्रों की सभा में कहा। (छात्रों की किसी सभा में)
सब हम जायेंगे। (हम सब जायेंगे)
हम इसके बारे में ठीक कोई जानकारी नहीं दे सकते। (···कोई ठीक जानकारी···)
एक गर्मियों की बात सुनाता हूँ। [गर्मियों की एक बात···)
अच्छा एक लड़का। (एक अच्छा लड़का)

उसको पुस्तक देकर मैंने गोविन्द को अगला पाठ पढ़ाया। (गोविन्द को पुस्तक देकर मैंने उसे....)

विद्यार्थियों की मेले में कई टोलियाँ थीं। (मेले में विद्यार्थियों की....)

मैं यह काम देखूँगा कि हो सकता है या नहीं। (मैं देखूँगा कि यह काम....)

वह लड़का जो यह काम करेगा उसे पुरस्कार दिया जायगा। (जो लड़का यह काम....)

वह पुत्रवत् अपनी प्रजा का पालन करता था। (वह अपनी प्रजा का पुत्रवत्....)

मक्खियाँ मधु कोष से निकालती हैं। (मक्खियाँ कोष से मधु....)

आप इस प्रदेश की शिक्षक के रूप में सेवा कर रहे हैं। (आप शिक्षक के रूप में इस प्रदेश की....)

यह उपहार मुझे पहली विवाह की वर्षगाँठ पर मिला था। (विवाह की पहली वर्षगाँठ....)

यह नहीं वांछनीय है। (यह वांछनीय नहीं है)

कोई भी ऐसा नहीं दृष्टिगोचर होता। (ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता)
उनका मुँह पाँच रुपये देकर बन्द हो सकता है। (पाँच रुपये देकर उनका मुँह....)
उनके स्थान पर प्रधान मंत्री शास्त्री जी को नियुक्त किया गया। (....शास्त्री जी को प्रधान मंत्री नियुक्त....)
अगले तीन दिनों में, नेताओं में जो बातचीत चल रही है उसका निर्णय हो जायगा। (नेताओं....रही है उसका निर्णय अगले तीन दिनों में हो जायगा)
यह बात संभव है वह हृदय से न माने। (संभव है यह बात वह....)
उन लोगों ने, जिस समय मैं बात कर रहा था, शोर मचाना शुरू कर दिया। (जिस समय....था उस समय उन लोगों ने....)
वह आदमी, जो यहाँ कल आया था, उसकी आज चोरी हो गयी। (जो आदमी कल....उसकी....)

आप जहाँ तक हो सके इस बात का प्रयत्न करें। (जहाँ तक हो सके आप इस....)

तुम उनका मुँह उन्हें सौ रुपये देकर बन्द करना चाहते थे। (तुम उन्हें सौ रुपये देकर उनका मुँह....)

इस लाठी से, जितने तेरे हिमायती हैं, उन सबके सिर फोड़ दूँगा। (तेरे जितने हिमायती हैं, उन सबके सिर इस लाठी से....)

ऐसा कर लेना, मैं सोचता हूँ, बहुत अच्छा होगा। (मैं सोचता हूँ, ऐसा....)

कुत्ता एकलव्य का काला और भयानक शरीर देखकर भौंकने लगा। (एकलव्य का ...देखकर कुत्ता भौंकने लगा)

मानव समाज सृष्टि के आरम्भ से ही इतना सुरक्षित नहीं था। (सृष्टि के....से ही मानव-समाज इतना सुरक्षित नहीं था)

हमारी संस्कृति ने, जब वह निर्बाध रही, बहुत उन्नति की। (जब हमारी संस्कृति निर्बाध रही, तब उसने....)

नारायण, जिसे छः महीने की सज़ा हुई थी, की अपील मन्जूर हो गयी है।

(नारायण को छः....थी, उसकी अपील....)

यह फ़ोटो, जब नेहरूजी इलाहाबाद पधारे थे, उस समय लिया गया था। (यह फ़ोटो उस समय लिया गया था जब....)

यह मनुष्य उस देश का, जहाँ जाड़े में वर्षा होती है, निवासी है। (यह मनुष्य उस देश का निवासी है जहाँ....)

इस पुस्तक का (चित्रों का संकलन करके) प्रकाशन करना होगा। (चित्रों का संकलन करके इस पुस्तक का प्रकाशन....)

तुम्हारा हृदय वज्र है, पत्थर है। (पत्थर है, वज्र है) [—ज़ोरदार शब्द बाद में]

हम और तुम चलेंगे। (तुम और हम चलेंगे)

उनकी आशा तुम्हीं हो। (तुम्हीं उनकी आशा हो)

वहाँ बहुत से पशु और पक्षी उड़ते और चरते देखे गये। (पशु चरते और पक्षी उड़ते देखे गये)

तीन झोपड़ियाँ और एक खेमा जल गये। (एक खेमा और तीन झोपड़ियाँ जल गयीं)

महाराज के साथ दो दासियाँ और पद्मावती थी। (....पद्मावती और दो दासियाँ थीं।)

[देखिए पृष्ठ १४२....भी]

छ. विरोधिता

एक ही वाक्य में दो विरोधी शब्द नहीं होने चाहिये, जैसे—

यह चीज सपने में भी मिलना दुर्लभ है।
प्रायः ये लोग कभी-कभी अनुपस्थित रहते थे।
मेरे विचार से शायद काम जरूर हो जायगा।

ज. विविध

१. परोक्ष कथन हिन्दी की प्रकृति के विरुद्ध है :—

उसने कहा कि उसे कोई आपत्ति नहीं है। (मुझे)
बच्चों को इस बात का गर्व होना चाहिये कि उनका देश भारत है। (हमारा)
उसने प्रतिज्ञा की कि वह नीच कर्म कभी नहीं करेगा। (मैं....करूँगा)
उसने पूछा कि आखिर वह चाहता क्या है। (तुम चाहते क्या हो)

उन्होंने हमें हुक्म दे दिया कि हम घर जाएँ। (कि तुम घर जाओ)

२. कभी-कभी वाक्य में एक से अधिक अशुद्धियाँ पायी जाती हैं :—

हमारी सरकार हिन्दी विरोधियों पर कोई कार्यवाही नहीं किया। उन लोगों ने संविधान का उल्लंघन किया। इस विद्रोह में कम्यूनिष्ट लोगों का हाथ था। सरकार को चाहिए कि उन्हें जेल में ठोस देती। आज देश में अनेकों प्रकार के अन्ध बिस्वासों की बोलबाला है जो मानव मस्तिष्क में अभिभूत किये हैं।

भारत में बड़ी गरमी होती है। बारिश बहुत होती है, पर बर्फ नहीं पड़ती है। लोग हलके सूती कपड़े पहनते। वह गर्म कपड़े नहीं पहन लेते हैं।

अभ्यास २०

१. निम्नलिखित वाक्यों को शब्दों का क्रम ठीक करके लिखो—

(क) आपके देश में शिक्षा कला की होती कैसी है ?

(ख) परीक्षा निकट बालको ! आ रही है।

(ग) जीवन में सफल यदि चाहते हो होना तो परिश्रम करो।

(घ) एक गर्मियों की बात सुनाना चाहता हूँ।

(ङ) कई दफ्तर के क्लर्क आज छुट्टी पर हैं।

२. निम्नलिखित वाक्यों का अर्थभेद बताओ—

(क) मैं भी फ़ुटबाल खेलता हूँ। मैं फ़ुटबाल भी खेलता हूँ।

(ख) क्या तुम खेलते हो? तुम क्या खेलते हो?

(ग) वह वहाँ गया था। वह वहाँ तक गया था।

(घ) मैं आज ही घर जाऊँगा; मैं आज घर ही जाऊँगा।

३. उपयुक्त उपवाक्य अथवा वाक्यांश जोड़कर वाक्यों को पूरा करो—

(क) मोहन कहता था कि........।

(ख) हमारा विचार तो यह है कि........।

(ग) जहाँ तक हो सके...........।

(घ) आपको चाहिये कि...........।

(ङ) यही कारण है कि...........।

४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

(क) राम ने धोतियाँ और टोपी खरीदी।

(ख) उसे चाहिये कि प्रतिदिन व्यायाम करता।

(ग) कृपया पत्र का उत्तर शीघ्र देने की कृपा करें।

(घ) परीक्षा में आपका सफलता निश्चय है।

(ङ) कुम्भ का मेला में असीमित यात्रियों की जान गई।

शुद्ध हिन्दी

उच्चारण, वर्तनी, व्याकरण

डॉ. हरदेव बाहरी